जिनागम

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

वर्ष -२७ अंक -१२ अगस्त २०२५ सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ५२ मूल्य - १५० रूपए प्रति

हम सब जैन हैं श्वेताम्बर जैन दिगम्बर हम सब जैन हैं

क्षमा

क्षमा वीरों का आभूषण, दूर करे यह मन का प्रदूषण। 'क्षमा' शक्ति से न्यारी गुरूदेव की अमृतवाणी

मिच्छामी दुक्कड़म

दिलीप सुराणा

MICRO LABS

MICRO LABS LIMITED

Bangalore

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

www.jinagam.co.in Remove INDIA Name From the Constitution INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

पधारो म्हारे देश

पहले-मातृभाषा फिर-राष्ट्रभाषा

सम्पादक : बिजय कुमार जैन

मेरा राजस्थान

राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

राजस्थान का इतिहास
पहुँचाए आपके हाथ

मात्र रु. १००/- में, प्रति महिना

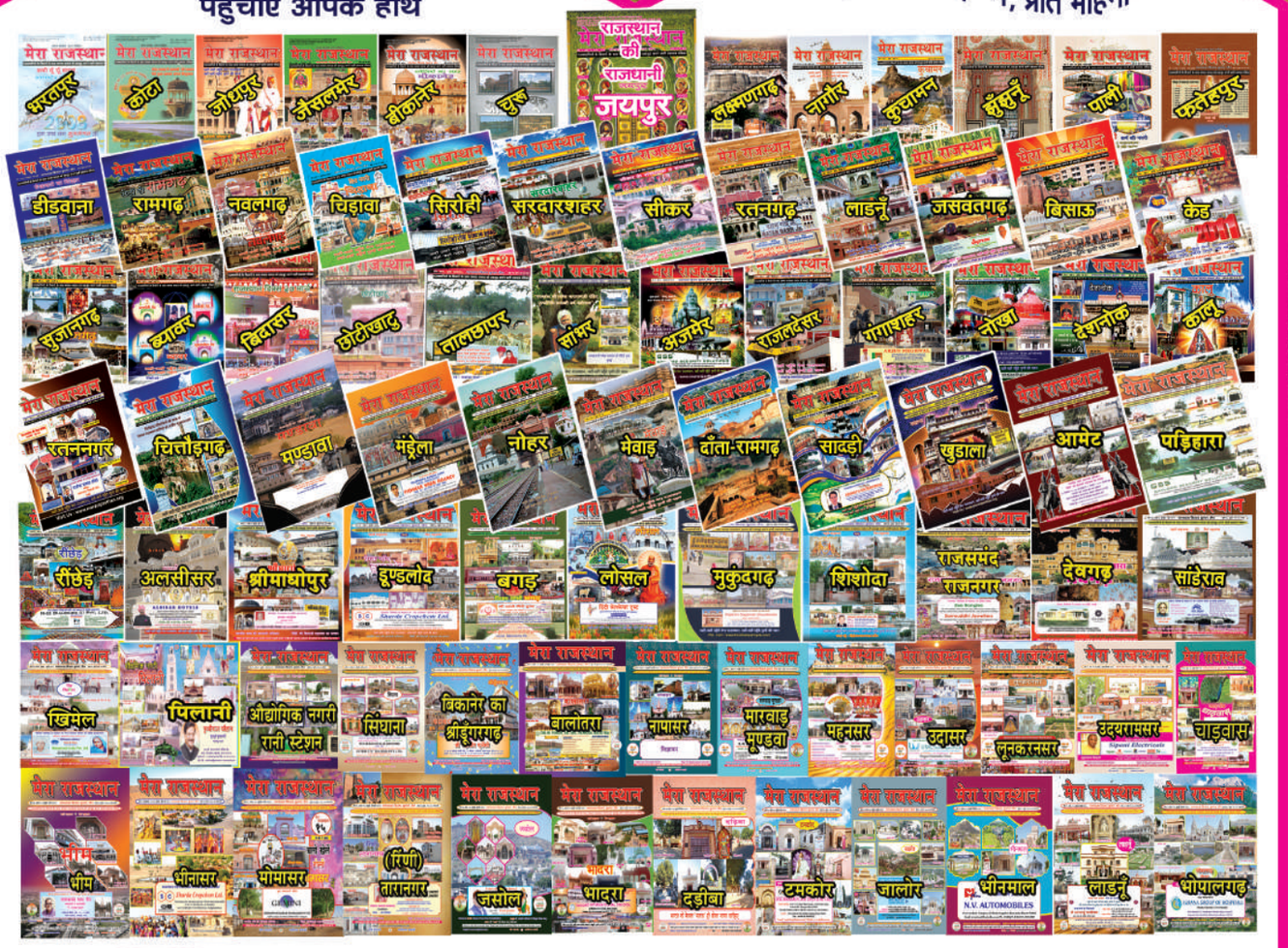

भारत का एक राज्य राजस्थान का एक जिला

1 प्रति ₹ 100/- **सांडवा** 1 प्रति ₹ 100/-

के इतिहास की प्रति मंगवाने के लिए संपर्क करें:- 022-40158094

सम्पादक

बिजय कुमार जैन

उपसम्पादक
संतोष जैन 'विमल'

कार्यकारी सम्पादक
अनुपमा शर्मा (दाधीच)

पंजीकृत कार्यालय

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९

दूरध्वनि: ०२२-४०१५ ८०९४ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com

विशेष छूट

विज्ञापन देने पर पूरे साल 'मेरा राजस्थान' पत्रिका मुफ्त

वार्षिक शुल्क १२००/-
आजीवन शुल्क ११,१११/-

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

Remove 'INDIA' Name From The Constitution

With Best Wishes

On occasion of

'Kshamavani Divas'

From

Siddho Mal Trading LLP

Gujarat Fluorochemicals Ltd.

&

INOX Group

612-618, Narain Manzil, 6th Floor,

23, Barakhamba Road, New Delhi, Bharat-110001

Ph.: 011-23327860, 23324796 Fax : 0091-11-23355833

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
#www.mainbharathun.co.in

Tariff Card

Monthly Magazine
JINAGAM

Reader Ship
17,000

Readers
All Jains

Release Date
10th date of Every Month

Magazine Size
A4

Print Area
19cm x 24 cm

Print in
Art Paper/Card

विज्ञापन दर 1st November 2022

ADVERTISEMENT RATE

Front Cover (With Photo/Sponsorship) Size : 185 x 225 mm	55,000/	+ 5% GST
Front Page (Cover Inside) Size : 185 x 225 mm	33,000/	+ 5% GST
Back Page (Cover) Size : 185 x 225 mm	35,000/	+ 5% GST
Back Page (Inside Cover) Size : 185 x 225 mm	31,000/-	+ 5% GST
Opening of Magazine/3rd Page Size : 185 x 225 mm	32,000/-	+ 5% GST
Centre Page Size : 185 x 225 mm	40,000/-	+ 5% GST
Special Position on Editorial Page (if available) Quarter Page / Strip) Size : 185 x 50 mm	8,000/-	+ 5% GST
Full Page (Inside) Size : 185 x 225 mm	22,000/-	+ 5% GST
Half Page Size : 185 x 110 mm	12,000/-	+ 5% GST
Quarter Page Size : 90 x 110 mm	6,000/-	+ 5% GST

* Per Insertion

अगला अंक

क्षमा पर्व विशेष

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय भारत!
मिच्छामी दुक्कड़म
जय भारत!

२८ वें वर्ष में प्रवेश

वर्ष -२७, अंक १२, अगस्त २०२५

जिनागम

१२ अंकों का वार्षिक मूल्य रू.२१००/-

सम्पादक - बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को भारत ही कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय

उपसंपादक - संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)
मो: ९७०२२ ०५२५२

- 'जिनागम' में प्रकाशित लेखों/कविताओं/ समाचारों/ विज्ञापनों से पूर्व सहमत होना सम्भव नहीं है।
- 'जिनागम' से सम्बन्धित समस्त विवादों के लिये न्याय क्षेत्र अंधेरी, मुम्बई ही मान्य माना जायेगा।

सम्पादकीय मुख्य कार्यालय
गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि.
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९
दूरभाष :- ०२२-४०१५८०९४
अणु डाक :- mailgaylordgroup@gmail.com
अन्तरताना:- http//www.jinagam.co.in

कृपया विज्ञापन बिल सदस्यता की राशि का भुगतान नीचे दिये गए बैंक में जमा करा सकते हैं

HDFC Bank
Andheri East Branch
RTGS / NEFT
IFSC: HDFC 0000592.
Account No.05922320003410

State Bank Of India
(01594) Marol Mumbai Branch.
IFS Code :SBIN0001594.
Account No. 030338727406.
in the name of GAYLORD PUBLICATIONS PVT.LTD.
Payment Transfer & Inform to us on: 9322307908

श्वेताम्बर दिगम्बर ○ **सम्पादकीय** ○ दिगम्बर श्वेताम्बर

क्षमा

'क्षमा' मंत्र दो अक्षरों का मेल नहीं बल्कि विश्व की विधाओं का अनुकरण है यदि 'क्षमा' को कोई इंसान, राष्ट्र या विश्व में फैले प्राणीमात्र अपना ले, तो चारों ओर शांति का वातावरण हो जाएगा, दो अक्षरों का 'क्षमा' एक ऐसा शस्त्र है, जिससे हर किसी को अपना बनाया जा सकता है, दुश्मन को भी गले लगाया जा सकता है।

विश्व में फैले अहिंसा प्रेमी जैनों की एकमात्र पत्रिका 'जिनागम' जिसका एकमात्र अभियान है 'जैन एकता' इसमें भी तो 'क्षमा' ही छिपी हुई है, यदि हम दिगम्बर-श्वेताम्बर का भेद मिटाकर (अपनी-अपनी आमनाय को अपनाते हुए) यदि 'क्षमा' को स्वीकार कर लें तो हम 'जैन' विश्व में शांतिमय वातावरण का नवनिर्माण कर सकते हैं, आज जो विश्व में हिंसा का तांडव चल रहा है, हर कोई अपने आपको बड़ा करने का श्रेय ले रहा है, एक दूसरे के हक को छीनने के लिए आमादा बैठा है, इस 'क्षमा' से ही शांत किया जा सकता है।

तीर्थंकर महावीर कहते हैं 'कभी किसी का अधिकार मत छीनो और अपना अधिकार मत छोड़ो' यदि इस वाक्य का विश्लेषण किया जाए तो इसमें भी 'क्षमा' का मंत्र ही छुपा है, जो आज के समय पर हो रहे विध्वंस का खात्मा तक कर सकता है।

मेरे अपने जीवन काल में कभी भी मैंने किसी का नुकसान या दिल नहीं दुखाया, जाने-अनजाने में यदि किसी को लगा भी कि मेरे कृत्य से किसी को दुख पहुंचा हो और मुझे ज्ञात हो गया हो तो तुरंत उसे 'क्षमाप्रार्थी' बन 'क्षमा' मांग लेता हूं ताकि वैमनस्य का खात्मा हो जाए। मैं, ना इस धरती पर कुछ लेकर आया हूं, ना ही इस धरती से कुछ लेकर जा पाऊंगा, फिर क्यों मैं किसी से वैमनस्य कर किसी का दिल दुखाऊं, यह अधिकार मुझे ना मिला है ना ही मैं चाहता हूं कि मुझे मिले।

मैं समस्त जैनों की विश्वसनीय 'जिनागम' पत्रिका के सभी प्रबुद्ध पाठकों से विनम्र विनंती करता हूं कि आप भी कभी किसी का दिल ना दुखाएं, जाने-अनजाने में आपसे कभी भूल हो भी गई हो, किसी का दिल दुखा भी दिया हो, तो तुरंत उसे 'क्षमा' मांग लें, 'क्षमा' पर्व का इंतज़ार ना करें, आपको ऐसा लगेगा कि आपके दिल से कई सारे बोझ हल्के हो गए और आपका जीवन नीरस से सरस हो गया है।

कहावत भी है कि 'वाणी ऐसी बोलिए, ना किसी को दुख होय' तो आईए हम सभी 'क्षमा' पर्व पर हर किसी को 'क्षमा' कर दें और 'क्षमा' मांग लें और 'भारत को केवल 'भारत' ही बोलें' इंडिया हम क्यों बोलें, हम स्वतंत्र हैं और 'भारत' हमारा देश स्वतंत्र है, इंडिया नाम को क्यों अपनायें, जो की गुलामीकाल में ब्रिटिश सरकार ने हम 'भारतीयों' पर थोपा था, हम 'भारतीय' हैं और 'भारत मां की जय' बोलते हैं। जय भारत! जय जिनेंद्र!

SBI
for payment

HDFC BANK
for payment

आपका अपना
जैन एकता का सिपाही
बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी
भारत को भारत ही कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय
मो.९३२२३०७९०८

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती में सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई।।
सभी जीवों से बारम्बार खमत-खामणा

Since 1961

RAMESHKUMAR HAMERLAL JAIN

TOTAL METAL RECYCLERS
DEVELOPERS, MINING & MFG. METAL SALTS

EXTRUDERS OF COPPER & COPPER ALLOYS,
ALUMINIUM & ALUMINIUM ALLOYS

● Head Office ●

I I I/119, Thakurdwar Road, Mumbai - 400 002.
Tel. 2201 3540, 2206 9972
E-mail info@rhjmetals.com

● Corporate Office ●

A-55, New Empire Industrial Estate,
Kondivita Road, Opp. Regent Hotel,
J.B. Nagar, Andheri (E), Mumbai - 400 059
Tel.: 4973 2016 I 4973 2017

ASSOCIATE CONCERNS

RHJ Industries Pvt. Ltd.
RHJ Metals Pvt. Ltd.
Dhakad Metal Corporation
Sameer Industries
D.B. Granites

चातुर्मासः तप त्याग और धर्म का समर्पण

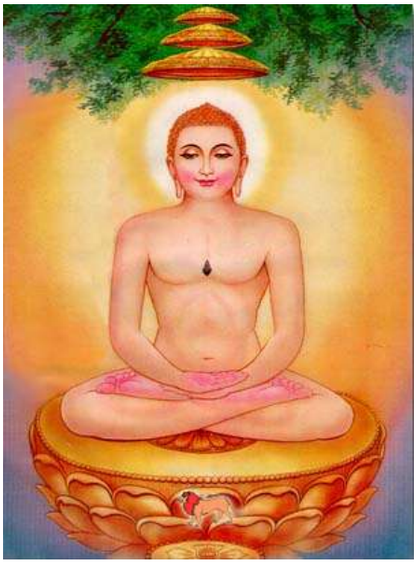

भारत की आध्यात्मिक परंपराओं में जैन धर्म का स्थान विशिष्ट है। जैन साधु-संतों की तपस्या, अहिंसा, अपरिग्रह और आत्मानुशासन की मिसालें आज भी जीवन को दिशा देने वाली हैं, इन तमाम मूल्यों और सिध्दांतों का सघन अभ्यास जिस अ-वधी में सबसे ज्यादा देखने को मिलता है, वह है 'चातुर्मास' वर्षा ऋतु के चार महिनों की वह विशेष अवधी, जब साधु-साध्वियाँ एक ही स्थान पर स्थिर रहते हैं और श्रावक-श्राविकाएँ धर्म में विशेष रुझान के साथ भाग लेते हैं। चातुर्मास केवल एक ऋतु नहीं है यह साधना काल है, आत्मचिंतन की घड़ी, आत्मा की चिकित्सा का अवसर है।

चातुर्मास का आध्यात्मिका सार और साधुओं के लिए उसका महत्व, प्राचिन जैन आगमों में चातुर्मास को आवश्यक समय बताया गया है। सामान्यत: दिगम्बर और श्वेताम्बर साधु-संत वर्ष के अधिकांश समय में नगर-नगर, ग्राम-ग्राम विचरण करते है, किंतु वर्षा ऋतु में जब धरती पर असंख्य जीवों की उत्पती होती है जैसे कि कीड़े, पतंगे, सूक्ष्म जीवाणू तब अहिंसा के सिध्दांत को सर्वोपरी रखते हुए साधु एक ही स्थान पर ठहर जाते हैं, यही ठहराव 'चातुर्मास' कहलाता है।

इस स्थिरता में ही साधना की तीव्रता है, साधु इन महीनों में ध्यान, स्वाध्याय, प्रवचन, प्रत्याख्यान और आत्मानुशासन के माध्यम से अपना विस्तार करते हैं। जैन साधु न केवल स्वयं की साधना में लीन रहते हैं, बल्कि अपने आचरण समाज के लिए दिशा-दर्शक बनते हैं।

श्रावक-श्राविकाओं के लिए चातुर्मास का महत्व

जैन साधु-संत अपनी आत्मा को संवारते हैं, वहीं दूसरी ओर श्रावक-श्राविकाओं के लिए भी यह समय आत्मिक उत्थान का समय, आत्मिक उत्थान का अवसर होता है। 'चातुर्मास' के दौरान जैन समाज में उपवास, प्रतिक्रमण, तपस्याएँ, ध्यान-धारणा, और प्रवचनों की परम्परा होती हैं। लोग अपने जीवन में संयम लाते हैं, भोजन की सीमाएँ निर्धारित करते हैं, रात्री भोजन त्यागते हैं, आल्यस से दूर रहते हैं।

परिवारों में धार्मिक चर्चाएँ होती हैं। छोटे बच्चे भी 'संयम क्या है','अहिंसा क्यों जरुरी है' और 'सत्य की महिमा' जैसी बातों को समझने लगते हैं। 'चातुर्मास' केवल चार महिनों का आयोजन नहीं होता, यह जीवन के भीतर आध्यात्मिक धडकन जगाने काल होता है।

वक्त के साथ बदली चातुर्मास की तस्वीर

हालांकि 'चातुर्मास' की यह परम्परा शताब्दियों से चली आ रही है, लेकिन आज समाज के एक बड़े वर्ग के लिए इसका स्वरुप धुंधला पडता जा रहा है, समय, सुविधाएं और सोच तीनों में आया परिवर्तन इस बदलाव के लिए जिम्मेदार हैं।

एक समय था जब जैन समाज पूरे वर्ष इस प्रतिक्षा में रहता था कि कौन से साधु हमारे नगर में चातुर्मास करेगें, मन्दिरों की शोभा बढ जाती थी, श्रावक अपनी गृहस्थी की चिंताओं से ऊपर उठकर साधुओं की सेवा और धर्म अनुष्ठानों में तल्लीन हो जाते थे, साधु के चरण जिस नगर में पड़ते, वहाँ धर्म की वर्षा होती रहती थी, परन्तु अब स्थिती बदल रही है, कई स्थानों पर मन्दिर समितियाँ चातुर्मास के आयोजन से पीछे हट रही हैं, कारण कारण पूछने पर जवाब मिलता है व्यवस्था बहुत कठिन है, लोग समय नहीं देते, कोई रुचि नहीं लेता, इन उत्तरों में आधुनिक समाज की धर्म से दूर होती सोच झलकती है।

क्यों घट रही है चातुर्मास की प्रतिष्ठा समाज में:

'चातुर्मास' की उपेक्षा के पीछे कई सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारण हैं, भौतिकवाद का बढना आधुनिक जीवन में, व्यवसायिकता, लाभ-हानि, सुविधा और स्वार्थ इतने हावी हो गए हैं कि धर्म अब एक 'ऐच्छिक' विकल्प बन गया है, कोई 'अनिवार्य' नहीं।

सेवा को बोझ मानना पहले जहाँ साधु-संतों की सेवा को सौभाग्य माना जाता था, अब इसे एक सामाजिक या आर्थिक बोझ समझा **शेष पृष्ठ १० पर...**

चातुर्मास पावन पर्व पर सभी साधु-साध्वियों के
पावन चरणों में कोटि-कोटि वंदन
मिच्छामी दुक्कडम्

Ankit Chopra
Mob.: 9939933633
Shubham Chopra
Mob.:8797937055
Suraj Agencies
Deals in: All types of Industrial Gases, Industrial Paints, Welding Electrodes, Welding Machines & Accessories, Tools & Tackles, Gas Cutting Equipments, Safety Equipments & Materials of Every Description
By Pass Road, Check Post, Chas, Bokaro, Jharkhand, Bharat- 827013
Ph.: (O) 06542-357188 | email: surajagencies@live.com
गंगाशहर निवासी, चास-बोकारो प्रवासी

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

!! जय गुरु नाम !! !! जय महावीर !! !! जय गुरु राम !!

SIPANI MARBLES
• STRONG • STYLISH • SOPHISTICATED

SIPANI DEVELOPERS

KPL

"हु शिव हु जो श्री ज ग ना ना, राम चमक रहे भाऊ समाना,"
तरुण तपस्वी, प्रज्ञात्मना, आचार्य-प्रवर १००८ श्री राम लाल जी म. सा.
बहुश्रुत वचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री रोजेश मुनि जी म. सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में कोटिशः वंदन

भूल करना मानवीय प्रकृति,
भूलों को सुधारना मानवीय संस्कृति
लेकिन भूल को भूल ही नहीं मानना
ये ही है सबसे बड़ी विकृति पर्युषण पर्व पर

मिच्छामी दुक्कडम्

श्रीमती जेठी देवीजी सिपानी, श्री विमल सिपानी,
श्रीमती कुमुद सिपानी, श्री सुनील कुमार सिपानी,
श्रीमती श्रद्धा सिपानी, श्री पुनीत कुमार सिपानी,
यश्मिता सिपानी, जयवर्धन सिपानी

www.sipanimarbles.com www.sipanidevelopers.com www.klenepaks.com

पृष्ठ ८ से... जाने लगा है।

सामाजिक विघटन: एक ही समाज के भीतर गुटबाजी, वैचारिक टकराव और निजी अहंकार 'चातुर्मास' जैसे आयोजनों को बाधित कर रहे हैं।

प्रवचन को महत्व नहीं देना: श्रावकगण साधु के प्रवचन के समय अपने मोबाईल में व्यस्त रहते हैं जो की 'चातुर्मास' के समय असाध्य भाव है।

साधुओं की बढती आकांक्षाएं -

साधु वर्ग का उद्देश्य प्रवचन का रहता था, वहीं आज मनोरंजन हावी होता जा रहा है। एक से बढकर एक आयोजनों की श्रृंखला समाज में प्रभावना के स्थान पर उदासिनता ला रही है।

समाज की भूमिका और पुनरूध्दार की आवश्यकता

चातुर्मास को पुन: उसकी गरिमा में स्थापित करने के लिए समाज को जागरूक और सक्रिय होना होगा, यह कार्य केवल मन्दिर समितियों या कुछ बुजुर्गों की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि संपूर्ण समाज की भागिदारी से ही संभव है।

समाज को समझना होगा कि चातुर्मास साधुओं के ठहरने की अवधि नहीं, बल्कि हमारी आत्मा को झकझोर कर, उसे मोक्ष मार्ग की ओर उन्मुख करने का एक अवसर है।

युवाओं को जोडें: 'चातुर्मास' में धार्मिक शिविरों, स्वाध्याय प्रतियोगिताओं और डिजिटल माध्यमों से युवाओं को जोड़ा जाए।

मन्दिरों को जीवन्त बनाएं: मन्दिर को केवल पूजन का स्थान नहीं, बल्कि ज्ञान, चर्चा, सेवा और साधना का केंन्द्र बनाएं।

संतों की सेवा को सौभाग्य समझें: हम जब एक साधु को एक स्थान पर ठहरने का आग्रह करते हैं, तो हम केवल किसी अतिथि को आमंत्रित नहीं करते, हम आत्मज्ञान को आमंत्रित करते हैं।

चातुर्मास धर्म का उत्सव,आत्मा का उत्सव

'चातुर्मास' केवल परम्परा नहीं, चेतना है, जागरण है आत्मा का, अवसर है मुक्ती का ओर एक मोक्ष की कदम बढाने का, हमें यह समझना होगा कि जैसे वर्षा धरती को सींचती है, वैसे ही 'चातुर्मास' आत्मा को सींचने वाला मौसम है। समाज जब तक 'चातुर्मास' को केवल 'चार महिनों की साधु सेवा' मानता रहेगा, तब तक वह इसके वास्तविक लाभ से वंचित रहेगा। पर जब यह समाज इसे आत्मिक पुनरुत्थान का पर्व मानेगा, तब हर मन्दिर में धर्म की ज्योती पुन: प्रज्वलित होगी।

आइए, इस वर्ष के चातुर्मास में हम सब मिसकर एक नई शुरुवात जो करें एक ऐसी शुरुवात जो हमारी आत्मा को जिनवाणी के प्रकाश से अलोकित कर दे।

चातुर्मास पावन पर्व पर सभी साधु-साध्वियों के
पावन चरणों में कोटि-कोटि वंदन

मिच्छामी दुक्कड़म

P.K.B प्रदीप जैन

Mob: 9549006934/9783896601

प्रदीप कुमार एण्ड ब्रादर्स

हर प्रकार की स्टेशनरी, पाठ्य पुस्तके व जनरल आर्डर सप्लायर्स

खोह, रोनीजाथान, अलवर, राजस्थान, भारत-३०१०३५

पर्युषण पर्व

अध्यात्मिक पर्वों के सिरमौर पर्व का नाम है	- पर्युषण पर्व
जिनानुयायियों का महापर्व है	- पर्युषण पर्व
आत्मजागरण का महापर्व है	- पर्युषण पर्व
वृत्तियों को उपशांत करने की साधना का महानुष्ठान	- पर्युषण पर्व
आत्मदोषों के परिहार का साधना पर्व है	- पर्युषण पर्व
विश्वमैत्री पर्व का दुसरा नाम है	- पर्युषण पर्व
आत्मभावों में रमण करने का पर्व है	- पर्युषण पर्व
'क्षमा' लेने-देने का पर्व है	- पर्युषण पर्व
वर्ष भर के ज्ञान-अज्ञात भूलों पर पश्चाताप करने का पर्व है	- पर्युषण पर्व
प्रमाद या स्वार्थवरा किये गये भूलों की भूलने का पर्व है	- पर्युषण पर्व
वर्ष भर की साधना के लेखा-जोखा का पर्व	- पर्युषण पर्व
बैर मिटाने का महापर्व है	- पर्युषण पर्व

-महेश नाहटा
नगरी

खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती में सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई।।
सभी जीवों से बारम्बार खमत-खामणा

Navratan Kumar Baid
Mob: 7989282716

406 East Marred Pally Manbhum Avlon Near Petrol Pump,
Secunderabad, Hyderabad, Telangana- 500026

जैन समाज के समस्त चारित्रात्मा साधु-साध्वी तथा समणी वर्ग के
श्रीचरणों में सभक्ति खमतखामणा।
श्रावक-श्राविकाओं को भी करवद्ध खमतखामणा।

मिच्छामी दुक्कड़म

ई. मनोज जैन
प्रान्तीय अध्यक्ष
ओड़ीशा प्रान्तीय जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा
Y-108, Royal Green Society, Palace Line,
Bharat, Odisha, Balangir-767001
Mob.: 9437037788 | Email: odishaterapanthisabha@gmail.com

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

FREE HOME DELIVERY

NAKODA®

Pure Ghee, Edible Oils & More...

SINCE 1978

SATTVIK VERIFIED
QUALITY ASSURANCE
VEGETERIAN & JAIN

NAtural KhaO... Dilse Apnao...™

श्रेयस की पसंद

शुद्धता, खुशबू और पोषण से भरपूर

- नाकोडा देसी घी

DAIRY SPECIAL
Pure Ghee

DAIRY TAAZA
Cow's Pure Ghee

89288 82457 / 85915 62269 / 89285 86181 / 91377 56585

GHEE AND OIL AVAILABLE IN ALL SIZES AT YOUR DOOR STEP

NAKODA TRUSTED QUALITY OVER 35 YEARS

M/s. KEWALCHAND VINODKUMAR

K.B. Products Pvt. Ltd.

Customer Care: +91 9819475175 | Website: www.nakodagheetel.com | E-mail: info@gheetel.com

/nakodagheetel | An ISO 22000:2018 & HACCP Certified Company

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

क्षमा का प्रतीक महापर्व पर्युषण

भारतीय संस्कृति में पर्वों एवं त्योहारों की एक समृद्ध परंपरा है। 'पर्युषण' इसी परंपरा में जैन धर्म का एक महान पर्व है। 'पर्युषण' का शाब्दिक अर्थ है चारों ओर से सिमट कर एक स्थान पर निवास करना या स्वयं में वास करना, इस अवधि में व्यक्ति आधि, व्याधि और उपाधि की चिकित्सा कर समाधि तक पहुंच सकता है।

पर्युषण पर्व परमात्मा के निकट जाने के लिए व आत्मा की शुद्धि के लिए मनाया जाता है, अगर हमारे व्यवहार और स्वभाव से यदि किसी को किसी भी प्रकार से पीड़ा पहुंची है तो उनका चिंतन करने हेतु क्षमा याचना का यह पर्व है, यह पर्व समता, सरलता व सहिष्णुता के साथ समन्वय और प्रेम को जीवन में आत्मसात करता है, हर दूसरे के अस्तित्व के स्वीकारने व दूसरे की आत्मा को अपनी आत्मा के समान समझने का यह पर्व है।

पर्युषण पर्व भाद्र माह में ८ व १० दिनों का मनाया जाता है, यह माह प्राकृतिक सौंदर्य से भरा होता है, जिसमें न केवल जैन, बल्कि जैनेतर लोग भी अतिरिक्त पूजा-पाठ पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं। पर्युषण पर्व के दौरान जैन साधना पद्धति को अधिकाधिक जीने का प्रयत्न किया जाता है। क्रोध, अहंकार, नफरत, घृणा आदि कषायों को शांत करके चित्त को निर्मल बनाकर शुभ संकल्पों को जागृत करने का प्रयत्न किया जाता है।

हमारे धर्म शास्त्रों में लिखा है कि प्रेम अखंड है, वह कभी नहीं मरता, बल्कि क्षमाभाव से वह और अधिक जागृत होता है। प्रेम देंगे, तो प्रेम मिलेगा, लेकिन किसी को क्षमा करेंगे, तो वही प्रेम दुगनी मात्रा में मिलता है, तीर्थंकर महावीर के जीवन में इसे साक्षात देखा जा सकता है, उनके सिद्धांत को जीवन में उतारना वर्तमान हालातों में अत्यंत आवश्यक है। तीर्थंकर महावीर से आज समस्त विश्व इतना स्नेह करता है, उनके धर्म मार्ग को स्वीकारता है एवं उनके प्रति अत्यंत आस्था जताता है तो इसका एकमात्र कारण यही है कि उनमें क्षमाभाव कूट-कूट कर भरा था, उसी क्षमा भाव को अपने भीतर जागृत करने का पर्व है 'पर्युषण'। जैन धर्म में पर्युषण पर्व का विशेष महत्व इस कारण भी है कि यह मनुष्य को क्षमा के रास्ते मोक्ष के मार्ग पर प्रवृत्त करता है, यह ज्ञान, दर्शन और चरित्र की आराधना का पर्व है जो व्यक्ति और समाज को परस्पर जोड़ने का कार्य करता है।

'पर्युषण पर्व' की साधना का अर्थ है, व्यक्ति द्वारा पीछे मुड़कर स्वयं को देखने की ईमानदार कोशिश, यह प्रतिक्रमण का एक प्रयोग है। अतीत की गलतियों को देखना और भविष्य के लिए उन गलतियों को न दोहराने का संकल्प, यह टूटते जीवन मूल्यों एवं बिखरती आस्थाओं को विराम देते हुए जीवन को नए संकल्पों के साथ जीने के लिए अग्रसर करता है।

मानसिक भार और तनाव से मुक्त होने के लिए क्षमा याचना श्रेष्ठ उपक्रम है, जैसे एक कुशल शल्य चिकित्सक शरीर की गांठों को निकाल कर रोगी को स्वस्थ बना देता है, वैसे ही एक कुशल धर्मगुरू समता और मैत्री की भावना का उपदेश देकर अनुयायियों को उनके विभिन्न प्रकार के मानसिक क्लेश से मुक्ति दिलाता है। क्रोध आदि कषाय की बहुलता से व्यक्ति कमजोर बनता है, क्रोध विष है जबकि इसका प्रतिपक्ष अमृत है, क्षमा की साधना अमृत के समान बनने की साधना है।

पर्युषण आत्म साक्षात्कार का एक विशिष्ट अवसर है, हम इस अवसर पर स्वयं का स्वयं से परिचय करवाते हैं, यानी स्वयं के द्वारा स्वयं को देखना, ऐसा करने का अर्थ है-हम अपनी गलतियों को ढूंढें और उनका परिष्कार करें। आत्मा दिव्य स्वरूप है, उस पर पर्दा छाया हुआ है, पर्युषण इस पर्दे को हटाने का एक अवसर है।

यह पर्व हर व्यक्ति के मन के अंदर बसी कलुषित भावना को नष्ट करके आत्मा को शुद्ध कर उसे नेकी का मार्ग दिखाता है। वर्तमान परिस्थितियों में देखें तो 'पर्युषण' महापर्व मात्र जैनों का पर्व नहीं, यह एक समस्त मानव समाज का एक सार्वभौम पर्व है, जो आराधना, त्याग, तपस्या, क्रिया एवं उपासना के तरीकों के कारण पूरे विश्व के लिए यह एक उत्तम और आकृष्ट पर्व है, क्योंकि इसमें आत्मा की उपासना की जाती है। शारीरिक शुद्धि के साथ मन की सात्विकता को भी श्रेष्ठ बनाने की पद्धति निहित है। संपूर्ण संसार में पर्युषण ही एकमात्र ऐसा पर्व है जिसमें मनुष्य आत्मरत होकर आत्मार्थी बनता है, हमारे साधु-संतों के उपदेशों में स्पष्ट व्याख्या है कि पर्युषण पर्व हमें अपनी आत्मा के जागरण का संदेश देता है और हम उसी के अनुरूप जीकर अपनी सोई हुई आत्मा को जगाते हैं, यह आत्मा के भीतर प्रकाशित होने वाली आत्मीयता को उभारने की शक्ति प्रदान करता है, हम सब मिलकर भारतीय संस्कृति के मूल आधार तप, त्याग और संयम के पावन पर्व को 'क्षमा' के साथ जीएं, जिससे समस्त जगत का कल्याण हो।

- कोमल कुमार जैन
चैयरमैन –ड्यूक फैशन्स (इंडिया) लि.,
लुधियाना

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

www.prestigeindia.com

PRESTIGE®

पूरा और प्योर

पूरा माप और प्यूरिटी की छाप

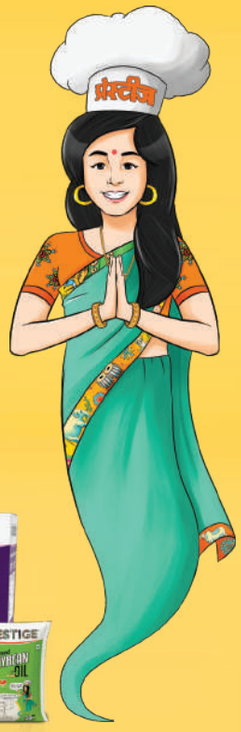

• PRESTIGE FEED MILLS LIMITED
• PRESTIGE AGRO-TECH LIMITED

Corporate Office: 30, Jaora Compound, M.Y.H. Road, Indore-452 001, M.P., India.
Phone: +91 731 4011111 **Email:** fmcg@prestigeindia.com

For Trade Inquiries **Call : +91 78699 27288, 98930 52261**

ISO 9001 : 2015 | ISO 22000 : 2005
HACCP | STAR EXPORT HOUSE | Non-GMO

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

सभी पर्वों का राजा है पर्युषण पर्व

दुनिया के सबसे प्राचीन धर्म जैन धर्म को श्रमणों का धर्म कहा जाता है। जैन धर्म के संस्थापक ऋषभ देव जी को माना जाता है, जो जैन धर्म के पहले तीर्थंकर थे और 'भारत' भूखंड के चक्रवर्ती सम्राट भरत के पिता थे। वेदों में प्रथम तीर्थंकर ऋषभनाथ का उल्लेख मिलता है। जैन धर्म में कुल २४ तीर्थंकर हुए हैं। तीर्थंकर अरहंतों में से ही होते हैं। जैन संस्कृति में जितने भी पर्व व त्योहार मनाए जाते हैं, लगभग सभी में तप एवं साधना का विशेष महत्व है। जैनों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पर्व है 'पर्युषण पर्व', जिसका शाब्दिक अर्थ है आत्मा में अवस्थित होना। 'पर्युषण' का एक अर्थ है कर्मों का नाश करना, कर्मरूपी शत्रुओं का नाश होगा तभी आत्मा अपने स्वरूप में अवस्थित होगी, अत: 'पर्युषण' पर्व आत्मा का, आत्मा में निवास करने की प्रेरणा देता है।

यह सभी पर्वों का राजा है, इसे 'आत्मशोधन' का पर्व भी कहा गया है, जिसमें तप कर कर्मों की निर्जरा कर अपनी काया को निर्मल बनाया जा सकता है। 'पर्युषण' पर्व को आध्यात्मिक दिवाली की भी संज्ञा दी गई है, जिस तरह दिवाली पर व्यापारी अपने संपूर्ण वर्ष का आय व्यय का पूरा हिसाब करते हैं, गृहस्थ अपने घरों की साफ-सफाई करते हैं, ठीक उसी तरह 'पर्युषण' पर्व के आने पर जैन धर्म को मानने वाले लोग अपने वर्ष भर के पुण्य पाप का पूरा हिसाब करते हैं, वे अपनी आत्मा पर लगे कर्म रूपी मैल की साफ-सफाई करते हैं। 'पर्युषण' महापर्व मात्र जैनों का पर्व नहीं है, यह एक सार्वभौम पर्व है, पूरे विश्व के लिए यह एक उत्तम और उत्कृष्ट पर्व है, क्योंकि इसमें आत्मा की उपासना की जाती है। संपूर्ण संसार में यही एक ऐसा उत्सव या पर्व है जिसमें आत्मरत होकर व्यक्ति आत्मार्थी बनता है व अलौकिक, आध्यात्मिक आनंद के शिखर पर आरोहण करता हुआ मोक्षगामी होने का सद्प्रयास करता है। पर्युषण आत्म जागरण का संदेश देता है और हमारी सोई हुई आत्मा को जगाता है, यह आत्मा द्वारा आत्मा को पहचानने की शक्ति देता है। 'पर्युषण' पर्व जैन धर्मावलंबियों का आध्यात्मिक त्योहार है। पर्व शुरू होने के साथ ही ऐसा लगता है मानो किसी ने दस धर्मों की माला बना दी हो, यह पर्व मैत्री और शांति का पर्व है। जैन धर्मावलंबी भाद्रपद मास में पर्युषण पर्व मनाते हैं। श्वेताम्बर संप्रदाय के 'पर्युषण' ८ दिन चलते हैं, उसके बाद दिगम्बर संप्रदाय वाले १० दिन तक 'पर्युषण' मनाते हैं, उन्हें वे 'दसलक्षण' के नाम से भी संबोधित करते हैं, यह पर्व अपने आप में ही क्षमा का पर्व है, इसलिए जिस किसी से भी आपका बैरभाव है, उससे शुद्ध हृदय से क्षमा मांग कर मैत्रीपूर्ण व्यवहार करें। भारतीय संस्कृति का मूल आधार तप, त्याग और संयम हैं, संसार के सारी तकलीफें जिस प्रकार समुद्र में समाहित हो जाती है, उसी प्रकार दुनिया भर के संयम, सदाचार एवं शील ब्रह्मचर्य में समाहित हो जाते हैं। मानव की सोई हुई अन्तः चेतना को जागृत करने, आध्यात्मिक ज्ञान के प्रचार, सामाजिक सद्भावना एवं सर्वधर्म-समभाव के कथन को बल प्रदान करने के लिए 'पर्युषण' पर्व मनाया जाता है, साथ ही यह पर्व सिखाता है कि धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि की प्राप्ति में ज्ञान व भक्ति के साथ सद्भावना का होना भी अनिवार्य है, जैन धर्म में दस दिवसीय 'पर्युषण' पर्व एक ऐसा पर्व है, जो 'उत्तम क्षमा' से प्रारंभ होता है और 'क्षमा वाणी' पर ही उसका समापन होता है। 'क्षमा' वाणी शब्द का सीधा अर्थ है कि व्यक्ति और उसकी वाणी में क्रोध, बैर, अभिमान, कपट व लोभ न हो।

'दशलक्षण' पर्व, जैन धर्म का प्रसिद्ध एवं महत्वपूर्ण पर्व है। 'दशलक्षण' पर्व संयम और आत्मशुद्धि का संदेश देता है। 'दशलक्षण' पर्व साल में तीन बार मनाया जाता है लेकिन मुख्य रूप से यह पर्व भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी से लेकर 'चतुर्दशी' तक मनाया जाता है। 'दशलक्षण' पर्व में जैन धर्म के जातक अपने मुख्य दस लक्षणों को जागृत करने की कोशिश करते हैं। जैन धर्मानुसार दस लक्षणों का पालन करने से मनुष्य को इस संसार से मुक्ति मिल सकती है। संयम और आत्मशुद्धि के इस पवित्र त्यौहार पर श्रद्धालु श्रद्धापूर्वक व्रत-उपवास रखते हैं। मंदिरों को भव्यतापूर्वक सजाते हैं तथा तीर्थंकर महावीर का अभिषेक कर विशाल शोभा यात्राएं निकाली जाती हैं, इस दौरान जैन व्रती कठिन नियमों का पालन भी करते हैं जैसे बाहर का खाना पूर्णतः वर्जित होता है, दिन में केवल एक समय ही भोजन करना आदि। पर्युषण पर्व की समाप्ति पर जैन धर्मावलंबी अपने यहां पर 'क्षमा' की विजय पताका फहराते हैं और फिर उसी मार्ग पर चलकर अपने अगले भव को सुधारने का प्रयत्न करते हैं। आइए! हम सभी अपने राग-द्वेष और कषायों को त्याग कर तीर्थंकर महावीर के दिखाए मार्ग पर चलकर विश्व में अहिंसा और शांति का ध्वज फैलाएं, क्षमा करें और कराएं और 'जय भारत' ही बोलें।

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

आत्मा को पूनित करने वाले माहामंगलकारी पर्यूषण महापर्व पर सभी
जैनाचार्यों, साधु-साध्वीजी, महाराज साहेब श्रावक-श्राविकाओं से

मिच्छामी दुक्कड़म

डॉ. कांकरियांचे

ASIAN EYE HOSPITAL AND LASER INSTITUTE
Where every eye smiles
ससुन रोड, पुणे

Man Kanhaiya Eye Bank
Donate Vision

साई सूर्य नेत्रसेवा
दृष्टी साजरी करा
वर्धमान, माणिकचौक, अहमदनगर

HELPLINE : 8888 98 2222 / 911 2288 611
0241-2346317 / 2341417 / 2346017
saisuryaa85@yahoo.com
www.saisuryasupervision.com

रूग्णांनी येतांना जुने रिपोर्टस् बरोबर घेवून यावीत.

Nirmal

समस्त जैन समाज के गुरू-भगवंत आचार्य-उपाध्याय, आर्यिका-साध्वी, श्रावक व श्राविकाओं श्री जी के चरणों में मिच्छामी दुक्कड़म

Dr. M.M. Begani Jain - Winner of International Award-2007 for Best Poster IAAS

Abhishek Day Care Institute
"A Div. of Abhishek Day Care Health Services Pvt. Ltd."
and
Medical Research Center
A state of the Art Center Dedicated to Ambulatory Surgery

ISO CERTIFIED 9001-2018
Free Piles Clinic- Got Best Public Service Award At Confrence at Bombay Hospital September-2008

Procedures Performed
Hernia, Hydrocele, Varicocele, Vasectomy, Piles, Fistula-in-ano, Fissure-in-ano, Pilonidal sinus excision, Laparoscopic Appendicectomy, Biopsy, Lipoma excision, Sebaceous Cyst excision, Warts excision, Corn excision, Auroplasty, Orchidopexy, Orchidectomy, Ascitis/Pleural tapping, Abscess Drainage, Diagnostic laparsocopy, Toe nail excision, Endoscopies, Day Care Laparoscopic Surgery for Appendix, Gall Bladder and Varicocele

New 3 chip stryker HD laparoscopy camera set,
NeoV Laser Machine for Piles, Fistula, Fissure and Pilonidal Sinus surgeries without any incision
New Video Proctosope for Live Rectoscopy with images and video documentation of anal pathology
New Olympus Video Endoscope, " New GE 9100c Anaesthesia Machine for safer anaesthesia and surgery" All mediclaim cases undertaken here

WE ARE SITUATED AT
74/78, Indian Cancer Society Medical Center, Maharshi Karve Marg,
Opp. Cooperage Football Ground, Mumbai-400 021 | Telephone : 022-35775165
E-mail : abhishekdaycare9@hotmail.com, Website: www.drbegani.com, www.abhishekdaycare.co.in

Complimentry From M. M. Begani Jain & Family

समस्त जैन समाज के गुरू-भगवंत आचार्य-उपाध्याय, आर्यिका-साध्वी, श्रावक व श्राविकाओं श्री जी के चरणों में

उत्तम क्षमा

चर्या शिरोमणि पट्टाचार्य
श्री 108 विशुद्ध सागर जी महाराज

कैलाश जैन भारती - श्रीमती सन्तोष जैन
सन्दीप जैन - श्रीमती सलौनी जैन
भारतेन्दु जैन - श्रीमती ज्योती जैन,
सन्मति जैन - श्रीमती अनुष्का जैन

अरिहन्त इण्डस्ट्रीज
४१०/९३, नाई बाड़ा चौक, लखनऊ, उत्तरप्रदेश, भारत-२२६००३
भ्रमणध्वनि : ९४५२०१७९८४, ९४१५०६१३५६, ९४५२०१७९८५

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

पर्यूषण महापर्व
११ कर्त्तव्यों का मंथन

जब मार्च महीने का अन्तिम दिन आता है, तब सभी व्यापारी अपना एकाउन्ट व्यवस्थित कर देते हैं। डेबीट व क्रेडीट में कोई गलती रह गई हो, तो उस रकम को ठीक ढंग से व्यवस्थित कर देते हैं एवं अगले वर्ष का पत्र तैयार करते हैं, इसी प्रकार 'पर्युषण' वार्षिक पर्व होने से धार्मिक आत्मा ११ कर्तव्यों में से कोई एकाद बाकी रह गया हो, तो उसे इस महापर्व के दौरान सप्ताह भर में पूर्ण कर लेते हैं और अगले वर्ष हेतु वार्षिक कर्तव्यों का अन्दाज पत्र तैयार कर लेते हैं। केमरे के लेंस पर धूल गिर गई हो तो छायाचित्र सुव्यवस्थित नहीं आते, कपड़े से धूल हटाने से ही छायाचित्र निखरेगा, अपनी आत्मा आलस्य रुपी धूल से ११ कर्तव्य पालन में शिथिल बन गई, तो ११ वार्षिक कर्तव्य सम्पन्न करने में उसे कटिबद्ध बना लें। आत्मा वर्ष के दौरान तन-मन-धन के मोह और ममता से शिथिल बन जाती है इसलिये ११ कर्तव्य में से १० कर्तव्य धन की ममता झाड़ने के लिये है और १ कर्तव्य मन के अहंकार भाव और उससे आने वाला प्रायश्चित-तपश्चर्या तन की ममता झाड़ने के लिये है, इसलिये पर्युषण महापर्व के दूसरे व्याख्यान में श्रावक के ११ कर्तव्यों का वर्णन किया जाता है वे निम्न लिखित हैं:

१) प्रथम कर्तव्य संघ पूजन - कैवल्य प्राप्त करने के बाद तीर्थंकर भगवान समवसरण में प्रवचन (देशना) देने के लिये जब बैठते हैं, तब "नमो तित्थस्स" बोल कर बैठते हैं। तीर्थ यानी साधु-साध्वी श्रावक-श्राविका चतुर्विध संघ, ऐसे संघ को तीर्थंकर भी नमस्कार करते हैं क्योंकि ऐसे संघ में से ही बहुत से व्यक्ति धर्म करते हैं, तब उनको देखकर धर्म करने की प्रेरणा मिलती है। धर्मी के बिना धर्म हो नहीं सकता, ऐसे धर्मी को संघ पूजन कम से कम वर्ष में एक बार अवश्य करना चाहिये, पुण्य के उदय से ही ऐसे संघ की भक्ति करने का मौका मिलता है। भक्ति मुक्ति को खिंचती है।

२) दूसरा कर्तव्य साधर्मिक भक्ति - अहिंसादि समान धर्मवाला व्यक्ति साधर्मिक कहलाता है, इसमें कुल जाति का कोई नियम नहीं है। बिहार में सराक जाति व खंभात में पटेल भी साधर्मिक है, कष्ट में आये हुए साधर्मिक को उदारता से सहयोग देना भी साधर्मिक वात्सल्य है। व्यसन और पाप से पीड़ित साधर्मिक को व्यसन और पाप से मुक्त बनाकर धर्म में स्थिर कर, साधर्मिक राजदरबार में जाते थे, तब मार्ग में नये साधर्मिक को देखकर तुरंत नीचे उतरकर उसको आलिंगन करके आनंद व्यक्त करते थे।

३) यात्रात्रिक -

क) अष्टान्हिका यात्रा- वर्ष में एक बार पंचाह्निका या अट्ठाई महोत्सव करवाना या उसमें स्वशक्ति के अनुसार सहयोग देना चाहिए।

(ख) रथ यात्रा- रथ में भगवान को बिराजमान कर बाजे-गाजे के साथ वरघोड़ा निकालना, जिससे धर्म का प्रचार-प्रसार हो, जैसे कुमारपाल महाराज चैत्र वद ८ को प्रतिवर्ष रथ यात्रा निकालते थे।

(ग) तीर्थ यात्रा- जो संसार समुद्र से तारता है यानी पार उतारता है, वह तीर्थ कहलाता है। तीर्थ यात्रा वर्ष में कम से कम एक बार करनी चाहिये, जैसे पेथडशाह, समराशाह, कुमारपाल, वास्तुपाल, तेजपाल, विक्रमादित्य, भरत महाराजा वगैरह अनेक पुण्यात्माओं ने 'छरी पालक पद यात्रा संघ' निकाल कर इस कर्तव्य का पालन किया है। तीर्थ यात्रा में जमीनकंद रात्रि-भोजन, अभक्ष्य, भक्षण, फिल्मी गीत, लड़ाई-झगड़े, क्रोध आदि का त्याग करना चाहिये।

४) स्नात्र महोत्सव - कर्म के मैल की सफाई के लिए वर्ष में एक बार स्नात्र महोत्सव करना चाहिये। यह भगवान के जन्माभिषेक का अनुकरण है। पेथडशाह ने गिरनार तीर्थ में भव्य स्त्रात्र महोत्सव किया था।

५) देव-द्रव्य की वृद्धि - प्राचीन कई जिन मन्दिर जीर्ण हो चुके हैं। जीर्णोद्धार कराने के लिए देव द्रव्य की वृद्धि करनी चाहिये, जिससे जिनमन्दिर चमन जैसे सुन्दर बन जायें। उनके दर्शन से लोगों का सम्यक्त्व निर्मल बनता है, जिनशासन का गौरव बढता है। तीर्थमाला, उपधानमाला, तीर्थंकर का पारणा, १४ स्वप्न के चढावे बोलना वगैरह देवद्रव्य वृद्धि के उपाय हैं।

६) महापूजा - वर्ष में एक बार सिद्धचक्र, शांतिस्त्रात्र आदि महापूजन पढाने चाहिये, उससे भगवान की भक्ति होती है और उससे मुक्ति नजदीक बनती है।

७) रात्रि जागरण - पहली बार महातीर्थ के दर्शन जिस तिथि को हुए हो, उस दिन व भगवान के ५ कल्याणक और गुरु के स्वर्गवास की तिथि एवं व्रतोच्चारण, बड़ी तपश्चर्या, सूत्र वाचन वगैरह की तिथि को रात्रि में धर्म जागरण यानी भगवान के भजन वगैरह करने चाहिए। रात्रि में चाय, नास्ता, फिल्मी गीत वगैरह नहीं होने चाहिए।

८) श्रुत पूजा - कुमारपाल राजा ने २१ ज्ञान भंडार नये बनवाये थे। पूज्य कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य देव श्री हेमचंद्रसूरीश्वरजी महाराज ने ३.५ करोड़ संस्कृत श्लोक की रचना की थी, उसकी ७०० प्रति कुमारपाल राजा ने करवाई थी। पेथड शाह ने भगवती सूत्र को सुनते-सुनते ३६००० सुवर्ण मुद्रा का व्यय किया था।

९) उद्यापना - उद्यापन यानी उजमणा, वर्ष में तपश्चर्या की पूर्णाहूति होने के बाद दर्शन-ज्ञान चारित्र की सामग्री लाकर उपधान करवाना चाहिये। उजमणा करने से तपश्चर्या के फल में वृद्धि होती है। मन्दिर के उपर कलश और भोजन के उपर सौंफ वगैरह शोभती है, इसी प्रकार तपश्चर्या करने बाद उजमणा शोभता है। पेथड शाह ने नमस्कार मंत्र **शेष पृष्ठ १८ पर ...**

LOOK THAT SAYS VERITE JEWELS.....

VERITE JEWELS
V JEWELLERY
9/4, 3RD FLOOR UNITY HOUSE, ABOVE SBI OPP. PANCHRATNA BLDG.,
OPERA HOUSE, MUMBAI-400004, TLE#022-23620006

CC-7030, "C" TOWER, BHARAT DIAMOND BOURSE, BANDRA KURLA COMPLEX,
BANDRA (EAST), MUMBAI- 400051
TEL: 022 - 26754866/26755866

अहिंसा परमो धर्मः

समस्त जैन समाज के गुरू-भगवंत
आचार्य-उपाध्याय, आर्यिका-साध्वी श्री जी के
चरणों में

मिच्छामी दुक्कड़म

मुकेश सांड जैन
भ्रमणध्वनि : ९३१८५९३५९९
राष्ट्रीय मंत्री-जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

रिद्धि पैकेजेज प्राईवेट लिमिटेड
Manufacturer-Corrugated Boxes, PET Bottles and Jar
गाँव-काथा, बड्डी, हिमाचल प्रदेश, भारत-१७३२०५
Email : mjain_riddhi@yahoo.com
भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए, INDIA नहीं एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

समस्त जैन समाज के गुरू-भगवंत
आचार्य-उपाध्याय, आर्यिका-साध्वी, श्रावक व
श्राविकाओं श्री जी के चरणों में

उत्तम क्षमा

Kirti Kumar Jain
Kamlesh Jain
Lavkush Jain
Ratnesh Jain

G.C Jain & Co.
Swastik wires

10/11, Panchsheel Nagar,
Raipur, Chattisgarh, Bharat-492001,
Mob. 09826143007 / 7509811111

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

क्षमा मोक्ष का द्वार है

क्षमा व स्नेह स्वाभाविक गुण है जबकि ईर्ष्या अथवा कटुता, विभाव दशा की देन है इसी कारण द्वेष अथवा वैर से उत्पन्न क्रोध को ज्यादा समय तक कोई टीकाकार नहीं रख सकता, कुछ ही समय बाद वह स्वत: समाप्त हो जाता है। क्रोध जब आता है तब ज्वाला का काम करता है, न मालूम क्या-क्या जलाकर राख कर दे। स्नेह जीवन में अमृत तुल्य है, जबकि क्रोध हलाहल विष, स्नेह जीवन को मधुर सुगन्धमय व बिना किसी बोझ व तनाव के स्वाभाविक रुप से विकसित करता है, जबकि द्वेष से जीवन मलिन ग्लानियुक्त व कटुता से कलुषित होता रहता है साथ ही अनावश्यक बोझ से दबा हुआ महसूस होता है अत: द्वेष त्याज्य है।

द्वेष व क्रोध, स्वयं को जलाता है जबकि सामने वाले को मात्र उकसाता है जिसमें स्वयं का अहित अधिक है।

सांवत्सरिक महापर्व के दिन हमें मन, वचन, काया के योग से स्वार्थ या प्रमादवश किसी का दिल दु:खाने में आया हो अथवा दु:ख पहुँचाया हो तो समझपूर्वक क्षमायाचना करनी चाहिये ताकि द्वेष का धुँआ, आत्मा पर कालिमा लगाने से पहले ही समाप्त हो जाये।

द्वेष आत्मा के लिये दूषण है, क्षमा आत्मा का भूषण है। द्वेष वात्सल्य से मिटेगा जैसे गंदा कपड़ा, गंदे पानी से साफ नहीं होता बल्कि स्वच्छ पानी की आवश्यकता होती है वैसे ही द्वेष-प्रतिद्वेष से नहीं बल्कि मैत्री की मधुरता से समाप्त होगा। जैसा कि हम देखते हैं चन्दन स्वयं को काटने वाली कुल्हाड़ी को भी सुगन्धित करता है, गुलाब का फूल कांटों के बीच रहकर भी सुगन्ध देता है। जीभ कभी दांत से कट जाये तो भी दांत का साथ नहीं छोड़ती, यहाँ तक कि तरुवर पत्थर मारने वाले को भी मीठे फल देता है वैसे ही सर्वविदित है कि चंडकौशिक नाग ने भगवान महावीर को डंक मारा फिर भी करुणा व वात्सल्य के फलस्वरुप खून के बदले, दूध की धारा बहने लगी।

आज क्यों नहीं मानव अपने मन-मुटाव को भुलाकर, क्षमा व वात्सल्य के अवतार भगवान महावीर की वाणी

''मिति में सव्व भुएसु वैर मज्झं न केणइ''

अर्थात् जगत में सभी से मैत्री बनाये रखना व किसी से वैर की परम्परा नहीं बढ़ाना है, प्रेम से प्रेम बढ़ता है अत: ऐसी कल्याणकारी भावना को अपने जीवन में सदा के लिये पुन: प्रतिष्ठित करें, यही महापुरुषों का कथन है, अत: जहाँ भी वैर-विरोध का वातावरण बना हो, वहाँ मन-वचन व काया से क्षमा याचना करनी चाहिये। क्षमा वीरों का आभूषण है, क्षमा-स्नेह की सरिता व प्रेम की पवित्र गंगा है, प्रेम के बिना जीवन रेगिस्तान है जहां न पानी है न हरियाली। 'जिन शासन' में क्षमा धारण करना, राग द्वेष के कर्मरुपी बीज को समाप्त करना है।

'जिन शासन' वस्तुत: जीव शासन है जहां सभी जीव निश्चित रुप से सिद्ध परमात्मा के साधर्मी रहे हैं, अत: कहा जाता है छोटे से छोटा जीव भी सिद्धपद का उम्मीद्वार है फिर उन्हें दु:ख पहुँचाने का हमें क्या अधिकार? यदि जाने-अनजाने में जहाँ कहीं किसी के साथ वैर अथवा कटुता रही हो अथवा दु:ख पहुँचाया हो तो अंत:करण से क्षमा मांगना, पर्युषण महापर्व की आराधना का सार है। क्षमा, मोक्ष मार्ग की प्रथम सीढ़ी है। गम खाना व गुस्से को पी जाना, क्षमा धर्म है। भूल होना मानवीय प्रकृति है, भूल को सुधारना मानवीय संस्कृति है, भूल को नहीं मानना विकृति है।

''क्षमा वीरस्य भूषणम्''

अपनी भूलों पर पश्चाताप करना आत्मा को पवित्र बनाना है जो भूल न करे वह भगवान, जो भूल करके माफी मांगे, वह इन्सान जो भूल को भूल न माने, वह बेईमान, जो भूल करके ऊपर से अहंकार करे, वह शैतान पांच पापों से सजाया है, जिसने जीवन, वह मानव से शैतान बन बैठा है हर कली में फूल का अरमान छिपा बैठा है, हर मानव में भगवान छिपा बैठा है।

- जिनागम

पृष्ठ १६ से ... की तपश्चर्या करने के बाद ६८-६८ रत्न, सोना-चांदी के कलश वगैरह से उजमणा किया था, मैना सुंदरी ने दो बार उजमणा किया था। उजमणे से साधु-साध्वीजी की निर्दोष उपकरण से भक्ति होती है।

१०) तीर्थ प्रभावना - जिन शासन की शान बढे, इसलिये दशार्णभद्र, कोशिक राजा वगैरह की तरह दब-दबा से प्रभु को वंदन गुरु के प्रवेश, सामैया आदि वर्ष में एक बार कराना चाहिये। सर्व जीव हितकारी जिन शासन दूसरे जीवों के हृदय में बसे और वे अहिंसा की ओर आगे कदम बढाये ऐसे प्रयत्न करने चाहिये।

११) आलोचना - वर्ष के दौरान जाने-अनजाने में जो पाप हो गये हों, उनको सद्गुरु के पास प्रकट करके प्रायश्चित कर लेना चाहिये। भयंकर पाप के मैल से आत्मा रुपी वस्त्र मैला कुचेला बनता है, तो आलोचना रुपी साबुन से स्वच्छ बन जाता है। केंसर की गांठ का तात्कालिक ऑपरेशन कर दिया जाये, तो आदमी बच सकता है परंतु पैर में घुसे हुए छोटे कांटे की उपेक्षा करने पर शरीर को सड़ान से मरना पड़ता है। भींगा हुआ कपड़ा खुला करने से जल्दी सूख जाता है। वैसे सदगुरु के पास हृदय खोलने से आत्मा के पाप पलायन हो जाते हैं। पुष्पचूला व कामलता ने भयंकर पाप किये थे, मगर पश्चाताप पूर्वक व्यथित हृदय से आलोचना की तो उसी भव में मोक्ष प्राप्त किया। रुक्मणी ने आंख का पाप छुपाया तो उसके एक लाख भव बट गये। अहंकार को छोड़ सरल भाव से आलोचना लेने वाला पापी पावन बन जाता है, वामन विराट बन जाता है, आलोचना लेने के बाद प्रायश्चित को शीघ्र पूर्ण करना चाहिए, इस प्रकार आराधना से आत्मा परम सुख की भोक्ता बनती है।

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

समस्त जैन समाज के गुरू-भगवंत आचार्य-उपाध्याय,
आर्यिका-साध्वी, श्रावक व श्राविकाओं श्री जी के चरणों में उत्तम क्षमा

परस्परोपग्रहो जीवानाम

हटाओ रासायनीक शैम्पू एवं साबुन,
अपनाओ आयुर्वेदिक पाउडर सिल्केशाईन।

वनौषधीयों से निर्मित

सिल्केशाईन

आयुर्वेदिक शिकेकाईयुक्त पावडर

सिल्केशाईन में है बहुगुणी जडी-बूटीयाँ, इसलिये यह बालों में रूसी एवं जुएँ होने से रोकता हैं एवं बालों को झडनेसे बचाता हैं। साथ ही साथ बालों की जडें भी मजबूत करता हैं। इसका अद्वितीय रूसी नियंत्रण फार्मूला बालों को अधिक सुंदर, मुलायम, चमकीला स्वस्थ और जवाँ बना देता हैं।

सिल्केशाईन की जड़ी-बूटीयों से बालों की वृध्दि तो होती ही हैं साथमे इसका असरदार फार्मूला बालों को समयपूर्व सफेद होने से रोकता हैं। सिरकी त्वचा एवं बालों कें रोगों से भी यह बचाव करता हैं। सिल्केशाईन में हानिकारक पदार्थ नही होने से यह बच्चों के लिये भी सुरक्षित हैं। इसकी जडी-बूटीयों की भीनी भीनी खुशबू दिनभर आपको तरोंताजा रखती हैं।

आयुर्वेदिक मेडिसीन

JAI-SON HERBALS

जयसन हर्बल्स प्रा. लि.
नाशिक

स्वस्थ और सुंदर
बालों के लिये कुदरती नुक्सा

एक संपूर्ण स्वदेशी उत्पादन

Atelier-NSK-2596364

व्यावसायिक संपर्क: **जिनेंद्र सेल्स कॉर्पोरेशन** 202-ए, मेघदूत शॉपींग सेंटर, सी.बी.एस. के सामने, नाशिक-422 001. फोन-0253-2577777

आत्मशुद्धि का पर्व - पर्वाधिराज पर्युषण पर्व

लहरों को मझधार नहीं, किनारा चाहिए
हमें चांद सुरज नहीं, सितारा चाहिए
मोह-माया में भटकी आत्मा को
महावीर के संदेशों का सहारा चाहिए

जैनों के चौबीसवें तीर्थंकर महावीर का नाम लेते ही व्यक्ति नहीं, सत्य का आभास होने लगता है। सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकांतवाद, ब्रह्मचर्य, अभय, क्षमा के प्रतीक महावीर के उपदेशों, सिद्धांतों के प्रसार-प्रचार की आज अत्यंत आवश्यकता है।

आज समस्त विश्व हिंसा की कगार पर खड़ा है, ऐसे में जरूरत है 'विश्व मैत्री दिवस' 'क्षमा-याचना' दिवस मनाने की। जैनों का महत्वपूर्ण महापर्व पर्वाधिराज 'पर्युषण' एवम् 'क्षमापर्व' 'संवत्सरी दिवस' फिर एक बार दुनिया को क्षमा का, प्रेम का अमर संदेश देने के लिये है।

'पर्युषण' शब्द संस्कृत का शब्द है, प्राकृत अर्धमागधी में इसे पज्जोसवणा, पज्जुसणा या पज्जोसमणा कहा जाता है। कहते हैं वर्ष में चार अष्टान्हिक पर्व आते हैं, कुछ प्राचीन ग्रंथों में छह अष्टान्हिक (आठ दिनों तक मनाया जाने वाला) पर्वों का भी उल्लेख है। माना जाता है कि इन दिनों में देवगण नंदीश्वर दीप में आते हैं और वहाँ अट्ठाई महोत्सव मनाते हैं। यह अट्ठाई महोत्सव आठ दिन श्वेताम्बर का होता है इसलिये श्वेताम्बर पर्युषण पर्व आठ दिन के मनाने की एक प्राचीन परंपरा चल रही है।

पर्वाधिराज पर्युषण पर्व जो आत्मा के निकट जाकर परिमार्जन, परिष्करण, प्रतिक्रमण का अर्थबोध प्रदान करता है। आत्म-ज्ञान से शाश्वत संदेश देता है। आठ दिन तक मनाया जाने वाला यह पर्व शुद्ध आध्यात्मिक पर्व है, इसके भी दो पक्ष हैं, एक बाह्य और दूसरा आंतरिक। बाह्य की साधना में श्रावक-श्राविका (पुरूष-स्त्री) उपवास, पोषध, प्रतिक्रमण करना व्याख्यान (प्रवचन) सुनना, कंद-मूल, हरी सब्जियाँ, रात्रि भोजन का त्याग करना, ब्रह्मचर्य का पालन, साधार्मिक भक्ति, अभयदान, क्षमापना और अट्ठम तप आदि कर्तव्यों का पालन करते हैं। (जैन साहित्य में ८ अंक विशिष्ट महत्व रखता है। सिद्ध भगवान के ८ गुण बताये गये हैं, जो ८ कर्मों का क्षय करने से आत्म स्वभाव के रूप में प्रकट होते हैं, साधु की प्रवचन माता ८ है। अष्ट मंगल **शेष पृष्ठ २१ पर...**

समस्त जैन समाज के गुरू-भगवंत आचार्य-उपाध्याय, आर्यिका-साध्वी, श्रावक व श्राविकाओं श्री जी के चरणों में
मिच्छामी दुक्कड़म
Manan Jain
Mob: 8866765894
Lalit Jain
Mob: 9429010903
SHIVRUH™
नारीत्व का आत्मविश्वास
CREATION
1032-34, Jay Mahaveer Textile Market, Near Someshwar Market, Ring Road, Surat, Gujrat, Bharat-395002
M. : 8866765894, 9429010903

आत्मा को पूनित करने वाले माहामंगलकारी पर्यूषण महापर्व पर सभी जैनाचार्यों, साधु-साध्वीजी, महाराज साहेब श्रावक-श्राविकाओं से
उत्तम क्षमा

Rtn. M.S. JAIN (MPHF)
District Governor (2006-2007)
R.I. DISTT. 3100
Rotary
RLI. DISTT. 3100
Receipient of:
- Rastriya Ratan Award
- Rajeev Gandhi Shriromani Award
- Regional Services Award for a Polio Free World
- The Rotary Foundation District Service Award
- Presidential Citation Award
- Service Above Self Award

Resi.: 9-B, Opp. Dhanwantri Hospital, Saket, Meerut, Uttar Pradesh, Bharat- 250 003
Mob: +91-9412206168, 8755175296
E-mail: msrubber2002@gmail.com

समस्त जैन समाज के गुरू-भगवंत आचार्य-उपाध्याय,
आर्यिका-साध्वी, श्रावक व श्राविकाओं श्री जी के चरणों में

मिच्छामी दुक्कड़म

SUSHILA DEVI RAJESH BABITA
KKAAVYA NAMAN CHORARIA

KBC INVESTMENTS
(Deals in Shares and Securities)

Kolkata- 700001

पतित पावन तरण तारण, हमारी फरियाद सुन लेना।
तेरे चरणों में मस्तक है, हमें अपना बना लेना।।

R.K. MARBLE GROUP
Corporate Office : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91 1463 277777, 260101, Fax : +91 1463 250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

पृष्ठ २० से... जो प्रत्येक शुभ कार्य के पहले मांडे जाते हैं, आत्मा के सूचक प्रदेश भी ८ है। अट्ठाई पर्व के भी ८ दिन हैं, ये सारी क्रियाएँ भी एक तरह से आंतरिक पक्ष को संबल प्रदान करती हैं। दूसरा पक्ष है आत्मशुद्धि, विश्व मैत्री और क्षमा-याचना का, कहते हैं अंतस के दो प्रबल शत्रु होते हैं राग और द्वेष, ये दो शत्रु ही हमारे नैतिक पतन का प्रमुख कारण बनते हैं। क्रोध, मोह-माया-लोभ, परिग्रह के शिकंजे में फंसकर मानव अनगिनत अपराधों में लिप्त हो जाता है, ये पर्व हमें संदेश देता है, कटुता-अनबन, राग-द्वेष के भावों से मुक्त होकर क्षमा-प्रेम-स्नेह, मानवता और आत्मशुद्धि के रंग में रंग जाओ। आत्मशुद्धि के लिये सबसे महत्वपूर्ण है क्षमायाचना, वह भी अंतस मन से होनी चाहिये, ताकि मन में कोई विकार बाकी न रहे। ओशो कहते हैं ''महावीर सिर्फ जैन नहीं थे, वे जिन थे, स्वयं को जीतने वाले'' आत्म रुपांतरण की जो राह महावीर ने दिखाई वह आज भी उतनी ही सार्थक है। 'संवत्सरी' दिवस के चार महत्वपूर्ण अंग है, चार आवश्यक कर्तव्य है जो हर साधक को करने चाहिये। उपवास, प्रतिक्रमण, आलोचणा और क्षमापना। उपवास से तन-मन दोनों की शुद्धि होती है।

उपवास का मतलब होता है अपनी आत्मा में रमण करना। तीर्थंकर महावीर चार-चार महीने का उपवास करते हैं जो इस बात का सबूत है कि उनके पास कितनी आत्मिक शक्ति थी। (आज भी कई साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका मासक्षमण (३० उपवास) या उससे अधिक उपवास करते हैं) आप भीतर चले जाते हैं तो बाहर का स्मरण छूट जाता है। महावीर की 'काया-क्लेश' का मतलब यही है कि काया की ऐसी साधना की जाये उसे ऐसा नियंत्रित किया जाये कि काया बाधक न रहकर साधक हो जाए। आज इस अर्थ को लोगों तक पहुँचाने की अत्यंत आवश्यकता है, ताकि वीर की वाणी - वीर की धारा समूचे जगत में अखंड बहती रहे और अंतस के अंधेरे में सबके अंतर दीप जलते रहे।

'संवत्वरी दिवस' का सबसे बड़ा कर्तव्य है 'क्षमापना'। महावीर कहते हैं 'क्षमा' मांगने से मनुष्य छोटा नहीं होता, बल्कि जो 'क्षमा' मांगता और 'क्षमा' देता है वह 'वीर' होता है 'क्षमा वीरस्य भूषणम' महावीर का जीवन चरित्र पढ़ें वह कभी किसी से नहीं डरे, जो भी व्यक्ति आध्यात्मिक विकास करेगा, अपनी चेतना का उद्वारोहण करेगा, उसका भय समाप्त हो जायेगा, जिस वीर के हाथ में 'क्षमा' का अमोघ शस्त्र है, उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। 'क्षमा' से शत्रु भी मित्र बन जाते हैं। 'क्षमापना' का संदेश आत्मशक्ति का संदेश है, जीवन शुद्धि का महोत्सव है, विश्व-मैत्री की भावना है, यही भाव जीवन को निर्मल बनाता है। (संवत्सरी प्रतिक्रमण द्वारा, वर्ष भर हुई भुलों की, पापों की हम समालोचना करते हैं) अट्ठारह दिनों का यह समय अध्यात्म चिंतन का समय है, आत्मा से सभी विकारों का विसर्जन करने का समय है, समस्या के समाधान का समय है।

'क्षमा' के पावन पर्व पर हम अभय बनने का संकल्प करें, मन को पवित्र और निर्भय बनाने का मार्ग प्रशस्त करें।

खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमतु में
भिति में सव्वे भुएसु वेर मज्जं न केणई

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

दशलक्षण पर्व का पहला दिन उत्तम क्षमा

जैन धर्म में 'दशलक्षण' पर्व मनाया जाता है, यदि इन 'दसलक्षणों' को जीवन में अपना लिया जाए तो मोक्ष की प्राप्ति की जा सकती है, इसमें पहला है- उत्तम क्षमा!

मुनि महाराज जीवन भर इन गुणों को अपनाते हैं, कई अपशब्द सुनने के बाद भी मुनि महाराज प्रतिक्रिया नहीं देते, सामने वाले को क्षमा कर देते हैं।

करीब सौ साल से भी अधिक समय की बात है, सन १९०० में भारत में ब्रिटिश सरकार का शासन था, उस समय जीवन अभी की तरह आसान नहीं हुआ करता था, उस समय आचार्यश्री शान्ति सागर जी महाराज को महान संत के रूप में जाना जाता था, उसी कालावधि में शान्ति सागर जी महाराज विहार करते हुए धौलपुर के राजखेड़ा शहर पहुंचे, वहां पर उन्होंने तीन दिन तक प्रवचन दिया, बहुत से लोग उनका प्रवचन सुनने आते थे, चौथे दिन उन्हें विहार करने का विचार आया, तो वहां के श्रावकों ने उन्हें वहीं रुकने की प्रार्थना की, तब महाराज श्री ने श्रोताओं का निवेदन स्वीकार कर लिया, पांचवें दिन आचार्य आहार करने के लिए जल्दी निकल गए, आहार करने के बाद वे 'सामयिक' करने का विचार कर रहे थे, तभी उन्हें आकाश में काले बादल दिखाई दिए, उन्हें यह संकेत सही नहीं लगे, उन्होंने अंदर कक्ष में बैठकर 'सामयिक' की।

महाराज श्री ने ध्यानमग्न होकर सभी जीवों के प्रति समता का भाव रखने की प्रार्थना की, उसी समय अचानक ५०० से ज्यादा लोग वहां हथियार के साथ पहुंचे। श्रावकों के साथ मारपीट करने लगे। कुछ बदमाश आचार्य श्री के ध्यान कक्ष तक जाने वाले थे, तभी कुछ श्रावकों ने रोकने का प्रयास किया, तो उन्हें हाथ-पैरों में चोटें पहुंचाई गई, फिर वहां पुलिस पहुंची, जो लोग आचार्यश्री को नुकसान पहुंचाने आए थे, उनके मुखिया को पकड़ लिया गया, उस समय भी आचार्यश्री ध्यान में तल्लीन थे, पुलिस अधिकारी आचार्यश्री के दर्शन की इच्छा के साथ जब उनके कमरे में गए, तो पुलिस अधिकारियों ने तय किया इतने शांत मन वाले मुनि पर आक्रमण करने वालों को कड़ी सजा देनी चाहिए। आचार्यश्री को जब पता चला कि पुलिस ने बदमाशों को कड़ी सजा देने का निर्णय लिया है, तो आचार्यश्री ने प्रतिज्ञा ले ली, जब तक उन बदमाशों को छोड़ा नहीं जाता, तब तक वे अन्न-जल ग्रहण नहीं करेंगे।

पुलिस अधिकारियों ने कहा- इन बदमाशों के प्रति दया भाव रखना उचित नहीं हैं, आप ऐसा क्यों कर रहे हैं? तब आचार्यश्री ने जवाब दिया, मेरे मन में इनलोगों के प्रति बिलकुल भी नफरत का भाव नहीं है, हमारी वजह से आप इनलोगों को सजा दे रहे हैं, यह देखकर आहार करना हमारे लिए संभव नहीं होगा।

ऐसा सुनकर पुलिस वाले आश्चर्यचकित रह गए कि कोई इतना उदार हृदय वाला और दयावान कैसे हो सकता है, इस बात पर पुलिस ने सभी को बिना सजा दिए ही छोड़ दिया, जो लोग हमला करने आए थे, उन्हें भी बेहद पछतावा हुआ।

अगर हम अपने आसपास देखें, तो कई लोग छोटी-बड़ी गलतियों के लिए माफ कर देते है, हमें भी अपने जीवन में 'क्षमा' का भाव अपनाना चाहिए, अपने शत्रु के प्रति भी मन में नफरत के भाव नहीं लाना चाहिए।

क्षमापना महापर्व क्या है?

'पर्व'- उसे कहते हैं जो हमारे व्यवहार-संबंधों में पवित्रता बनाए रखे, जैसे रक्षा बंधन, होली आदि।

'महापर्व'- उसे कहते हैं जो सामूहिक रूप से धर्म-पवित्रता को उजागर करे, जैसे पर्यूषण, दस लक्षण पर्व आदि।

'क्षमापना महापर्व'- उसे कहते हैं जिसमें आलोचना पूर्वक हम अपने पाप की क्षमापना कर स्वयं को पवित्र करें, जैसे 'संवत्सरी', क्षमावाणी पर्व...

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

हाय, हैलो छोड़िये, जय जिनेन्द्र बोलिए!

Ideal place for
Marriages, Conferences & Relaxation
Khanvel RESORT SILVASSA
09320023557
09824056861
022-26352635
022-26305555
follow us on:
/thekhanvelresort
/khanvelresort
www.khanvelresort.com
sales@khanvelresort.com

समस्त जैन समाज के गुरू-भगवंत आचार्य-उपाध्याय, आर्यिका-साध्वी, श्रावक व श्राविकाओं श्री जी के चरणों में

मिच्छामी दुक्कड़म

Vinodkumar Chitranjan Singh Dugar Jain

112, Somerset House, Warden Road,
Breach Candy, Mumbai,
Maharashtra, Bharat - 400 026
दूरध्वनि : 022-2367 1781 / 2363 6597
भ्रमणध्वनि : 09820076581

गत वर्ष हुई बोल-चाल व क्रिया द्वारा हुई
किसी भी प्रकार की भूल-चूक के लिए मिच्छामी दुक्कड़म

Samrat Jewellers

नवग्रह रत्नों के व्यापारी
मणिक, मोती, मूंगा, पन्ना, पुखराज, हीरा,
नीलम गोमेदक, लहसुनिया, नवग्रह रत्न अपनी राशी के
अनुसार रत्न धारण करने से हर समस्या दूर होकर,
स्वास्थ लाभ, समुद्र शाली, व हर क्षेत्र
में सफलता प्राप्त होती है
हमारे यहां सभी राशियों के रत्न हमेशा उपलब्ध रहते हैं
एक बार अवश्य संपर्क करें

अनोखीलाल नाहर जैन पंकज नाहर जैन

३१ - ए कीर्तीकर मार्केट, दादर (पश्चिम), मुम्बई,
महाराष्ट्र, भारत - ४०००२८ फोन ०२२-२४३०६६४२
मो: ९८९२८०५०६९

समस्त जैन समाज के गुरू-भगवंत आचार्य-उपाध्याय, आर्यिका-साध्वी, श्रावक व श्राविकाओं श्री जी के चरणों में

मिच्छामी दुक्कड़म

राजमल चंगेडिया जैन - सौ. मंगला चंगेडिया जैन
आदेशकुमार चंगेडिया जैन - सौ. प्रियंका चंगेडिया जैन

संभव चंगेडिया जैन व चंगेडिया परिवार
रूपाली गुगळे व शरण्या गुगळे
सौ. दिपाली मुनोत व तनय, दिव्या मुनोत

श्री राजमल श्रीमल

जनरल मर्चेन्ट ॲण्ड कमिशन एजेन्ट
५६, मार्केटयार्ड, अहमदनगर, महाराष्ट्र, भारत-४१४००१
भ्रमणध्वनि : ०९८५०९९५०९९ / ९३७३१५४५८६
प्रोप्रा. राजमल श्रीमल चंगेडिया जैन

चंगेडिया आऊट डोअर्स

अहमदनगर, महाराष्ट्र, भारत-414001 फोन : 0241-2547070
आदेश चंगेडिया - भ्रमणध्वनि 09822288443, 09011155555

गत वर्ष हुई बोल-चाल व क्रिया द्वारा हुई
किसी भी प्रकार की भूल-चूक के लिए मिच्छामी दुक्कड़म

भंवरलाल पगारिया जैन

वरीष्ठ उपाध्यक्ष
अ.भा. श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, कर्नाटक शाखा
भूतपूर्व अध्यक्ष
अ.भा. श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, कर्नाटक शाखा
कार्यकारिणी सदस्य
अ.भा.श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, दिल्ली
मुख्य मार्गदर्शक
श्री मरुधर केसरी जैन गुरु सेवा समिति, बैंगलोर
37, हॉस्पीटल रोड, बैंगलोर, कर्नाटक, भारत- 560053
फोन :- 080 22383557 मो. - 09448238429

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

स्वयं को पहचानने का अवसर पर्युषण

पृथ्वी पर बिखरे अनेक-अनेक जीवों की तरह मनुष्य भी एक देह, एक शरीर की तरह जन्म लेता है। मनुष्य और दूसरे सभी जीव भूख-प्यास-काम और उत्सर्जन की क्रियाओं में समानता रखते हैं। मनुष्य जन्म से पशुवत होने के उपरांत भी अपने लालन-पालन के दौरान सामाजिक व्यवहार के तौर-तरीके सीखता है और धीरे-धीरे उस राह पर चलना चाहता है जिस राह को हम सब आत्मिक उत्थान के रुप में जानते हैं, इसी राह पर चलने के कारण मनुष्य संसार के सभी जीवों में श्रेष्ठ और अनोखा है।

संसार के सभी धर्मों ने सत्य-सामंजस्य, त्याग, सहनशीलता, गम्भीरता और नैतिकता को सर्वोपरि माना है।

जैन धर्म! संसार के सबसे पुराने, मगर वैज्ञानिक सिद्धांतों पर खड़े धर्मों में से एक है, इस धर्म की अद्भूत पद्धतियों एवं सिद्धांतों ने मनुष्य को, शारीरिक एवं मानसिक रुप से इतना ऊपर उठा दिया है कि वह मुक्ति के मुकाम तक पहुँचने के रास्ते को बहुत ही आसानी से पा सकता है, उनके पर्व त्यौहारों में जैन धर्म की सांस्कृतिक विरासत में सबसे महत्त्वपूर्ण पर्व ''पर्युषण'' पर्व है। आचार्य मुक्ति सागरजी ने तो इस पर्व को आत्मशुद्धि का महापर्व कहा है।

'पर्युषण' का शाब्दिक अर्थ है हर जगह होना, हर जगह व्याप्त हो जाना या हर जगह छा जाना, जैसे प्रभु हर जगह छाए हुए हैं। हर जगह छा जाने के लिए सबसे पहले हमें अपनी अंर्तआत्मा को पहचानना होगा, उसमें रमना होगा। स्वयं में खोए रह कर, अपने को पहचानना या स्वयं को ढूँढना, कोई मामूली बात नहीं है। आज की इस भाग-दौड़ भरी जिन्दगी में, जहाँ हमारे पास अपने लिए कुछ पल कहाँ से निकाल पाएँगे? हमारी इसी कठिनाई को आसान करने के लिए यह महान पर्युषण पर्व हर साल आता है, इस अनोखे पर्व के अट्ठारह दिनों में अगर हम चाहें तो सब कुछ भूला कर, अपने आप को खोज सकते हैं, अपनी अन्तरात्मा की थाह पा सकते हैं, हर जगह उपस्थित हो सकते हैं।

भोग-विलास के इस दौर में पद-पैसा-प्रसिद्धि-प्रतिष्ठा-अहंकार और माया मोह के हजारों साधनों ने हमें एक ऐसे चक्र में फँसा दिया है कि हम अपने आप को भूल गए हैं। मुक्ति मनुष्य का मौलिक अधिकार है परन्तु आज की सभ्यता ने हमें हमारे उस मौलिक अधिकार से भी वंचित कर दिया है, हमारी शिक्षा पद्धति, हमारे सामाजिक और पारिवारिक सम्बन्ध, हमारे व्यापार और यहाँ तक कि आज का ज्ञान-विज्ञान आदि सभी ने, हमें इस तरह से बाध्य कर दिया है कि हम अपने सहज स्वभाव को भूल बैठे हैं।

'पर्युषण' महापर्व हमें इन सबसे उबरने का एक मौका देता है। 'पर्युषण' हमें आज की आधुनिक सभ्यता से उत्पन्न, विकट परिस्थितियों से बचने का अवसर देता है। 'पर्युषण' हमें स्वयं में रच बसकर, अन्तरात्मा को पहचान कर मुक्ति के सुगम उपाय सुझाता हैं। 'पर्युषण' जैन धर्म के मौलिक तत्वों से लाभ उठाने के लिए हमें आगे बढाता है। 'पर्युषण' हिंसा से परे रहने के संकल्प को दोहराता है। 'पर्युषण' प्राणिमात्र पर दया के मूल धर्म की हमें याद दिलाता है। पर्युषण साधर्मिक भक्ति यानी हमारे धर्म से जुड़े लोगों के प्रति हमारी आस्था और हमारे अनुराग को जन्म देता है। पर्युषण हमें तेले-तप-उपवास इत्यादि की तरफ प्रेरित करता है। उपवास एक ऐसी क्रिया है, ऐसी भक्ति है, ऐसा खोयापन है कि हम अन्न-जल ग्रहण करना भी भूल जाते हैं। 'पयुर्षण' हमें अपने गुरुओं के प्रवचनों से अभिभूत कराता है। 'पर्युषण' हमें चैत्य परिपाटी यानी अपने इष्टजनों के साथ पुण्य स्थलों के दर्शन को ले जाता है। 'पर्युषण' का अन्तिम दिन-संवत्सरी या क्षमापना का दिन, हमें हमारे भीतर दूसरों के प्रति पैदा हुए राग-द्वेष-बैर इत्यादि के विसर्जन का सुअवसर देता है।

राग विरता से भरे संसार में, अपने-अपने हितों और अहंकारों की गठरी उठाए, हम न जाने कहाँ-कहाँ और किस-किस से टकराते फिरते हैं। कभी खुद की भावनाओं और कभी दूसरे की भावनाओं को ठेस पहुँचाकर, आगे निकल जाने की दौड़ में, अमूमन हमसे हिंसा हो ही जाती है, इस सब की वजह से अपनी ग्लानि और क्षोभ को धोने का एक मात्र उपाय यही बचता है कि शुद्ध अन्तर्मन से हम, अपनी भूल-चूक को स्वीकार करें और सबके प्रति विनम्रता का भाव जगाएँ, अगर ऐसा हम कर पाते हैं तो यह निश्चित रुप से सम्भव है कि आने वाले वर्ष में हमारा व्यक्तित्व और अधिक सहिष्णु बन कर उभरेगा। प्रायश्चित एवं प्रार्थना की आँच से हमारे सारे विकार जल कर खाक हो जाएँगे और फिर हमारी आत्मा अपने असली स्वरुप को पाकर खिल उठेगी-चहचहा उठेगी।

उपासना-तप-जप-प्रवचन-ब्रह्मचर्य-अहिंसा-सामायिक प्रतिक्रमण - संवर-पौषध जैसे पवित्र मिश्रण को 'पर्युषण' कहना उचित ही होगा। 'णमोकार मंत्र' के सतत जाप, कल्पश्रुत वाचन व संतों के आध्यात्मिक उपदेश के साथ-साथ, तीर्थंकर महावीर के द्वारा प्रशस्त पाँच ज्ञानोपदेशः

प्राणी मात्र की हिंसा न करना, किसी वस्तु को बिना दिए स्वीकार न करना, मिथ्या भाषण न करना, ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना, अपरिग्रह के प्रति समर्पित रहना अर्थात माया-मोह, धन संचय इत्यादि से दूर रहने का चिंतन, मनन, आचरण 'पर्युषण' पर्व के मुख्य उद्देश्यों में शरीक होना, इसी से आत्मा निर्मल होती है और किसी तरह के सांसारिक विकार के पास नहीं भटकते। ग्रंथों में 'पर्युषण' पर्व को अमृत तुल्य साधन माना गया है। पर्युषण पर्व के दौरान जो उदार व विशाल हृदय विकसित होता है उसकी प्रतिध्वनि क्षमा पर्व में सुनाई देती है, इस महापर्व को 'श्वेताम्बर व दिगम्बर' विचारधारा में सीमित रखना, 'पर्युषण' पर्व की विश्वव्यापी सार्थकता के साथ न्याय नहीं होगा, वस्तुतः 'पर्युषण' सम्पूर्ण मानवजाति की आत्मशुद्धि का महायज्ञ है।

इस तरह हर साल यह महापर्व 'पर्युषण' आता है।

'एक अवसर एक अनुष्ठान' बन कर जिसमें गुजर कर, खुद की पहचान ताजा और विनम्र हो जाती है।

- संगीता बोहरा जैन
कोलकात्ता

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

समस्त जैन समाज के गुरू-भगवंत आचार्य-उपाध्याय,
आर्यिका-साध्वी, श्रावक व श्राविकाओं श्री जी के चरणों में
उत्तम क्षमा

जय कुमार नृपत्या
व सम्पूर्ण परिवार
A-602, चैतन्य टावर, प्रभादेवी, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400025
दुरध्वनिः 022-2421 0484, (का.) 022-26754331
भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

समस्त जैन समाज के गुरू-भगवंत आचार्य-उपाध्याय,
आर्यिका-साध्वी, श्रावक व श्राविकाओं श्री जी के चरणों में
मिच्छामी दुक्कड़म

Pjain
- P.K. Jain & Sons
- P.K. Jain & Co.
- Drav International

P.K. Jain (कागजी)
Mob: 9810720105
91, Rishab Vihar, Delhi, Bharat - 110 092

क्षमावणी पर्व -गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी

'दशलक्षण' पर्व का प्रारम्भ भी क्षमाधर्म से होता है और समापन भी 'क्षमाधर्म' पर्व से किया जाता है, दस दिन धर्मों की पूजा करके, जाप्य करके जो परिणाम निर्मल किये जाते है और दश धर्मों का उपदेश श्रवण कर जो आत्म शोधन होता है, उसी के फलस्वरूप सभी श्रावक-श्राविकायें किसी भी निमित्त परस्पर में होने वाली मनो-मलिनता को दूर कर आपस में क्षमा मांगते हैं, क्योंकि यह क्रोध कषाय प्रत्यक्ष में ही अग्नि के समान भयंकर हैं।

क्रोध आते ही मनुष्य का चेहरा लाल हो जाता है, होंठ काँपने लगते हैं, मुखमुद्रा विकृत और भयंकर हो जाती है, किन्तु प्रसन्नता में मुख मुद्रा सौम्य, सुन्दर दिखती है, चेहरे पर शांति दिखती है, वास्तव में शांत भाव का आश्रय लेने वाले महामुनियों को देखकर जन्मजात बैरी ऐसे क्रूर पशुगण भी क्रूरता छोड़ देते हैं। यथा-

सारंगी सिंहशावं स्पृशति सुतधिया नंदिया व्याघ्र पोतं।
मार्जारी हंसबालं प्रणयपरवशा केकिकांता भुजंगीम।।
वैराण्याजन्मजातान्यपि गलितमदा जंतवोऽन्ये त्यजंति।
श्रित्वा साम्यैकरूढं प्रशमितकलुषं योगिनं क्षीणमोहम।।

हरिणी सिंह के बच्चे को पुत्र की बुद्धि से स्पर्श करती है, गाय व्याघ्र के बच्चे को दूध पिलाती है, बिल्ली हंसों के बच्चों को प्रीति से पालन करती है एवं मयूरी सर्पों को प्यार करने लगती है, इस प्रकार से जन्मजात भी

बैर को क्रूर जंतुगण छोड़ देते हैं, कब? जबकि वे पापों को शान्त करने वाले मोहरहित और समताभाव में परिणत ऐसे योगियों का आश्रय पा लेते हैं अर्थात् ऐसे महामुनियों के प्रभाव से हिंसक पशु अपनी द्वेष भावना छोड़कर आपस में प्रीति करने लगते हैं, ऐसी शांत भावना का अभ्यास इस क्षमा के अवलंबन से ही होता है।

क्रोध कषाय को दूर कर 'क्षमाभाव' को हृदय में धारण करने के लिये तीर्थंकर पार्श्वनाथ का चरित्र, श्री संजयंत मुनि का चरित्र और तुंकारी की कथायें पढ़नी चाहिये तथा क्षमाशील साधु पुरुषों का आदर्श जीवन देखना चाहिये। आचार्य शांतिसागर जी आदि संतों ने इस युग में भी उपसर्ग करने वालों पर क्षमाभाव धारण कर प्राचीन आदर्श प्रस्तुत किया, बहुत से श्रावक भी क्षमा करके-कराके अपने में अपूर्व आनंद का अनुभव करते हैं, अतः हृदय से 'क्षमा' करना तथा दूसरों से 'क्षमा' का निवेदन करना ही 'क्षमावणी पर्व' है।

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

क्षमा पर्व देता है मधुरता का संदेश

'पर्युषण' एक आध्यात्मिक त्योहार है, इस दौरान ऐसा लगता है मानो जैसे किसी ने दस धर्मों की माला पहना दी हो, 'दसलक्षण' धर्म की संपूर्ण साधना के बिना मनुष्य को मुक्ति का मार्ग नहीं मिल पाता।

'पर्युषण' पर्व का पहला दिन ही 'उत्तम क्षमा' भाव का दिन होता है, धर्म के दस लक्षणों में 'उत्तम क्षमा' की शक्ति अतुल्य है, क्षमा भाव आत्मा का धर्म कहलाता है, यह धर्म किसी व्यक्ति विशेष का नहीं होता, बल्कि समूचे प्राणी जगत का होता है।

जैन धर्म में पर्युषण पर्व के दौरान 'दसलक्षण' धर्म का महत्व बतलाया गया है, ये दस धर्म क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिंचन और ब्रह्मचर्य बतलाए गए हैं, ये धर्म के दस लक्षण हैं, जो पर्युषण पर्व के रूप में सभी जैन समुदाय और उनके साथ-साथ संपूर्ण प्राणी-जगत को सुख-शांति का संदेश देते हैं।

जब भी कभी आप क्रोधित हों, तब आप मुस्कुराहट को अपनाकर 'क्षमा' भाव अपना सकते हैं, इससे आपके दो फायदे हो जाएंगे, एक तो आपके चेहरे पर मुस्कुराहट आ जाएगी, जिससे उसी समय आपके मन का सारा क्रोध नष्ट होकर मन में क्षमा का भाव आ जाएगा और दूसरा आपकी निश्छल मुस्कुराहट के सामने वाले व्यक्ति के क्रोध को भी समाप्त कर देगा, जिससे निश्चित ही उसका भी हृदय परिवर्तन हो जाएगा। 'क्षमा' एक ऐसा भाव है, जो हमें बैर-भाव, पाप-अभिमान से दूर रखकर 'मोक्ष' मार्ग की ओर ले जाता है।

राग-द्वेष मिटाने की सीख देता है क्षमा

सनातन, जैन, इस्लाम, सिख, ईसाई, सभी धर्म में एक ही बात बताते हैं कि एक दिन सभी को मिटना है, अत: परस्पर मिठास बनाए रखें, मिट जाना ही संसार का नियम है, तो फिर हम क्यों अपने मन में राग-द्वेष, कषाय को धारण करें, अत: हमें भी चाहिए कि हम सभी कषायों का त्याग करके अपने मन को निर्मल बनाकर सभी छोटे-बड़ों के लिए अपने मन में 'क्षमा' भाव रखें। जैन पुराण कहते हैं कि जहां 'क्षमा' होती है वहां क्रोध, मान, माया, लोभ आदि सभी कषाय अपने आप ही नष्ट हो जाते हैं।

जीवन में जब भी कोई छोटी-बड़ी परेशानी आती है, तब व्यक्ति अपने मूल स्वभाव को छोड़कर पतन के रास्ते पर चल पड़ता है, जो की सही नहीं है, हर व्यक्ति को अपना आत्मचिंतन करने के पश्चात सत्य का रास्ता ही अपनाना चाहिए, हमारी आत्मा का मूल गुण 'क्षमा' है, जिसके जीवन में 'क्षमा' आ जाती है उसका जीवन सार्थक हो जाता है।

क्षमा भाव के बारे में तीर्थंकर महावीर की वाणी

'क्षमा वीरस्य भूषणं'

अर्थात् क्षमा वीरों का आभूषण होता है, अत: आप भी इस वर्ष क्षमा पर्व पर सभी को अपने दिल से क्षमा कर मोक्ष के बताए रास्ते पर चलें।

- एस.पी. जैन
मुंबई

VALUE COUNTER MODEL - KM 9014A
UPDATES WITH NEW NOTES

FEATURES :
- Automatic start, stop and clear.
- With Batch, Add and Self-checking functions.
- UV, MG, IR and MT counterfeit detection.
- Automatic half-note, chained note detecting.
- Double-note detecting with IR.
- LCD turns red when detects fake note.

SPECIFICATIONS :
- Counting Display : 4 digits
- Batch Display : 3 digits
- Counting speed : 1000pcs/min
- Hopper Capacity : 300 notes
- Stacker Capacity : 200 notes
- Size of countable note : 50*110-90*190mm
- Power Supply : AC220V±10% 50Hz
- Power Consumption : ≤ 80W
- Size of box : 375*333*251 mm

KUSAM-MECO®
An ISO 9001:2015 Company
Shop No. 18, 1st floor, CIDCO Shopping Complex, Plot No 9, Sector-7, Rajiv Gandhi Marg, Sanpada Navimumbai-400705. INDIA. Tel.: 022-27754546, 27750662 / 0292
Email :sales@kusam-meco.co.in Web : www.kusamelectrical.com

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

सारा जमाना पदम जैन का दीवाना

हजारों परिवारों को रिश्तों में जोड़ने वाले पदमचंद जैन का हर कोई दीवाना

वैवाहिक दुनिया के बेताज बादशाह के रूप में सुप्रतिष्ठित पदमचंद जैन की आज दुनिया दीवानी है। दुनिया जिन उद्योगपतियों, फिल्मी सितारों की दीवानी है, वे सारे पदमचंद जैन के दीवाने है। और हो भी क्यों नहीं? आखिर देशभर में अब तक नामी-गिरामी परिवारों को आपस में वैवाहिक रिश्तों में जोड़ने का कीर्तिमान जो स्थापित किया है। जयपुर में एक शादी के आयोजन में जीतो के श्रेष्ठीवर्य से मुलाकात हुई। इनमें तारक मेहता का उल्टा चश्मा के फेम शैलेष लोढा, शेयर मार्केट के दिग्गज मोतीलाल ओसवाल, प्रमुख बिल्डर सुभाष रूणवाल, सेलो ग्रुप के प्रदीप राठौड, इन्स्पीरा के प्रकाश जैन, डॉ. सुरेन्द्र जैन युएसए, प्रकाश कानुगो, तेजराज गुलेच्छा, किशोर खाबिया, राकेश मेहता, शांतिलाल कवाड़, संदिप बाफना सहित अनेक दिग्गजों से मुलाकात हुई। पदमचंद जैन ने अपनी चिर परिचित शैली में सभी का आत्मीय स्वागत किया। रूणवाल परिवार में वैवाहिक आयोजन के अवसर पर परिवार को बधाई दी। पूरे भारत में ओसवाल जैन बच्चों के वैवाहिक बायोडेटा के लिए पदमचंद जैन एक जाना-माना नाम है। राजनीति, प्रशासनिक, समाजसेवी, ब्यूरोक्रेटस उद्योगपति, सहित हर क्लास परिवार के बच्चों के बायोडेटा उपलब्ध है। सच में इतनी दीवानगी देखी नहीं कहीं। हर जुबां पर पदमचंद जैन का नाम।

▪ आपके सपनों को पूरा करने वाली टीम ▪

आईजेवीओ यानी पदम परिवार की यह टीम आपके बच्चों के लिए तलाशती हैं एक-से-बढ़कर एक सुंदर रिश्तों वाला बायोडाटा

दुल्हन वही जो पिया मन भाए, बहु वही जो सास मन भाए

रिश्तों के बेताज बादशाह **पदमचंद जैन**

।। श्री पार्श्वनाथाय नमः ।।

रिश्तों का मंडप
आई जे वी ओ

विश्वस्तरीय ओसवाल-दिगम्बर जैन एवं वैश्य समुदाय के 8 हजार से अधिक वैवाहिक रिश्ते करवाने का गौरवशाली कीर्तिमान स्थापित

9314510196 / 9602623456

FCP JITO
पदमचंद जैन

प्रोफेशनल, सीए, पायलट इंजीनियर, आईएएस, आईपीएस, आरएएस, फिल्म, राजनैतिक क्षेत्र के अलावा हर वर्ग और क्षेत्र में कार्यरत युवा-युवतियों के लिए जांचे परखे वैवाहिक रिश्तों का खजाना
1 जून से 2000 से सतत आपकी सेवा में तत्पर

IJVO **जैन - वैश्य वैवाहिक रिश्तों का आखिरी पड़ाव**

एक छत के नीचे उपलब्ध सेवाएं
वैवाहिक-रोजगार, छात्रवृत्ति, विधवा पेंशन, मेडिकल हेल्प, प्रशासनिक एवं कानूनी सलाह, धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में सदैव अग्रणी सहयोगी

इंटरनेशनल जैन एवं वैश्य ऑर्गनाइजेशन
1662-बी, ए.पी. अपार्टमेंट, मोतीडूंगरी रोड, जयपुर-04
फोन : 0141-2602626

अपनों से हो अपनों का रिश्ता

इस केन्द्र की स्थापना से लेकर अब तक लगभग 50 हजार से अधिक वैवाहिक रिश्तों के बायोडेटा आ चुके हैं और निरंतर वृद्धि हो रही है। इस केन्द्र के कम्प्यूटर फीड बायोडेटा में बड़ी आसानी से मनवांछित रिश्ते के लिए बायोडेटा पलक झपकते ही उपलब्ध हो जाते हैं। देश में आज इतना बड़ा नेटवर्क कहीं देखने को नहीं मिलता जहां सभी बायोडेटा वेरीफाईड हो अर्थात प्रत्येक बायोडेटा की पूर्ण सूक्ष्मता से जांच की जाती है, उसके बाद ही बायोडेटा प्रोसेस में अग्रेषित होते हैं। इस केन्द्र में देश-विदेश के जैन-वैश्य समुदाय के हर क्षेत्र के युवक-युवतियों के वैवाहिक बायोडेटा उपलब्ध हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवा हो, सी.ए. हो, आई पीएस हो या राजनीति, समाजसेवा के क्षेत्र से हो, देश का ख्यातनाम औद्योगिक घराना हो या फिर मीडिया हो या फिल्मी क्षेत्र हर क्षेत्र के युवक-युवतियों के बायोडेटा का नायाब खजाना है। संकोच नहीं, सम्पर्क करें : पदमचंद जैन -

सेवा के सरोकार
छात्रवृत्ति
मेडिकल शिक्षा
रोजगार
विधवा पेंशन
उक्त आवेदकों की जानकारी पूरी तरह से गोपनीय रखी जाती है।

अशोक सिरोया (अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष) | चंद्रराज सिंघवी (राष्ट्रीय अध्यक्ष) | डॉ. प्रकाश गोलेछा (योजना मंत्री) | नरेन्द्र कुमार जैन (राष्ट्रीय अध्यक्ष, यू.सि) | वसंत जैन (राष्ट्रीय संगठन मंत्री) | संजय जैन (कोर्डिनेटर) | सुरेन्द्र कुमार जैन (राष्ट्रीय प्रचार मंत्री)

सेवा के पथ पर अग्रसर टीम आईजेवीओ

1662-बी, ए.पी. अपार्टमेंट, वैभव लॉन के पास, हनुमान मंदिर के सामने, मोतीडूंगरी रोड, जयपुर-04
फोन : 0141-2602626 / 4010196 email: neerapadamjain@gmail.com

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

धन दौलत से मिली पहचान कम समय तक टिकती है और मानवीय कार्य कर्तव्यों और परोपकार से मिली पहचान, जीवन के आगे भी साथ रहती है

- अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज

दिल्ली: जो मनुष्य अपने जीवन को मानवीय कर्तव्यों में व्यतीत करते हैं, वही नेक इन्सान कहलाते हैं। आज ज्यादातर लोग भौतिक सुख-सुविधाओं को पाने में या एकत्रित करने में अपने जीवन को व्यतीत कर देते हैं, लेकिन जब वह इस दुनिया से जाते हैं, तो वह अपने साथ कुछ भी लेकर नहीं जा पाते हैं, उनकी सारी धन-दौलत की कमाई यहीं रह जाती है, यदि मनुष्य अपने साथ कुछ लेकर जाता है, तो वह है उसके अच्छे कर्म और लोगों की सदभावनायें।

मनुष्य जीवन का एक ही कर्म और धर्म हो मानवीय सेवा, सत्कर्म और परोपकार। मनुष्य इस दुनिया में सम्राट बनकर आया है, लेकिन दुर्भाग्य कहो इस सदी का, सम्राट बनकर जन्म लेने वाला इन्सान भिखारियों की तरह जिन्दगी जीता है, जीवन भर भीख मांगता है और भिखारी की तरह मर जाता है। अरे बाबू! तुम सम्राट बनकर आये हो, तो सम्राट बनकर जियो और सम्राट बनकर मरो। आज हम अपने मानवीय कर्तव्यों को भूल कर धर्म, जाति, पंथ, सम्प्रदाय, गरीब, अमीर, ऊंच-नीच, छोटे-बड़े के वाद विवाद में उलझ कर अच्छे खासे मानव जीवन को बरबाद कर रहे हैं।

धर्म, पंथ, सम्प्रदाय, मन्दिर के अन्दर तक सीमित होना चाहिए, मन्दिर की दीवार से बाहर निकलें तो सिर्फ हम इन्सान बनकर इन्सानियत का जीवन जीयें, क्योंकि धर्म एक पवित्र अनुष्ठान है, जिससे चेतना का शुद्धिकरण होता है। धर्म मनुष्य जीवन में मानवीय गुणों के लिए अमृत और अमरता का श्रोत है, जिसके आचरण से वह अपने मानवीय जीवन को चरितार्थ करता है। अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज एवं उपाध्याय पियूष सागरजी महाराज ससंघ तरुणसागरम तीर्थ पर वर्षायोग हेतु विराजमान हैं, उनके सानिध्य में विविध धार्मिक कार्यक्रम के आयोजन हो रहें हैं, इसी श्रृंखला में उपस्थित गुरु भक्तों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा।

-नरेंद्र अजमेरा, पियुष कासलीवाल औरंगाबाद
मो. ९८६०६६८१६८

साहित्य परमात्मा का साक्षात दूसरा व दिव्यज्ञान का तीसरा नेत्र- राष्ट्रसंत कमलमुनि

चेन्नई: साहुकारपेट जैन भवन में चातुर्मासार्थ विराजित राष्ट्रसंत कमलमुनि 'कमलेश' ने कहा महापुरुषों से बढकर भी महान है, उनके विचारों का साहित्य, जो हजारों साल तक भटकती मानवता को मार्ग बताता रहेगा। साहित्य परमात्मा का साक्षात दूसरा व दिव्यज्ञान का तीसरा नेत्र है। महापुरुषों को हजारों साल तक अमर बनाने वाला, उनके पावन विचारों का साहित्य है, जो जीवन निर्माण में ऑक्सीजन से महत्वपूर्ण है। आत्मा का उद्धार करने में मील का पत्थर साबित होता है। मुनिश्री ने कहा अश्लीलता परोसने वाला प्रतिबंधित साहित्य शासन-प्रशासन की मिलीभगत से नाक के नीचे धड़ल्ले से बिक रहा है। जंगल राज छाया हुआ है, मानो कानून नाम की कोई वस्तु नहीं है। प्रदूषण मानसिकता को जन्म देने वाला खराब साहित्य जहर से भी खतरनाक है, साहित्य हमारी अनमोल धरोहर है, प्रतिदिन स्वाध्याय करने से आत्मा में निर्मलता, विचारों में पवित्रता और आचरण में ऊंचाई आती है। जैन संत ने कहा संस्कारयुक्त साहित्य ही अमृत के समान है। पुराना साहित्य पढने पर इतिहास का ज्ञान होता है, अनुभव बढ़ता है जो हमारे लिए शिल्पकार का काम करता है।

साहित्यकार डॉ दिलीप धींग ने कहा कि साहित्य दर्पण व जीवन का सच्चा साथी है जो आत्मा का श्रृंगार करने में काम आता है, उन्होंने मुनि श्री को शोधग्रंथ, निबंध संग्रह संस्थान व कहानियों की १० पुस्तकें भेंट की। अभा. जैन दिवाकर विचार मंच नई दिल्ली-मध्य प्रदेश शाखा एवं चेयरमैन सुरेश लुणावत, अध्यक्ष प्रकाश खिंवेसरा, सज्जन सुराणा, जितेंद्र भंडारी ने डॉ. धींग का अभिनंदन किया, डॉ. संजय पींचा ने मंच का संचालन किया।

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

समस्त जैन समाज के गुरू-भगवंत आचार्य-उपाध्याय,
आर्यिका-साध्वी, श्रावक व श्राविकाओं श्री जी के चरणों में मिच्छामी दुक्कड़म

MAHAAVIR™
Perfection. Since Inception

President: Shree Jin Kushal
Shri Sevashram Trust,
Barker (kushal vatika)

Bhanwarlal Chhajer
Chairman
Mob.:- 9967022183

FCP, JITO
Trustee-JATF
Trustee- Sharman Arogyam

Mahaavir Universal Homes Pvt. Ltd.

302-306, Persipolis, Plot-74, Sector-17, Vashi,
Navi Mumbai, Maharashtra, Bharat-400703

blchhajer@mahaavir.info
mahaavir.com

समस्त जैन समाज के गुरू-भगवंत आचार्य-उपाध्याय,
आर्यिका-साध्वी, श्रावक व श्राविकाओं श्री जी के चरणों में

मिच्छामी दुक्कड़म

Raj kr. Parakh
Mob: 9331814232

Compressor Spares House

Dealers in: Air and Gas compressor spare parts & service,
We are specialist Car Washers & Grease Pump Spares,
Authorised Distributor of MANN HUMMEL FILTERS
Deal in: Lubricant Oil
Authorised Distributor of AIROCOMP FILTERS & KITS

20A, Brabourne Road, Kolkata, West Bengal, Bharat- 700 001
E-mail: compsparehouse@gmail.com Website: www.cshouse.co.in

समस्त जैन समाज के गुरू-भगवंत आचार्य-उपाध्याय,
आर्यिका-साध्वी, श्रावक व श्राविकाओं श्री जी के चरणों में

उत्तम क्षमा

Yogendra Kumar Gangwal
Mob: 9825041060

Sky Oxygen Co.Ltd.

203, Bell-Evista Complex, Opp. Central Excise & Custom Building,
Race Course Circle, Baroda, Gujarat, Bharat- 390021
Off.: 0265- 2313 803/ 2320316

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए, INDIA नहीं एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

युवा समाजसेवी, गौ सेवक कार्य सम्राट बैंगलुरू निवासी महेंद्र मुणोत के कार्यों की झलकियां

श्री मातेश्वरी भक्त मंडल ट्रस्ट, बेंगलूरु द्वारा श्री कृष्णा गौ सेवा आश्रम गौशाला कन्नूर में गौशाला के प्रमुख संत पुखराज महाराज के सान्निध्य में गुरु पूर्णिमा महोत्सव का आयोजन किया गया. पूर्व विधायक अरविंद लिंबावली, मंजुला लिंबावली, युवा समाजसेवी महेन्द्र जी मुणोत मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। गायक कलाकार महावीर सांखला, राजू कुमावत, कैलाश पंवार ने भजनों की प्रस्तुति से समा बांध दिया। संत पुखराज ने अपने प्रवचन में भक्तों को गौ सेवा से जुड़ने का आह्वान किया। श्री मुणोत ने अपने वक्तव्य में कहा, 'गुरु ने हमें ज्ञान एवं संस्कारों से पोषित किया है, गुरु पूर्णिमा के पावन प्रसंग पर हम सच्चे मन से गुरु को नमन करते हुए मन में यह संकल्प करें कि हम उनके बताए रास्ते पर चलेंगे' कार्यक्रम का संचालन मोहन सीरवी ने किया।

अखिल कर्नाटक पूर्व सैनिक संघ द्वारा कारगिल विजय दिवस के उपलक्ष में बाल गंगाधरनाथ स्वामी खेल मैदान से क्षेत्र के विधायक प्रिया कृष्ण के नेतृत्व में विशाल रैली का आयोजन किया गया, जिसमें बाइक सवार जवानों ने हैरत अंगेज प्रदर्शन कर सबको अचरज में डाल दिया। सैकड़ों पूर्व सैनिक एवं एनसीसी कैडेट् राष्ट्रध्वज लेकर चल रहे थे और भारत माता के जयकारे लगा रहे थे। चंद्रा लेआउट स्थित सैनिक भवन में कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न क्षेत्रों में सेवा देने वाले साधकों को मुख्य अतिथि महेंद्र जी मुणोत एवं संघ के अध्यक्ष शिवण्णा ने पुरस्कृत किया।

श्री जलाधिगेरे चिक्कम्मा दोड्डम्मा ट्रस्ट कुरुबरहल्ली द्वारा आयोजित पांच दिवसीय जात्रा एवं करगा महोत्सव के अर्न्तगत अन्नदान कार्यक्रम में सेवा देते हुए युवा समाज सेवी मुख्य अतिथि महेन्द्रजी मुणोत।

कर्नाटक मक्कळ साहित्य परिषद द्वारा बसवनगुड़ी स्थित सरकारी पि.यु. महाविद्यालय में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में मेधावी विद्यार्थियों को पुरस्कृत करते हुए मुख्य अतिथि महेंद्र जी मुणोत एवं परिषद के पदाधिकारीगण।

मार्ग ज्योति नेत्रहीन वाद्य गोष्टी द्वारा लग्गेरी स्थित कल्याण मंटप में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि महेंद्र मुणोत ने जरूरतमंदों में कंबल वितरित करते हुए अपने वक्तव्य में कहा 'सेवा मनुष्य का स्वभाव है जो स्वयं के लिए जीवित है, उनका जीवन व्यर्थ है, सच्चा जीवन तो वो जीते हैं जो अपनी शक्ति का सदुपयोग जरूरतमंदों के लिए करते हैं'। संस्था की अध्यक्ष सिद्ध गंगाम्मा ने श्री मुणोत को सम्मानित किया।

गौ रक्षा आपातकालीन सेवा समिति चण्डावल नगर द्वारा बीमार एवं दुर्घटनाग्रस्त बेसहारा गोवंश उपचार हेतु चिकित्सालय निर्माण के लिए बेंगलुरु के पैलेस मैदान प्रिंसेज ग्रीन में 'एक शाम गौ माता के नाम' विशाल भजन संध्या का आयोजन किया गया। राजस्थान के प्रसिद्ध भजन कलाकार ओम मुंडेल, महावीर सांखला, राजू सियोल, बिंदास काकू ने अपनी प्रस्तुति से उपस्थित जनों का मनमोह लिया।

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

देश भर में विराजमान परम पूज्य आचार्यों, मुनिराजों, आर्यिका माताओं के चरणों में नमोस्तु, वंदामि, इच्छामि

मिच्छामी दुक्कड़म

Sanjay Dangi

Authum Investment and Infrastructure Limited

707, Raheja Centre, Free Press Journal Road, Nariman Point,
Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400021
Ph.: (022) 35347700 | Mob.: 9820000960 | Email: sanjay@authum.com

जैनाचार्य रत्नसुंदर सुरीश्वर महाराज से मिले महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री फडणवीस
जुहू जैन संघ ने किया स्वागत, दोनों में धर्म, समाज और मानव जीवन पर हुई चर्चा

मुंबई: महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने जैन आचार्य रत्नसुंदर सुरीश्वर महाराज के दर्शन किए, उनसे धर्म चर्चा की एवं आशीर्वाद लिया। जुहू में चातुर्मास तपस्या पर बिराजमान आचार्य रत्नसुंदर जी से इस मुलाकात के दौरान मुख्यमंत्री ने महाराष्ट्र की प्रगति एवं सामाजिक सद्भाव पर भी चर्चा की। बता दें कि मुख्यमंत्री फडणवीस धर्म गुरुओं एवं धार्मिक नेताओं से मिलते रहते हैं। 'जीतो' के विभिन्न आयोजनों सहित सामाजिक कार्यक्रमों में भी मुख्यमंत्री फडणवीस और उनकी धर्मपत्नी अमृता फडणवीस की उपस्थिति रहती है। आचार्य रत्नसुंदर जी से मुलाकात भी फडणवीस की धार्मिक श्रद्धा का ही एक हिस्सा है। मुख्यमंत्री का जुहू जैन संघ में महाराज जी से मिलने आना, स्थानीय जैन समाज के लोगों के लिए भी हर्ष का विषय रहा। जुहू जैन संघ की ओर से इस अवसर पर मुख्यमंत्री

फडणवीस का स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। मुख्यमंत्री फडणवीस का प्रकाश बी जैन, मनोज मेहता, राकेश शाह, हसमुख शेठ, जयू भाई आदि ने अभिनंदन किया एवं स्मृति चिन्ह भेंट किया।

स्वयं से प्यार करने वाला कभी गलत कार्य नहीं कर सकता

चेन्नई: साध्वी सुमतिप्रभा के सामायिक स्वाध्याय भवन किलपाक चातुर्मास के अंतर्गत साध्वी वर्षा जी म.सा. ने धर्म बोध क्लास में 'स्वयं को जाने' विषय के माध्यम से कहा की जो स्वयं के साथ प्यार करता है, वह कभी गलत कार्य नहीं कर सकता, उसकी नजर में हर वस्तु की कीमत होती है। शरीर, आंगन और घर को कितना भी साफ कर लो लेकिन मन के दर्पण को साफ नहीं करेंगे तो चारों और कचरा व अंधेरा ही रहेगा। हमें सीसीटीवी कैमरे जैसे बन जाना है, जो सिर्फ देखता है, ऐसे ही जीव खुशी और शांति को प्राप्त करते हैं। मोह आदि ८ कर्मों से मुक्त वही होता है जो बाहर से नहीं जुड़ता, जो बाहर से जुड़ता है वह कभी सिद्धों से नहीं जुड़ पाता, जब तक हमको पूरी जानकारी नहीं हो, तब तक दूसरों के लिए निर्णय मत करो, जिसने अपनी नजर को बदल लिया, उसका जीवन बदल जाता है। यह जानकारी श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ तमिलनाडु भोजन शाला के संयोजक राजेन्द्र बाघमार ने 'जिनागम' को दी है।

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

तप-क्रोध, लोभ, मोह पर नियंत्रण की साधना है

-वाचनाचार्य उपाध्याय डॉ. विशाल मुनि

दिल्ली: वाचनाचार्य उपाध्याय डॉ. विशाल मुनि म.सा. जी ठाणे-७, अपने चार्तुमास काल में जैन स्थानक राणा प्रताप बाग, दिल्ली में विराजमान हैं, दैनिक प्रवचन में म. सा. ने कहा कि तप, त्याग और अहिंसा के माध्यम से ही समाज में सच्ची शांति की स्थापना संभव है, उन्होंने यह स्पष्ट किया की तप अर्थात् आत्मसंयम और आत्मनियंत्रण न केवल व्यक्ति को आध्यात्मिक उन्नति की ओर ले जाता है, बल्कि उसे अपने भीतर की नकारात्मक प्रवृत्तियों जैसे क्रोध, लोभ और मोह पर नियंत्रण पाने में भी सहायक होता है।

'त्याग' का अर्थ केवल भौतिक वस्तुओं का परित्याग नहीं है, बल्कि यह अपने स्वार्थ, अहंकार और निजी लाभ की भावना को त्यागने की प्रेरणा देता है, जब व्यक्ति त्याग की भावना से कार्य करता है, तो वह समाज में परोपकार, सहयोग और सहिष्णुता की भावना को बढ़ावा देता है।

अहिंसा! जो जैन दर्शन का मूल आधार है, केवल शारीरिक हिंसा से दूर रहना नहीं है, बल्कि वाणी और मन से भी किसी को कष्ट न पहुंचाना ही सच्ची अहिंसा है, जब व्यक्ति अपने विचारों, शब्दों और कर्मों में अहिंसक होता है, तब समाज में द्वेष, बैर और संघर्ष की संभावना स्वतः समाप्त हो जाती है। उपप्रवर्तक अभिषेक मुनि जी ने समझाया कि जब व्यक्ति अपने जीवन में इन तीनों मूल्यों तप, त्याग और अहिंसा को अपनाता है, तभी वह आत्मिक शांति प्राप्त करता है, समाज में भी स्थायी शांति और सद्भाव की स्थापना करता है, ऐसे समाज में न कोई हिंसा होती है, न ही शोषण, और न ही वैमनस्य, केवल प्रेम, करुणा और एकता का वातावरण होता है। नवकार साधक श्री विचक्षण मुनि जी म.सा. जी ने भी प्रवचन में अपने विचार व्यक्त किए।

- सुभाष ओसवाल जैन
पूर्व राष्ट्रीय चेयरमैन
श्री अखिल भारतवर्षीय स्थानकवासी जैन कांफ्रेंस,
नई दिल्ली

कर्म मल को दूर करने का अमोघ साधन है तपस्या- साध्वी मंजुयशा

बीदासर: आचार्य श्री महाश्रमण की सुशिष्या बीदासर समाधि केन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी श्री मंजुयशा जी के पावन सान्निध्य में 'सांडवा' के श्रावक सुरेन्द्र भंसाली की सुपुत्री सुश्री जया भंसाली ने आठ दिन की निराहार तपस्या की इस उपलक्ष्य में 'तेरापंथ सभा' बीदासर की ओर से 'तप अभिनंदन' का कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम में तपस्विनी बहन के साथ परिवार एवं सांडवा के ४० भाई-बहनों का समूह पहुंचा।

कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वी श्री ने नमस्कार महामंत्र के मंगल उच्चारण से किया तेरापंथ सभा की ओर से रवि सेखानी ने तपस्वीनी बहन का हार्दिक अभिनंदन किया। साध्वी श्री जी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा आज सुश्री जया भंसाली के आठ दिन की तपस्या है, छोटी अवस्था होने पर भी इसने अपने आत्मबल को जागृत कर अठाई तप किया। व्यक्ति के लिए एक उपवास करना भी कठिन हो जाता है, दिन में भी तारे दिखने लग जाते हैं पर जिसका संकल्प मजबूत होता है मनोबल दृढ़ होता है, वही तप की गंगा में स्नान करके अपनी चेतना को पवित्र और उज्ज्वल बनाता है, तपस्या साधना है जिससे आत्मा के चिपके हुए कर्म मल को धोया जा सकता है, तपस्वी के आगे देवता भी नमन हो जाते हैं। साध्वी श्री जी ने तपस्या का महत्व बताते हुए कई तपस्वी साधु संतों के उदाहरण देकर सबको तपस्या की प्रेरणा दी।

साध्वी श्री स्तुतिप्रभाजी, साध्वी इंदुप्रभाजी, साध्वी मानसप्रभा जी, तेरापंथ महिला मण्डल की मंत्री श्रीमती सीमा दुगड़, तेयुप अध्यक्ष पारसमल वैद, नवदीप बैंगानी, अणुव्रत समिति बीदासर के पूर्व अध्यक्ष महावीर वेद, तेरापंथ महिला मंडल की बहनें, लाडनूं से समागत महावीर जी वेद आदि कई भाई-बहनों ने गीत, कविता, भाषण के द्वारा तपस्वीनि बहन के तप की हार्दिक अनुमोदना की। तेरापंथ सभा की ओर बहन जया भंसाली को अभिनंदन पत्र एवं साहित्य भेंट किया गया। संचालन साध्वी चिन्मयप्रभाजी ने किया। मंगल पाठ से कार्यकम सानंद संपन्न हुआ।

श्री देवानंद जैन शिक्षण संस्थान के अध्यक्ष पद पर

अमरचंद बाफना अर्जुन्दा एवं सचिव पद पर भागचंद गिड़िया निर्वाचित

राजनांदगांव: शहर की सबसे पुरानी शैक्षणिक संस्था श्री देव आनंद जैन शिक्षण संस्था के चुनाव में अमरचंद बाफना अध्यक्ष के रूप में एवं भागचंद गीड़िया सचिव के रूप में ऐतिहासिक मतों से विजयी घोषित हुए।

अमरचंद बाफना एवं भागचंद गीड़िया के ऐतिहासिक जीत से उत्साहित होकर श्री देवानंद जैन शिक्षण संस्था के प्रमुख ट्रस्टी एवं सदस्यगण के साथ पूर्व सांसद अभिषेक सिंह ने भागचंद गीड़िया को बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

आत्मा को पूनित करने वाले माहामंगलकारी पर्यूषण महापर्व पर सभी जैनाचार्यों, साधु-साध्वीजी, महाराज साहेब श्रावक-श्राविकाओं से

उत्तम क्षमा

Ashok Jain *Managing Director*
Mob: 9431144343

THE JAI MICA SUPPLY CO. (P) LTD.

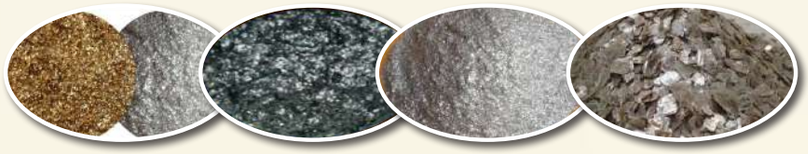

Regd. Off.: 62, Bentinck Street Kolkata, West Bengal, Bharat-700069 | Tel: 033 22377295
Factory: Distillery Road, Giridih, Jharkhand, Bharat-815301
TEL: 06532 222546 / 222789 | E-mail: sales@jaimica.net | www.jaimica.net

आत्मा को पूनित करने वाले माहामंगलकारी पर्यूषण महापर्व पर सभी जैनाचार्यों, साधु-साध्वीजी, महाराज साहेब श्रावक-श्राविकाओं से

उत्तम क्षमा

श्री महावीराय नमः श्री
कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः
जये गुरु हीरा जय गुरु महेन्द्र जय गुरु मान

तपस्वी श्री अभिषेक बाघमार

सुख और दुःख का उद्भव अपने ही पुण्य और पाप से होता है।
अपने पुण्य-पाप के अभाव में कोई किसी को सुखी या दुःखी नहीं बना सकता।
(युवारत्न तपस्वी श्री अभिषेकजी बाघमार की पाचवीं पुण्य स्मृति में)

Sohanlal, Budhmal, Sampathraj, Rajan Baghmar

Bagmar Motor Finance

218-Ashoka Road, Mysore, Karnataka- 570001
Contact No.: +91-98451-26407

चातुर्मास पावन पर्व पर सभी साधु-साध्वियों के पावन चरणों में कोटि-कोटि वंदन

मिच्छामी दुक्कड़म

KALPATARU GROUP

Real Estate, Petrol Pump, Gems,
Finance, Ferro Alloy, Warehousing

R. Padamchand Jain
Chairman
Mobile: 9444077990

Reg off: 6, Chandrappa Mudali Street, Sowcarpet,
Chennai, Tamil Nadu, Bharat- 600079
Office No: 44-25291741/44-26412632 E-mail: kalpatarugroup@gmail.com

Corp Off: 12/11 "Kalpataru House" Bank Street,
Kilpauk, Chennai, Tamil Nadu, Bharat

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए, INDIA नहीं एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

हर नारी में संयम-संवेदना-संकल्प होना चाहिए

- श्रमणसंघीय युवाचार्य श्री महेन्द्र ऋषि जी म.सा.

पनवेल/मुंबई: श्रमणसंघीय युवाचार्य पूज्य श्री महेन्द्र ऋषिजी म.सा. के पावन सान्निध्य में राष्ट्रीय महिला अधिवेशन का भव्य आयोजन संपन्न हुआ। अधिवेशन की संकल्पना पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षा रूचिराताई सुराणा द्वारा की गई तथा आयोजन पंचम झोन की अध्यक्षा कल्पना कर्नावट एवं पनवेल महिला मंडल की स्मिता बांठिया द्वारा किया गया।

राजकीय जगत से विधायक प्रशांत ठाकूर, विक्रांत पाटील, प्रीतम म्हात्रे आदि ने अपने परिवार के साथ अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराई। हज़ारों बहनों की उपस्थिती से जनमानस ने इस अधिवेशन को नारी चेतना के नवजागरण का सजीव साक्षात्कार बना दिया। धर्म, परिवार, करियर को केंद्र में रखते हुए स्त्री-जीवन की सन्तुलन पर गहन विचार विमर्श हुआ। आध्यात्मिक विकास से लेकर सामाजिक नेतृत्व तक, आत्मनिर्भरता से लेकर सांस्कृतिक संवर्धन तक अनेक विषयों पर विचारों का आदान-प्रदान हुआ।

युवाचार्य भगवंत श्री महेन्द्र ऋषिजी ने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में कहा कि जिस नारी में संयम हो, संवेदना हो और संकल्प हो, वही सच्चे अर्थों में समाज की निर्माता होती है।

कार्यक्रम में तीन चरणों में प्रथम चरण में स्वागत एवं गुरु प्रवचन, द्वितीय चरण में उदघाटन, प्रस्तावना, आज की समस्या तथा जीवन शैली से अवगत कराया गया, अंतिम चरण में गुरुदेव की उपस्थिति में समाज के सूत्रधार बहनों द्वारा, उपस्थित महिलाओं के रियल टाइम समस्या का नि-राकरण किया गया। युवाचार्य श्री द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त कर स्वयं, परिवार, धर्म और करियर संतुलन बनाने का संकल्प लिया गया।

कार्यक्रम में पनवेल संघ अध्यक्ष राजेश जी को आनंद-महेन्द्र श्रमण रत्न सम्मान से सम्मानित किया गया, साथ ही देशना दुग्गड को आनंद-महेन्द्र

कन्या रत्न, संतोष जैन को आनंद-महेन्द्र नारी रत्न, रिचा जैन को आनंद-महेन्द्र आयर्न लेडी सम्मान से सम्मानित किया।

उपस्थित जनमानस ने एक नयी ऊर्जा के साथ कार्यक्रम की मार्गदर्शक रुचिरा सुराणा को महिला प्रेरणा रत्न सम्मान से सम्मानित किया।

कार्यक्रम के प्रायोजक कल्पना कर्णावट, स्मिता बाठिया, रुचिरा सुराणा, अंधेरी मित्र मंडल, प्रतिभा डांगी, शर्मिला बाफना, ममता जैन, ज्योती गादिया थे।

कार्यक्रम की सफलता के लिए महामंत्री सुनीता चोरडिया, आशा खिवंसरा ज्योति बाठिया, नितल फूलफगर, सुरेखा कटारिया, सुनीता बोरा, सुवर्णा नाहर, अंजली बाठिया, अपर्णा कटारीया, सुनिता बोहरा, उज्ज्वला जैन, कोमल बाठीया आदी पूरी कार्यकारिणी के बहनों ने विशेष परिश्रम किये। कार्यक्रम का सूत्र संचलन वैशाली कटारिया, हिमांशी जैन, प्रतिभा डांगी, डॉ श्वेता राठोड ने किया। आभार प्रदर्शन महामंत्री सुनीता चोरडिया और मंत्री सुनीता बोहरा ने किया।

- रूचिरा सुराणा, अंधेरी

तीर्थंकर पार्श्वनाथ जी का निर्वाणोत्सव धूमधाम से मनाया गया

डिब्रूगढ़: अपर असम के डिब्रूगढ़ में स्थित स्थानीय ग्राहम बाजार में श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में श्रावण शुक्ला सप्तमी यानी ३१ जुलाई को श्री दिगम्बर जैन मंदिर पंचायत ग्राहम बाजार के तत्वावधान में तीर्थंकर पार्श्वनाथ जी का निर्वाण कल्याणक महोत्सव परंपरागत ढंग से तथा हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। ज्ञातव्य हो कि तीर्थंकर पार्श्वनाथ जी ने अपने जीवन में सदैव प्रेम और क्षमा को ही गले लगाया, तभी वह मोक्ष को उपलब्ध हो सके। तीर्थंकर पार्श्वनाथ जी ने संघर्ष में भी हर्ष को जीया है, गम में भी खुशी को प्रकट किया हैं। कष्ट में भी आनन्द को स्वीकारा है। दुःख में भी सुख की खोज की है। बैर में भी क्षमा और प्रेम को जीवन का आदर्श बनाया है, इसी कारण पार्श्वनाथ जी का जीवन स्वर्ण की तरह निखरता चला गया और केवल ज्ञान व निर्वाण की उपलब्धि प्राप्त कर ली। जैन-धर्म में तीर्थंकर पार्श्वनाथ जी को उपसर्ग विजेता के नाम से जाना जाता है, इसलिये भारतवर्ष में सबसे अधिक प्रतिमा पार्श्वनाथ जी की ही है। पार्श्वनाथ जी का निर्वाण मोक्ष सप्तमी या मुकुट सप्तमी के दिन हुआ था।

श्री पार्श्व मोक्ष सप्तमी के पावन पर्व के अवसर पर स्थानीय श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में प्रातः स्मरणीय पार्श्वनाथ जी की मनोज्ञ प्रतिमा का अभिषेक व शांतिधारा करतल ध्वनियों के बीच सौल्लासपूर्वक संपन्न हुआ। पूजन के दौरान निर्वाण-कांड बोला गया तथा जैन श्रावकों द्वारा निर्वाण लाडू के ऊपर दीप रखकर पार्श्वनाथ जी की पावन स्मृति में प्रज्जवलित किया गया, उक्त पूजन में डिब्रूगढ़ जैन महिलाओं का विशेष योगदान रहा, इस अवसर पर जैन धार्मिक महिलाएं एवं कुंवारियां व्रत, उपवास आदि करके अपनी आत्म शुद्धि की तथा धर्म की प्रभावना बढ़ाने में योगदान दिया।

समाज के अध्यक्ष डॉ. महेश कुमार झांझरी एवं मंत्री अनिल बगडा ने समस्त पूर्वांचल जैन समाज को श्री पार्श्व निवार्णोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित की।

- जिनागम प्रतिनिधि
मोती लाल जैन 'प्रभाकर',
डिब्रूगढ़, आसाम

आत्मा को पूनित करने वाले माहामंगलकारी पर्यूषण महापर्व पर सभी जैनाचार्यों, साधु-साध्वीजी, महाराज साहेब श्रावक-श्राविकाओं से

उत्तम क्षमा

Gajraj Jain Gangwal

Mob. : 9810900009

Chandra Prabhu INTERNATIONAL LIMITED

Reg. Off. :- 522, 5th Floor,, DLF Gallaria Commercial Complex, DLF City, Phase IV, Gurgoan, Haryana, Bharat- 122009
Email: imfo@cpil.com Web: www.southwestpinnacle.com

समस्त जैन समाज के गुरू-भगवंत आचार्य-उपाध्याय, आर्यिका-साध्वी श्री जी के चरणों में 'मिच्छामी दुक्कड़म'

श्री गौतमस्वामी केवलज्ञान भूमि
श्री गुणायाजी तीर्थ में

।।श्री महावीरस्वामिने नमः।।
।।अनन्तलब्धिनिधानाय श्री गौतमस्वामिने नमः।।

जीर्णोद्धारशील जिनप्रासाद एवं तीर्थ संकुल निर्माण में तन-मन-धन से ही नहीं अपितु रोम-रोम से जुड़कर ऋद्धि-सिद्धिकारी गुरु गौतम स्वामी की कृपा प्राप्त करें

आशीर्वाद
समस्त गच्छों व समुदाय के गच्छाधिपति एवं आचार्य भगवंत

जीर्णोद्धार प्रेरक
पू. गुरुदेव, अवंति तीर्थोद्धारक, युग दिवाकर, गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

यदि कोई जैन भाई नौकरी चाहता है तो उसे उचित मानधन, रहने की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।
शिघ्रतिशिघ्रा संपर्क करें:
9831163019

तीर्थ स्तंभ 5,04,000 परिवार के पांच नाम, गोत्र एवं गांव का नाम उचित स्थान पर अंकित किया जायेगा।

आधार स्तभ 2,07,000 परिवार के तीन नाम, गोत्र एवं गांव का नाम उचित स्थान पर अंकित किया जायेगा।

स्वर्ण स्तंभ 1,08,000 परिवार के दो नाम, गोत्र एवं गांव का नाम उचित स्थान पर अंकित किया जायेगा।

निवेदक
श्री जैन श्वेताम्बर भंडार तीर्थ पावापुरी
श्री गौतम स्वामी गुणायाजी तीर्थ जीर्णोद्धार समिति

सम्पर्क सूत्र

अध्यक्ष	संयोजक		निर्माण संयोजक
सुरेन्द्रसिंहजी पारसान, कोलकाता	संघवी तेजराजजी गुलेच्छा, बैंगलोर	संघवी रमेशजी मुथा, चेन्नई	महावीरजी मेहता, बैंगलोर
9831163019	9902587422	9884962239	9686764061

प्रभु महावीर के 2550वें निर्वाणोत्सव व गुरु गौतम स्वामी के 2550वें केवलज्ञानोत्सव वर्ष में अवश्य ही अपनी लक्ष्मी का सदुपयोग करें..

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

तेरापंथी सभा मुंबई श्रावक समाज की विशिष्ट सभा है- मुनि कुलदीप कुमार

मुंबई: कांदिवली में तेरापंथ सभा मुंबई का वार्षिक अधिवेशन मुनि कुलदीप कुमार के सानिध्य में आयोजित हुआ। मुनि मुकुल कुमार ने कहा कि यह मुंबई श्रावक समाज की विशिष्ट सभा है। अध्यक्ष माणक धींग, मंत्री दिनेश सुतरिया के साथ पूरी टीम जागरूकता के साथ सेवा कार्य में संलग्न है, कार्यक्रम का संचालन करते हुए सभा मंत्री दिनेश सुतरिया ने पिछली विशेष साधारण सभा की कार्यवाही का वाचन किया, उसे सदन ने पारित किया, श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन पूर्व अध्यक्ष मदनलाल तातेड़ ने किया।

सभाध्यक्ष माणक धींग ने अध्यक्षीय सम्बोधन में मुंबई सभा की गतिविधियों में ज्ञानशाला, उपासक, रास्ते की सेवा, साधु संतों की चिकित्सा सेवा, श्रावक समाज के लिए मेडिकल सहायता, समाज के विद्यार्थियों को शिक्षा सहायता एवं लोन, सदस्यता अभियान, मेडिकल चेकअप की सुविधा, मुंबई क्षेत्रीय तेरापंथ भवन निर्माण परियोजना, विशेष सहयोगी एवं सहयोगी के रूप में अर्थ संकलन, गुरु दर्शन यात्रा आदि विषयों पर जानकारी दी तथा नये भवन एवं नये कार्यालय के लिए अब तक हुए प्रयासों का विवेचन किया। अध्यक्ष धींग ने सामाजिक सौहार्द एवं संवाद यात्रा का जिक्र करते हुए कहा कि यथासंभव मुंबई के सभी क्षेत्रों में पहुंच कर सभा की गतिविधियों की जानकारी दी जाएगी, अब तक लगभग १२ क्षेत्रों में हम पहुंचे हैं, इसका अच्छा प्रतिसाद मिल रहा है, इसके संयोजक मनोहर गोखरु का श्रम उल्लेखनीय है। कार्यक्रम में सभा की वेबसाईट के नवीन संस्करण का लोकार्पण किया गया, इस कार्य में पूर्व मंत्री दीपक डागलिया का सहयोग रहा।

वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुरेन्द्र कोठारी, बाबूलाल बाफना, चांदरतन दुग्गड़, प्यार चंद मेहता, कमलेश बोहरा, अमृत खंटेड़, सुनिता परमार, बाबुलाल समदरिया उपस्थित रहे। फाउन्डेशन अध्यक्ष मेघराज धाकड़ ने भी विचार रखे, गत वित्तीय वर्ष के अकाउंट की प्रस्तुति कैलाश बाफना एवं के. एल. परमार ने दी एवं उसे सदन ने स्वीकृति दी। आगामी वर्ष के लिए कैलाश बाफना की ऑडीटर के रूप में नियुक्ति की भी स्वीकृति दी।

सुनील इंटोदिया, अशोक तलेसरा, गणपतलाल डागलिया ने भी विचार रखे, इस अवसर पर जगदीश उमरिया, अर्जुन चौधरी, सुरेश राठौड़, हस्तीमल डांगी, ज्ञानमल भंडारी, गणेशलाल कोठारी, रतन सिंघवी, राजेंद्र दुगड़, राकेश सिंघवी, संदीप कोठारी, महेश बाफना, ज्ञानशाला आंचलिक संयोजिका राजश्री कच्छारा, अंजू चौधरी, चंचल परमार, दलपत इंटोदिया, मदन कोठारी, चुन्नीलाल सिंघवी, कन्हैयालाल मेहता, प्रकाश धाकड़, मनोज ढालावत, नरेन्द्र सिंघवी, गौतम डागा, प्रकाश धींग, राकेश दक, गौतम कोठारी, मीठालाल धाकड़, निर्मल भंसाली, अजय डांगी, नितेश धाकड़, प्रकाश दुगड़, कांतिलाल परमार, सुरेश बापना, सुभाष बडाला, दीपक छाजेड़, आशीष बम्ब, अशोक कोठारी, अनिल चोरडिया, विनोद डागलिया, सुरेश धोखा, हस्ती भंडारी, दीपक बाफना, भैरूलाल राठौड़ सहित अन्य उपस्थित रहे। संचालन एवं आभार मंत्री दिनेश सुतरिया ने किया, हिम्मत हिरण, लाभचंद कच्छारा, मदनलाल सिरोहिया, नरेंद्र अमरावत, मनोहरलाल मादरेचा, रमेश दुग्गड, सुनील संचेती, राजेंद्र मुनोत, मनोज ढालावत, रमेश टुकलिया, अर्जुन सिंघवी, मनसुख धींग, प्रवीण चपलोत, गौतम कोठारी, इंद्रमल कच्छारा, भरत मेहता, गणपत सोनी, मीना सुराणा, निर्मला कोठारी, सुशीला मादरेचा, प्रीति बोथरा, मीना सिंघवी आदि उपस्थित थे।

जय गुरु नाना जय महावीर जय गुरु राम
समस्त जैन समाज के गुरू-भगवंत आचार्य-उपाध्याय,
आर्यिका-साध्वी, श्रावक व श्राविकाओं श्री जी के चरणों में
मिच्छामी दुक्कड़म
Mahaveer Surana
Mob: 9320229389
Suswani Fashion Pvt. Ltd.
A/1802 Indraprasth Golden, Nest Phase 16, Bhayander East,
Dist. Thane, Maharashtra, Bharat- 401105

समस्त जैन समाज के गुरू-भगवंत
आचार्य-उपाध्याय, आर्यिका-साध्वी श्री जी के चरणों में
उत्तम क्षमा
पूरनमल जैन 'सेठी'
: संस्थापक व पूर्व अध्यक्ष :
भगवान महावीर हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेन्टर, राँची
104, पारस अपार्टमेन्ट, कचहरी रोड, राँची, झारखण्ड, भारत- 834001
दूरध्वनि- 6201144633 भ्रमणध्वनि.-09431115535
भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

सौ. हेमलताजी के बिन्दी ने महिला समाज को यह संदेश दिया

चिकलठाणा: प्रत्येक श्रावक-श्राविका को हर दिन अपने माथे पर तिलक व बिंदी लगाना चाहिए, जैनधर्म में तिलक सम्मान का सूचक है, जैन श्रावक-श्राविका हर दिन अपने हाथों से भगवान का अभिषेक करने पूर्व भगवान के चरणों में चंदन लगाते है, उसी गंध चंदन से अपने शरिर के नौ अंगों पर चंदन लगाते हैं। तीर्थंकर के चरणों में गंध लगाकर अपने मस्तक पर तिलक करते हैं, यह तिलक राजतिलक का प्रतिक हैं। विजय सूचक है। प्रभु का आशीर्वाद है।

श्रावक तिलक लगाता है, श्राविका बिंदी लगाती हैं, यह बिंदी भी हमें क्या संदेश दे रही है, अनेक प्रकार की बिंदी हमारे आगम में बताई गई है, गोल बिंदी समवशरण का प्रतिक है।

लंबा तिलक मानस्तंभ का प्रतिक है, अर्ध चंद्राकार तिलक सिद्ध शिला का प्रतिक है, आढी तीन रेखा लगाना, रत्नत्रय का प्रतिक है। पहले के समय में जो बच्चे मंदिर जाकर आते तो उनके माथे पर चंदन का तिलक रहता था, जो बच्चे मंदिर जाकर भी तिलक लगाकर नही आये, तो माता पिता वापस मंदिर में भेजते थे, कहते माथे पर टीका लगाकर आओ। मंदिर जाने का प्रमाण हमारा तिलक होता है। हर समाज में तिलक का महत्व है। युद्ध भूमि में जब राजा अपने घर से जाते थे तब परिजन उनको माथे पर विजय तिलक लगाते थे। माता बड़ी बिंदी अपने माथे पर लगाती थी, वो अपना सौभाग्य जगाती थी। लाल सिंदुर की बिंदी सुहागन महिला की पहचान है। सौभाग्य सूचक है, चंदन का तिलक शांत स्वभाव का सूचक है। आज्ञा चक्र सक्रिय होता है। दिमाग ठंडा रहता है, क्रोध को कंट्रोल करता है, आदि अनेक कारण हैं, इसलिये हरेक माता को हर दिन बिंदी लगाना चाहिए, पुरुषों को तिलक लगाना चाहिए।

समाजसेवी निलेश कुमार सुराणा 'जीसो' के बने राष्ट्रीय मंत्री

मुंबई: जैन राष्ट्रीय एकता संगठन मध्यप्रदेश इकाई के प्रदेश अध्यक्ष संस्थापक नीलेशकुमार सुराणा को जैन इंटरनेशनल सेवा ऑर्गेनाइजेशन 'जीसो' के इंटरनेशनल चेयरमैन सुरेश पुनमिया ने 'जीसो' का राष्ट्रीय मंत्री मनोनीत किया है, इस अवसर हाईकोर्ट रिटायर्ड जज के.के तातेड़, 'जीसो' इंटरनेशनल चेयरमैन सुरेश पुनमिया मुंबई, 'जीसो' राष्ट्रीय प्रचार मंत्री प्रशांत ज़वेरी मुंबई, 'जीसो' जीवदया प्रकल्प प्रमुख धीरज बालदिया मुंबई ने सुराणा जी का स्वागत बुके एवं जीसो सर्टिफिकेट देकर किया।

अपनी नियुक्ति पर श्री सुराणा ने जीसो इंटरनेशनल के चेयरमैन श्री पुनमिया एवं अन्य साथियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वे निश्चित इस पद की गरिमा को बढ़ाएंगे और संगठन के कार्य को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आगे लेकर जाएंगे एवं राष्ट्रसेवा, जिनशासन की सेवा में अपना महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

'जीसो' के इंटरनेशनल चेयरमैन श्री पुनमिया ने कहा कि आपकी कार्यकुशलता को देखकर ही इस महत्वपूर्ण पद का दायित्व आपको सौंपा गया है। हमें पूर्ण विश्वास है कि आप अपने कार्यकाल में समाज व राष्ट्र उत्थान के लिए

कार्य करेंगे एवं संगठन को मजबूत करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देंगे। हाईकोर्ट रिटायर्ड जज के.के. तातेड़ ने कहा कि समाज को आप जैसे युवा वर्ग की तलाश है, जो निरंतर राष्ट्रसेवा एवं जिनशासन की सेवा में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं, आप जिस तरह से संगठन का कार्य करते हैं वह शानदार है। आपकी कार्य पद्धति को देखकर 'जीसो' ने यह महत्वपूर्ण पद आपको देकर अपने साथ जोड़ा है, इसकी जितनी प्रशंसा की जाए वह कम है, इस शुभ अवसर पर परिवार सहित सभी ईष्ट मित्रों व समाजसेवियों ने निलेशकुमार सुराणा जी को बधाई दी।

सभी श्रावक-श्राविकाओं से उत्तम क्षमा
M/S. PRADEEP KUMAR JAIN
Builder & "AA" Class Contractors

Specialised for Construction of Multi Story Buildings, Colonies, Mall with Sanitary, Electrical Works.
Residence cum Office :
140, Shree Vihar, 4th Avenue, Behind Clarks Amer Hotel, Durgapura, Tonk Road, JAIPUR
Ph. : 0141-2554537, Mobile : 98290-60012, E-mail : pradeepkr_jain@rediff.com
Website : www.pradeepkumarjain.com

गुरु दर्शन यात्रा सम्पन्न

मुंबई: डोम्बिवली कल्याण उपसंघ अध्यक्ष वंसतीलाल चपलोत के नेतृत्व में संघ सदस्यों ने राजस्थान में गुरुदर्शन यात्रा की। दल कुंवारिया में श्रमण संघीय उपप्रवर्तक कोमल मुनि मसा आदि ठाणा ३, कांकरोली में चातुर्मास कर रही महासती विश्ववंदना मसा. व साध्वी परमेष्टिवंदना जी मसा., भीलवाड़ा में महासती डॉ. कुमुदलता मसा. आदि ठाणा ४ तथा मेवाड़ उपप्रवर्तिनी विजय प्रभा जी मसा. आदि ठाणा ४ के सम्मुख पहुंचा एवं सेवा की। संघ अध्यक्ष व मेवाड़ भवन गोरेगांव कोषाध्यक्ष की जिम्मेदारी संभाल रहे श्री चपलोत ने दिलीप नावेडा होस्टल की वर्तमान गतिविधियों से अवगत कराया। यात्रा में महिला मंडल, गुरु अम्बेश ट्रस्ट, नवयुवक मंडल, कन्या मंडल सहित संघ के सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों का सहयोग रहा।

आत्मा को पूनित करने वाले महामंगलकारी पर्यूषण महापर्व पर सभी जैनाचार्यों, मुनिराज आर्यिका एवं श्रावक व श्राविकाओं से

उत्तम क्षमा

अशोक जैन झांझरी
महामंत्री श्री दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र पावागिरीजी ऊन
Mob.: 9425939648, 8966860003

जैन मंदिर के सामने, कस्बा भीकनगाँव,
तहसील भीकनगाँव, मध्य प्रदेश, भारत- 451331।

जैन एकता

'जैन एकता' का प्रश्न सम्मुख खड़ा है सबके यहाँ,
हल अभी तक क्यों कोई खोज नहीं पाया है,
अनेकता में एकता की बात हम कैसे कहें,
अलग-अलग पंथ का ध्वज हमने फहराया है।
गुरुओं ने अपने-अपने कई पंथ बना दिये,
महावीर के मूल पथ को सभी ने बिसराया है,
संवत्सरी को भी तो अलग- अलग मनाते हम,
'एकता' का भाव कहां मन में समाया है!
संगठन की शक्ति का क्यों नहीं विश्वास हमें,
भविष्य में अंधेरा होगा क्यों नहीं आभास हमें,
टूट-टूटकर बिखर जायेगे हम सभी एक दिन,
खतरे की घंटियों का क्यों नहीं एहसास हमें।
एक है ध्वज हमारा, मंत्र भी एक 'णमोकार' है,
एक ही प्रतीक चिन्ह, महावीर सबके आधार हैं,
अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकान्त मूल सिद्धान्त हमारे हैं,
रोटी-बेटी का व्यवहार आपस में करते सारे हैं।
वक्त आ गया अब 'एकता' का बिगुल हमें बजाना होगा
मन मुटाव छोड़ सभी, एक ध्वज के नीचे आना होगा
'महावीर' को अलग-अलग रूप में मनाया खूब
अब हमें एक होकर 'महावीर' को अपनाना होगा।
परचम एकता का नहीं लहराया तो
ये बुद्धिमान समाज बुद्धू कहलायेगा
संगठित गर नहीं हुए तो वजूद ही हमारा संकट में पड़ जायेगा
देर भले ही हुई, ही अब और अधिक न देर करो
युवा पीढ़ी के बच्चों जागो, नई शक्ति का जोश भरो
हाथ पर हाथ धरे अब हमें बैठे नहीं रहना है
एक 'संवत्सरी' मनायें, सब संतों से मिलकर कहना है
जो न समझे वक्त की नजाकत को, उनको अलग-थलग छोड़ दो
बाकी सारे संत मिलकर पूरे समाज को एक 'संवत्सरी' से जोड़ दो।

- कवि युगराज जैन

Shri Digambar Jain Global Mahasabha
"NAYI SOCH NAYI DISHA"

Shri Digambar Jain Global Mahasabha
समस्त जैन समाज के गुरू-भगवंत आचार्य-उपाध्याय, आर्यिका-साध्वी श्री जी के चरणों में उत्तम क्षमा

Jamnalal Jain Hapawat
Founder, Trustee & National President

KAMAL B. JAIN
Founder, Trustee & National Working President

10 Atul Niwaas, 1st Floor 20/21, Khetwadi 7th Lane,
Girgaon, Mumbai, Bharat- 400004 Off.: 7744055544

Delhi Off:
"ESSAL" 13/41, PB. New Delhi- 110026

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

INDIA नाम तो IDIOT का पर्यायवाची है

- आचार्य श्री प्रमुख सागर जी

कोलकाता: चातुर्मास के ४ महीने साधु-संतों का एक ही स्थान पर निवास होता है, क्योंकि यह काल वर्षा का समय होता है, छोटे-छोटे जीव-जंतुओं की उत्पत्ति का समय होता है, उनकी हिंसा ना हो, अहिंसा धर्म का पालन हो इसीलिए हम साधुओं को एक ही स्थान पर विराजमान होना पड़ता है, पूरे भारत में हर जगह साधु-संतों का चातुर्मास होता है, चातुर्मास के समय स्वाध्याय, ज्ञान, तप बहुत अधिक होता है, यही हमारी साधना है, इसी में हम संलग्न रहते हैं। श्रावक गण भी इसका लाभ उठा सकते हैं, रात्रि भोजन का त्याग करें, जमीकंद ना खाएं, चौविहार का पालन करें। आज की युवा पीढ़ी में बहुत अच्छा धर्म ध्यान हो रहा है, दीक्षा लेने वालों में युवक-युवतियों की संख्या अधिक होने लगी है, युवा पीढ़ी धर्म से नहीं धर्म के माध्यम से होने वाले पाखंडों से दूर हो रही है, जहां छल-कपट के भाव हैं, वहां से युवा दूर रहना चाहता है, युवाओं को भी धर्म, समाज, संस्कृति की बातें समझ में आने लगी हैं।

'भारत को ''भारत'' बोला जाए' इंडिया नहीं, इस संदर्भ में आपका कहना है कि इस विषय में मैंने गुवाहाटी,आसाम में पहल उठाई थी, जिस समय मैंने यह बात उठाई थी उस समय यह बात पार्लियामेंट तक गयी थी, राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू जी ने, जब विदेशियों को G20 में आमंत्रित किया था तो निमंत्रण पत्र में इंडिया की जगह 'भारत' लिखा था। 'भारत' हमारी मूल धारा है।

'जैन एकता' के संदर्भ में आप कहते हैं कि बंटोगे तो कटोगे, एक रहोगे तो सेफ रहोगे। 'जैन एकता' इसलिए भी जरूरी है क्योंकि आज हमारी जनसंख्या वैसे ही बहुत कम है और हम थोड़े लोग भी यदि अलग-अलग धाराओं में बंट जाएंगे तो फिर हमारा अस्तित्व समाप्त हो जाएगा, जिस तरह भोजन करने के लिए पांचों उंगलियों का मिलना जरूरी है, भजन कीर्तन या फूलपत्र चढ़ाने के लिए पांचों उंगलियों का मिलना जरूरी है, ऐसे ही हमारे धर्म और समाज को ऊंचा उठाने के लिए समाज में 'एकता' होना जरूरी है, हमारे पंथ एकसाथ रहेंगे तो हम बहुत ऊंचाइयों पर जा सकते हैं, यदि हम बंटे रहेंगे तो हमारा अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा, भले ही हमारी आमनाएं अपनी-अपनी जगह पर हैं, पर जहां समाज राष्ट्र और अंतरराष्ट्रीय स्तर की बात आती है, वहां हमें 'एकता' दिखानी चाहिए, जिस तरह मुंबई में हुई तत्कालीन घटना में संपूर्ण जैन समाज ने इकट्ठा होकर बता दिया था कि, हम किसी से कम नहीं, ऐसी ही 'एकता' का परिचय हमेशा देते रहना चाहिए, जिससे हमारा समाज आगे बढ़े।

'भारत को सिर्फ 'भारत' ही बोला जाना चाहिए', अंग्रेजों ने भारत को इंडिया बनाया था, इसलिए बनाया था, क्योंकि वह अंग्रेजी में भारतीयों को गाली देते थे, 'इंडियन का अर्थ इडियट' इसीलिए 'भारत' को उन्होंने 'इंडिया' बना दिया, यह हमारी गलती है कि हमने उसे अपनी सभ्यता मान ली, हम 'भारत को 'भारत' ही रहने दें, 'भा' का अर्थ प्रकाश, 'रत' अर्थात देने वाला अर्थात 'भारत' का अर्थ हुआ 'प्रकाश देने वाला', ज्ञान देने वाला, संस्कृति प्रदान करने वाला, 'भारत' हमारी माँ हैं, इसे इंडिया कहकर अपमानित ना करें।

-जिनागम

सौ. हेमलताबाई एम. पाटणी का देह परिवर्तन

चिकलठाणा: सुविख्यात समाजसेवी वरिष्ठ पत्रकार, एम.सी. जैन जी की धर्मपत्नी, प्रा. डॉ. राजेश एम पाटणी, दिनेश, डॉ. नीलम की माताजी सौ. हेमलता जी का मुंबई में नी रिप्लेस्मेंट ऑपरेशन समय दुखद निधन हो गया है। सौ. हेमलताजी प्रकांड विद्वान पं. तनसुखलालजी काला जी की भतीजी तथा कवि माणिकचंद काला, मुम्बई की सुकन्या थी। भक्तामर स्तोत्र का नियमित कंठस्त पाठण आप करती थी।

देश भर में विराजमान परम पूज्य आचार्यों, मुनिराजों, आर्यिका माताओं के चरणों में नमोस्तु, वंदामि, इच्छामि

उत्तम क्षमा

श्रीमान रुपचंदजी कमलादेवी जैन
श्रीमान दिनेशजी रेखाजी जैन
दिवेश जैन एवं दिशा जैन सहपरिवार - मलाड पश्चिम, मुंबई
Mob: 9820199904
No.1504,15Th Flr, Rustomjee Ozone, Tower No.5, Behind Ggn Tele Exchange, Goregaon West, Mumbai, Maharashtra, Bharat- 400104
भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

With Best Compliments

GURU RAJENDRA METALLOYS INDIA PVT LTD

G R METALLOYS PVT LTD

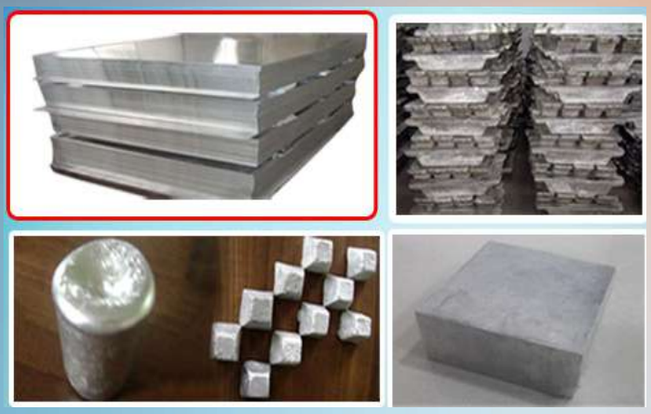

SHAH BABULAL DHANRAJJI JAIN

JAYANT BABULAL JAIN

SHAILESH BABULAL JAIN

Manufactures of Aluminium Alloy Ingot, Aluminium Ingot, Aluminium Notch bar, Aluminium Shots, Aluminium Cubes

8, Gautam Vihar Society, Opp. Sukhsagar Complex, Aroma School Road, Ashram Road, Usmanpura, Ahmedabad, Gujarat , Bharat– 380 013.

भावी पीढ़ी के शुभ भविष्य की जिम्मेदारी है नारी की

जागो बहनों! नव-प्रभात, यह जागृति का आह्वान करें, हम युग धारा में प्राण भरें, चातुर्मास महिलाओं के लिए आध्यात्मिक और सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण समय है, यह समय आत्म सुधार, धार्मिक गतिविधियों और सामाजिक सेवा के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है।

महिलाएं चातुर्मास में धार्मिक अनुष्ठान, उपवास और प्रवचनों में सक्रिय रूप से भाग लेती हैं, जिससे धार्मिक और आध्यात्मिक जागृति बढ़ती है।

व्यक्ति और समाज को एकसूत्र में पिरोने के प्रयत्न की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभाती है, महिला और चातुर्मास का महत्वपूर्ण उद्देश्य है सामाजिक संगठन, जिसकी एक महत्वपूर्ण कड़ी है नारी। महिलाएं शैक्षणिक और आध्यात्मिक शिविरों में भाग लेकर अपने ज्ञान को अपने परिवार और समाज को सकारात्मकता से भर सकती हैं। 'चातुर्मास' महिलाओं के लिए आध्यात्मिक विकास और धार्मिकता में गहराई से जुड़ने का एक महत्वपूर्ण अवसर है।

जैन श्रावकों ने सोल्लास मनाया सलूना पर्व

डिब्रूगढ़: स्थानीय ग्राहम बाजार स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में गत ९ अगस्त यानी श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को जैन श्रावकों ने जैन धर्म का सलूना (रक्षा बंधन पर्व) परंपरागत व सौल्लास पूर्वक मनाया।

ज्ञातव्य हो कि जैन-धर्म का सलूना पर्व अपने आप में एक विशेष महत्व रखता है, जैन मत्यानुसार इस दिन श्रवण नक्षत्र व श्रावण सूदि १५ (पूर्णिमा) का दिन था, उस दिन राजा बालि द्वारा उपसर्ग से त्रस्त ६०० मुनियों की रक्षा विष्णू कुमार महामुनि ने की थी, इसी से यह दिन सबसे पवित्र दिन माना व इस दिन की याद रखने हेतू संतों ने परस्पर प्रेम से बड़े भारी उत्सव के साथ हाथ में सूत के डोरा का चिन्ह बांधा था, तभी से यह पवित्र दिन 'रक्षा बन्धन' पर्व के नाम से माना जाने लगा, जो आज तक प्रचलित है। पंचायत के अध्यक्ष डा. महेश कुमार झांझरी एवं अनिल बगडा ने समस्त पूर्वाचल जैन समाज को राखी पर्व की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित की, इस आशय की जानकारी प्रचार-प्रसार सचिव मोती लाल जैन 'प्रभाकर' एवं पंकज गोधा ने एक प्रेस विज्ञप्ति द्वारा 'जिनागम' को भेजी है।

समस्त जैन समाज के गुरू-भगवंत आचार्य-उपाध्याय,
आर्यिका-साध्वी, श्रावक व श्राविकाओं श्री जी के चरणों में उत्तम क्षमा
किशनलाल, सोहनलाल, रितेश कुमार, प्रणव,
एवं कोठारी परिवार- हलसूरू बैंगलुरू

वंदनकर्ता
किशनलाल सुशीला बाई कोठारी
SURYA BUILDERS
&
DEVELOPERS
Surya Mansion, 242/A, 3rd Floor, Off C.M.H. Road, 13th cross,
2nd Stage, Indira Nagar, Bangalore, Karnataka, Bharat- 560038
Tel : 080-51152277 (R) 080-41510940-41
Mob. : 099452 80264

समस्त जैन समाज के गुरू-भगवंत आचार्य-उपाध्याय,
आर्यिका-साध्वी, श्रावक व श्राविकाओं श्री जी के चरणों में

उत्तम क्षमा
Nitesh Patni Jain
Mob: 9825137520
Vikash Patni Jain
Mob: 9334722110
M.R Saree Emporium (Surat)
M.R & Company (Ranchi)
M.R Group: Kolkata | Raipur | Banaras
M.R Market, Mahavir Chowk
Ranchi, Jharkhand, Bharat- 834001
Shop No. 248 to 283, 308 to 343, Lower Ground,
Kohinoor Textile Market, Ring Road, Surat-395002, Gujarat-24
email: mrsaree emporium@yahoo.co.in

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय भारत! जय जिनेन्द्र!

भारत को 'भारत' ही बोलेंगे INDIA नहीं

मनोज जैन
प्रांतीय अध्यक्ष ओड़िशा प्रांतीय जैन तेरापंथी सभा
हरियाणा निवासी-बलांगीर उड़ीसा प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४३७०३७७८८

मनोज जी 'चातुर्मास' के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि 'चातुर्मास' का आज के परिपेक्ष में बहुत अधिक महत्व है। 'चातुर्मास' कौशल प्रदान करता है, जो वर्ष भर सांसारिक जीवन के कारण धर्म और समाज से नहीं जुड़ पाते, 'चातुर्मास' के चार महीने धर्म की परभावना बढ जाती है, हम आध्यात्मिक उत्थान के लिए कार्यरत होते हैं, साधु-साध्वी एक ही स्थान पर निवास करते हैं, जिससे उनके सानिध्य का अवसर हमें मिलता है, इसीलिए 'चातुर्मास' का महत्व हमेशा से रहा है और आगे भी रहेगा।

'जैन एकता' आज हमारे समाज की सबसे बड़ी जरूरत बन गई है, समाज में पंथवाद के कारण हमारे समाज का वर्चस्व कम होता जा रहा है, अपने धर्म और समाज को वर्चस्व को बनाए रखने के लिए समाज में 'एकता' होना बहुत जरूरी है और इसके लिए हमारे 'संवत्सरी', 'पर्युषण' जैसे सभी पर्व एकसाथ-एकरूप में मनाये जाने चाहिए, तभी हम 'जैन एकता' की ओर बढ़ सकते हैं।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से विमुख हो रही है, क्योंकि जैन धर्म के सिद्धांत त्याग पर आधारित हैं और युवा वर्ग इन सबसे दूर ही रहना चाहती है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम 'भारत' था और 'भारत' ही रहना चाहिए।

मनोज जी मूलत: हरियाणा स्थित 'उमरा' के निवासी हैं। आपका परिवार डेढ़ सौ सालों से 'उड़ीसा' में बसा हुआ है। आपका जन्म सम्पूर्ण शिक्षा 'बलांगीर' में संपन्न हुई है, यहां आप सिविल इंजीनियर के रूप में कार्यरत हैं। कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही ओडिशा प्रांतीय जैन तेरापंथी सभा प्रांतीय अध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं, मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय उपाध्यक्ष और सचिव रहे हैं, अन्य कई सामाजिक संस्थाओं में भी कार्यरत हैं। जय भारत!

- जिनागम

बुधमल बागमार
मंत्री श्री स्थानकवासी जैन भवन महावीर नगर हल्लदकेरी मैसूर
कोसाना निवासी-मैसूर प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८४५१२६४०७

बुधमल जी 'चातुर्मास' के महत्व को बताते हुए कहते हैं कि 'चातुर्मास' का जैन समाज में विशेष महत्व है, क्योंकि इन चार महीनों में हमारे गुरू-भगवंत एक ही स्थान पर निवास करते हैं, जिससे उनके सानिध्य का अवसर श्रावकों को प्राप्त होता है, उनसे धर्म व ज्ञान की बातें जानने का अवसर मिलता है, इन चार महीनों में धार्मिक क्रियाएं बढ़ जाती हैं, जिससे धर्म की प्रभावना भी बढ़ती है। आज के परिपेक्ष में 'चातुर्मास' का महत्व और अधिक बढ़ जाता है, वर्तमान में हमारे यहां श्री विदयमुनि जी आदि ठाणा दो और आर्यिका अर्चनाश्री जी का चातुर्मास हो रहा है, रोजाना ४०० से ५०० श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रहती है।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि 'जैन एकता' बहुत जरूरी है और यह संभव भी हो सकता है, यदि हमारे साधु-संत व आचार्य इस दिशा में विशेष प्रयास करें, उनके द्वारा ही यह कार्य संभव हो सकता है, हमारे सभी पर्व एकसाथ-एकरूप से मनाया जाए तो हम 'जैन एकता' की ओर बढ़ सकेंगे। धर्म व समाज के महत्व को बनाए रखने के लिए समाज में 'एकता' होना बहुत ही जरूरी है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से जुड़ी भी है और नहीं भी, गुरु भगवंतों के पास जाकर युवा पीढ़ी धर्म और समाज के महत्व को समझने लगी है। युवाओं को जोड़ना है तो आज के परिपेक्ष को अपनाकर ही उन्हें जोड़ा जा सकता है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक नाम, एक पहचान रहनी चाहिए भारत!

बुधमल जी मूलतः राजस्थान के 'पीपाड सिटी' में स्थित 'कोसाना' के निवासी हैं। आपका जन्म 'कोसाना' और संपूर्ण शिक्षा में 'मैसूर' में संपन्न हुई है, यहां आप फाइनेंस व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। वर्तमान में श्री स्थानकवासी जैन भवन, महावीर नगर हल्लदकेरी मैसूरु के मंत्री पद कार्यरत हैं, शिक्षण संस्थान मैसूर समिति के अध्यक्ष, मैसूर पांजरापोल समिति व रोटी बैंक के सदस्य हैं। अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत!

- जिनागम

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पदमचंद जैन बागमार
अध्यक्ष श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ तमिलनाडु
कोसाना नियासी-चेन्नई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४४४०७७९९०

पदमचंद जी 'चातुर्मास' के संदर्भ में अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि 'चातुर्मास' के चार महीने आध्यात्मिकता से परिपूर्ण होते हैं, इस अवसर पर धार्मिक क्रियाएं अधिक होती हैं, जिसका श्रावकगण अधिक से अधिक लाभ उठाते है, धर्म से उनका जुडाव बढ़ता है, धर्म क्या है? धर्म का जीवन में महत्व क्या है? इन सभी विषयों के प्रति जागरूकता निर्माण होती है, साधु-संतों के माध्यम से धर्म के महत्व की जानकारी प्रवचनों के माध्यम से होती है, जिससे कुछ ना कुछ सीखने को मिलता है। आध्यात्मिक उत्थान के लिए 'चातुर्मास' जरूरी है। आचार्य श्री हस्तीमल जी मसा. संघ की साध्वी महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा. आदि ७ ठाणा का चातुर्मास वर्तमान में हमारे यहाँ गतिमान है।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि श्रावकों द्वारा 'एकता' के लिए काफी प्रयास किया जा रहे हैं, कई संस्थाएं इस दिशा में कार्यरत हैं, पर यह तभी सफल होगा, जब हमारे साधु-संत इस कार्य में सहयोग प्रदान करें, वे एकमंच पर आकर 'जैन एकता' के लिए कार्य करें तो ही संभव हो सकता है।

आज की युवा पीढी अपने धर्म और समाज से समय के अभाव में विमुख हो रही हैं, उनमें जिज्ञासा बहुत है, पर उनके रहन-सहन और वातावरण में बहुत बदलाव आ गया है। युवा अपने शिक्षा और नौकरी में इतना व्यस्त हैं कि उन्हें धर्म ध्यान के लिए समय ही नहीं मिलता, तो वे समाज से कैसे जुड़ेंगे?

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम 'भारत' ही रहना चाहिए, यही हमारे देश की वास्तविक पहचान है, इंडिया तो हम मजबूरी में बोलते हैं और लिखते हैं, हमारी वास्तविक पहचान 'भारत' से थी और 'भारत' से ही रहनी चाहिए।

पदमचंद जी मूलत: राजस्थान के 'जोधपुर जिले में स्थित 'कोसाना' के निवासी है, आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा यहीं संपत्र हुई है, कई वर्षों से आप तमिलनाडु के 'चेत्रई' में निवासित है, यहां आप लैंड डेवलपिंग, सोलर पार्क, जेम्स फाइनेंस, फेरो अलॉय प्लांट जैसे विभिन्न व्यापार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहते हैं। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ तमिलनाडु के अध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं, मारवाडी फेडरेशन के ट्रस्टी, जैन कांफ्रेंस के वरिष्ठ सलाहकार, गजेंद्र निधि के ट्रस्टी, गजेंद्र स्वाध्याय फाउंडेशन तमिलनाडु के मैनेजिंग ट्रस्टी एवं चेयरमैन के रूप में कार्यरत हैं। जय भारत।

- जिनागम

गौतमप्रकाश घीया
सहमंत्री श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ
जोधपुर निवासी-रायचूर प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४४८१३५९३८

गौतमप्रकाश जी 'चातुर्मास' के संदर्भ में अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि 'चातुर्मास' का महत्व आज के परिपेक्ष में बहुत अधिक है, जिससे हम धर्म ज्ञान की ओर अग्रसर होते हैं, धर्म की प्रभावना बढ़ती है, लोगों में जागरूकता आती है, धार्मिक क्रियाएं बढ़ती हैं। युवा जो आज भटक रहे हैं, उन्हें 'चातुर्मास' के माध्यम से ही धर्म व समाज से जोड़ा जा सकता है, गुरु भगवंतों के सानिध्य का अवसर मिलता है, इसीलिए 'चातुर्मास' का विशेष महत्व है, हमारे यहां समरथगच्छ के प.पू. उत्तममुनि जी म.सा. संघ की सुशिष्या प.पू. प्राप्तिश्रीजी आदि ठाणा ६ का 'चातुर्मास' रायचूर में गतिमान है। व्याख्यान, ज्ञानशाला भी संचालित है, श्रावकगण बढ़ चढ़कर सहभागी हो रहे हैं।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि 'जैन एकता' आज हमारे समाज में बहुत जरूरी है। आज हमारा समाज संप्रदायवाद के कारण अलग-अलग राहों पर चल पड़ा है, जिसे हमारे समाज को कई दूष्परिणाम का सामना करना पड़ रहा है, इसीलिए हमारे समाज में 'एकता' होना बहुत जरूरी है और इसके लिए अपने नाम के साथ 'जैन' अवश्य लगायें, तभी हमारी वास्तविक जनसंख्या का पता चलेगा, हमारी संख्या वैसे ही कम है और यदि इसी तरह हम बंटे रहेंगे तो हमारे समाज व धर्म दोनों का ही अस्तित्व खतरे में आ जाएगा, इसीलिए 'जैन एकता' बहुत जरूरी है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहे 'भारत' हमारे देश की वास्तविक पहचान है।

गौतमप्रकाश जी मूलतः राजस्थान के जोधपुर जिले में स्थित 'बीसलपुर' के निवासी हैं। आपका जन्म राजस्थान और संपूर्ण शिक्षा कर्नाटक के 'रायचूर' में संपन्न हुई है, यहां आप फार्मास्यूटिकल व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। वर्तमान में श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के सहमंत्री के पद पर कार्यरत हैं। डिस्ट्रीक्ट चैंबर्स ऑफ़ कॉमर्स के कार्यकारिणी सदस्य, ड्रगिस्ट एसोसिएशन के सलाहकार, ऑल इंडिया अपोलो हॉस्पिटल पेशेंट सर्विस कार्यकारिणी से भी जुड़े हैं। 'सुरक्षा' नामक हॉस्पिटल संचालित करते हैं और भी कई सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हैं। जय भारत!

- जिनागम

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

अशोक जैन पांड्या
सचिव 'गुणायतन' श्री सम्मेद शिखर जी, झारखंड
सीकर, कटराथल, राजस्थान निवासी-झारखंड प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४३११४४३४३

अशोक जी 'चातुर्मास' के संदर्भ में अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि वर्षाकाल के चार महीने दिगम्बर मुनिराजों की तपस्या और साधना का वक्त होता है। वर्षा के दौरान अनेक सुक्ष्म जीवों की उत्पत्ति अधिक होती है, जीवो की हिंसा ना हो, इसीलिए मुनिराज एक ही स्थान पर निवास करते हुए साधना करते हैं, इस दौरान जैन समाज को भी उनके सानिध्य का अवसर प्राप्त होता है, जिससे समाज को बहुत लाभ मिलता है और धर्म प्रभावना बढ़ती है। 'चातुर्मास' एक साधना है, जिससे जैन धर्म की जड़ें मजबूत होती हैं, इसीलिए आज के परिपेक्ष में 'चातुर्मास' का बहुत महत्व है। वर्तमान में हमारे 'तीर्थराज श्री सम्मेद शिखर' में अवस्थित गुणायतन में परम पूज्य सन्त शिरोमणि १०८ विद्यासागर जी महाराज के शिष्य परम पूज्य मुनिश्री १०८ समता सागर जी, पुण्यसागर जी, अतुलसागर जी, पवित्र सागर जी, साथ ही आर्यिका रत्न गुरुमति माताजी व दृढमति माताजी ससंघ ५७ पिच्छियों का चातुर्मास सानंद सम्पन्न हो रहा है, ये पूरे झारखंड प्रदेश के दिगम्बर जैन समाज के लिए अति गौरव का अवसर है।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि समाज में एकता बहुत जरूरी है, आज हमारे समाज की संख्या मुट्ठी भर रह गई है और इसके कई कारण हैं, पहला कारण है समाज में 'हम दो-हमारे एक' का विधान चला है, जिसके कारण हमारी जनसंख्या दिन-प्रतिदिन कम होती जा रही है, दूसरा अंतरजातीय विवाह के कारण भी हमारे समाज की संख्या पर प्रभाव पड़ रहा है, इन सभी चीजों को देखते हुए हैं यदि हम 'एक' नहीं हुए तो हमारे धर्म और समाज का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा, इसीलिए समाज में 'एकता' बहुत जरूरी है। 'एकता' ना होने से ही हमारे धर्म तीर्थ पर अन्य समाज का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है, इसीलिए समाज में 'एकता' होना बहुत ही जरूरी है, हम भले ही संप्रदायों में बंटे हों, पर सभी के जीवन में तीर्थंकर महावीर के सिद्धांत ही हैं, हमारा मार्ग जरुर अलग है पर लक्ष्य एक ही है, इसीलिए समाज में 'एकता' होना जरूरी है।

आज की युवा पीढ़ी पर शिक्षा का बहुत बड़ा प्रभाव पड़ रहा है, आज युवा विभिन्न क्षेत्रों में आगे हैं, पर इसका एक दुष्परिणाम यह भी है कि वे अपने परिवार और समाज से दूर हो रहे हैं।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, परम पूज्य गुरुवर आचार्य श्री विद्यासागर जी ने भी यही कहा है। 'भारत' नाम हमारी संस्कृति से जुड़ा है, अत: अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए।

अशोक जी मूलत: राजस्थान के 'सीकर' जिले में स्थित 'कटलाथल' के निवासी हैं। आपका परिवार कई वर्षों से 'झारखंड' में बसा हुआ है, आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा 'झारखंड' में हुयी हैं और यहां आपका परिवार अबरक (माईका) के निर्यात-आयात के कारोबार में पिछले ८० सालों से जुड़ा है, जो आज 'जय ग्रुप' के नाम से पहचाना जाता है, जिसके पूरे भारत में कई शाखा है। आप धार्मिक और सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। वर्तमान में परम पूज्य १०८ प्रमाण सागर जी महाराज के अनन्य भक्त हैं। सम्मेद शिखर में स्थापित 'गुणायतन' में विशाल निर्माण कार्य चल रहा हैं, जिसके आप महामंत्री पद पर कार्यरत हैं। मारवाड़ी सम्मेलन के सदस्य हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत!

- जिनागम

प्रदीप जैन
व्यवसायी व समाजसेवी
खोह, अलवर निवासी
भ्रमणध्वनि: ९५४९००६९३४

प्रदीप जी 'चातुर्मास' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'चातुर्मास' के ४ महीने में धर्म-ध्यान के प्रभावना अधिक बढ़ जाती है, श्रावक-श्राविकाएं धार्मिक क्रियाओं से अधिक जुड़ते हैं, लोगों में जागरूकता आती है। गुरु भगवंतों के सानिध्य का अवसर प्राप्त होता है। आध्यात्मिक जीवन को महत्व प्रदान किया जाता है, भौतिकता से दूर रहते हैं, इसीलिए 'चातुर्मास' का आज के परिपेक्ष में विशेष महत्व है।

'जैन एकता' आज हमारे समाज की सबसे बड़ी जरूरत है, समाज में एकता स्थापित होगी, तभी हमारे समाज को महत्व प्राप्त होगा और इसके लिए सभी गुरु भगवंतों और श्रावकों को मिलकर प्रयास करना होगा, तभी 'जैन एकता' संभव हो सकती है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से विमुख भी हो रही है और जुड़ भी रही है, जिन परिवारों में युवाओं को संस्कार प्राप्त होते हैं, वे किसी न किसी रूप में अपने धर्म और समाज से जुड़े रहते हैं, अपने समाज के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए युवाओं का धर्म समाज से जुड़ना बहुत जरूरी है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक नाम, एक पहचान रहनी चाहिए 'भारत', यही हमारे देश की वास्तविक पहचान है।

प्रदीप जी मूलतः राजस्थान के अलवर जिले में स्थित 'खोह गांव' के निवासी हैं, जो ऐतिहासिक गांव है। आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। यहां आप कृषि और व्यापार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के १५ सालों तक अध्यक्ष और २० साल तक कोषाध्यक्ष रहे हैं, वर्तमान में संरक्षक के रूप में कार्यरत हैं, यथासंभव अन्य सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। जय भारत!

- जिनागम

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

अमरचंद बाफना

अध्यक्ष श्री देव आनंद जैन शिक्षक संघ राजनांदगांव
जोधपुर निवासी-बालोत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४२४११६२३२

अमरचंद जी मूलतः राजस्थान 'जोधपुर' जिले में स्थित 'बालेसर' के निवासी हैं, आपका जन्म व शिक्षा मध्य प्रदेश 'बालोत' तहसील में 'अर्जुन्दा' शहर में संपन्न हुई है। आप व्यापार से जुड़े हैं, साथ ही आप सामाजिक कार्यों में भी विशेष रूप से सक्रिय रहते हैं। वर्तमान में आप श्री देव आनंद जैन शिक्षक संघ के अध्यक्ष पद पर मनोनीत हैं, पूर्व में श्री अखिल भारतीय साधुमार्गी जैन संघ बीकानेर के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रहे हैं। वर्तमान में संयोजक की भूमिका निभा रहे हैं, अन्य सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े हैं। अमरचंद जी श्री देव आनंद शिक्षण संघ के बारे में बताते हुए कहते हैं कि इस शिक्षण संघ की नींव से लेकर आज तक मेरे बड़े पिताजी सूरजमल जी बाफना ने अपना खून-पसीना एक किया,वे अध्यक्ष भी रहे, इसकी स्थापना के समय यह गुरुकुल के रूप में था, बच्चों को उत्तम शिक्षा के साथ-साथ अन्य मूलभूत शिक्षाएं भी दी जाती थी, जिससे बच्चे शिक्षित होने के साथ-साथ संस्कारी व धार्मिक भी बने और अपनी मौलिकता से भी जुड़े रहे, उस समय शिक्षक मुनिंद्र कुमार जी थे, बच्चों को 'जैनिज्म' से जुड़ी शिक्षाएं भी देते थे, उस समय इस विद्यालय में लगभग १३०० बच्चे थे, आज इस शिक्षण संस्थान में मात्र १७० बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, इसका कारण है सीबीएससी बोर्ड का ना होना, इस शिक्षण संस्थान के शिक्षा प्रणालियों में कई सुधार की आवश्यकता है, जिसके लिए मैं अपने कार्यकाल में पूरा प्रयास करूंगा, यही मेरा उद्देश्य है।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि 'जैन एकता' होना बहुत जरूरी है, क्योंकि आज हम जनसंख्या में मुट्ठीभर के ही रह गए हैं, जबकि देश की अर्थव्यवस्था व अन्य सामाजिक कार्यों में जैन समाज की बहुत बड़ी भूमिका रहती है, पर दुर्भाग्य यह है कि संप्रदायवाद के कारण हमारे समाज में दूरियां बढ़ रही हैं। 'भारत' सरकार के सम्मुख अपने वर्चस्व को बनाए रखना है तो संप्रदायवाद को समाप्त करना होगा तभी 'जैन एकता' स्थापित हो सकती है, जिस तरह बिखरे हुए मोती की कोई कीमत नहीं होती, उसकी कीमत एक माला में पिरोने पर ही होती है, इस तरह जैन समाज में एकता होना जरूरी है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म समाज से जुड़ भी रही है और दूर भी हो रही है, देखा जा रहा है की दीक्षा लेने वालों में आज अधिकतम संख्या पढ़े-लिखे युवाओं की है। अनेकांतवाद का सिद्धांत तीर्थंकर महावीर ने दिया है, हम तीर्थंकर को मानते हैं पर तीर्थंकर की नहीं मानते, परिस्थितियों और सत्यता को स्वीकार करने की क्षमता जब तक नहीं आएगी तब तक युवा पीढ़ी को हम जोड़ नहीं पाएंगे। संत और सतियां जी हमारे समाज की धरोहर हैं, उनकी सुरक्षा हमारा दायित्व है, क्योंकि युवाओं को समाज व धर्म से जोड़ने की क्षमता साधु संत में ही होती है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए और जैन होने के नाते हमारे लिए यह गर्व की बात है की प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव जी के पुत्र भरत चक्रवर्ती के नाम से इस भूखंड का नाम 'भारत' पड़ा 'भारत' नाम में अपनत्व है, अत: हर भाषा में 'भारत' ही हमारे देश का नाम रहना चाहिए। जय भारत!

- जिनागम

विनोद चोपड़ा

अध्यक्ष तेरापंथ सभा चास
गंगाशहर निवासी-बोकारो प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४३१३७८११६

विनोद जी 'चातुर्मास' के प्रति अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि 'चातुर्मास' का महत्व हमेशा से रहा है और रहेगा। 'चातुर्मास' के समय लोगों में धर्म के प्रति अधिक जागृति बढ़ जाती है, इसी दौरान हम धर्म और समाज से अधिक जुड़ते हैं। धार्मिक और सामाजिक क्रियाओं का लाभ लेते हैं। गुरु-भगवंतों का सानिध्य प्राप्त होता है, जिससे धर्म की प्रभावना बढ़ जाती है। अध्यात्म का लाभ प्राप्त होता है, आध्यात्मिकता के प्रति रुचि बढ़ती है, इसीलिए 'चातुर्मास' का बहुत ही महत्व है।

पर्यूषण पर्व के दौरान हमारे यहां उपासिका का ८ दिन निवास रहता है जिससे हमें धर्म का लाभ मिलता है।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि 'एकता' बहुत जरूरी है और 'एकता' हर समाज और व्यक्ति में होनी चाहिए, एकता रहेगी तभी हमारा धर्म और समाज आगे बढ़ेगा, आज जिस तरह का माहौल बना हुआ है, इस माहौल में सभी समाज और संप्रदाय में 'एकता' जरूरी है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म समाज से विमुख हो रही है, यह कह लीजिए कि वह भटक रही है, धर्म के प्रति उनका रुझान कम होते जा रहा है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि 'भारत' ही हमारे देश का वास्तविक नाम है जो सदियों से चला आ रहा है, इसलिए हर भाषा में हमारे देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए।

विनोद जी मूलतः राजस्थान 'बीकानेर' जिले में स्थित 'गंगाशहर' के निवासी हैं, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'झारखंड' बोकारो के 'चास' में संपन्न हुई है, आपका परिवार यहां १९६८ से बसा हुआ है, यहां आप कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। तेरापंथ सभा चास-बोकारो के अध्यक्ष हैं, रोटरी क्लब के भी अध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं। जय भारत!

- जिनागम

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

बिंदु डागा
अध्यक्ष तेरापंथ महिला मंडल दक्षिण कोलकाता
श्री डूंगरगढ़ निवासी-कोलकाता प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८३०५२६८९७

बिंदु जी 'चातुर्मास' के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहती हैं कि 'चातुर्मास' चार महीने का वह समय है जब हम साधना और आत्मिक कल्याण का कार्य करते हैं, इस समय प्रकृति भी अपने पूरे निखार पर रहती है इसलिए 'चातुर्मास' का पर्व मनाया जाता है, इस समय हम साधु-संतों की अधिक से अधिक सेवा कर पाएं और स्वयं का कल्याण करें।

वर्तमान में हमारे यहां आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि श्री जिनेश जी तीन ठाणा के साथ 'चातुर्मास' हेतु विराजमान है।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि 'जैन एकता' संभव है, अगर हम कोशिश करें तो हर बात संभव हो सकती है, 'जैन एकता' इसलिए जरूरी है क्योंकि संगठन में शक्ति होती है, सभी मिलकर कार्य करेंगे तो हम राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंच से अपनी आवाज पूरी दुनिया में अच्छी तरह से पहुंचा पाएंगे और जैन धर्म को विश्वव्यापी बना पाएंगे, भले ही हमारे विचारों में असमानता है पर सभी के सिद्धांत एक ही हैं। जैन धर्म की शुद्धता और प्रासंगिकता तभी बढ़ सकती है, जब हम सब मिलकर कार्य करें, जो हमारे संसाधन हैं, उसका भी हम तभी सही ढंग से उपयोग कर सकते हैं, जब हम सारे मिलकर कार्यक्रम करें, आपसी वैचारिक मतभेद को भुलाकर हम एकसाथ-एकमंच पर धार्मिक व सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन करें, इसलिए 'जैन एकता' जरूरी है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से जुड़ी है पर जितना जुड़ना चाहिए उतना नहीं जुड़ पा रही है, इसका कारण है कि हम उन्हें जैन धर्म के नियम, जप-तप-ध्यान-आराधना बताते हैं पर जैन धर्म का वैज्ञानिक और मौलिक आधार क्या है, इसको नहीं समझा पाते? यदि उन्हें हम सही ढंग से प्रस्तुत करें तो युवा वर्ग अवश्य अपने धर्म और समाज से जुड़ेगा, जय जरूरी भी है, क्योंकि युवा वर्ग ही हमारे समाज और देश का भविष्य है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में पर आपका कहना है कि नाम तो एक ही रहना चाहिए, चाहे भाषा कोई भी हो, पर आज विश्वस्तर पर हमारे देश को कई नाम से जाना जाता है। 'भारत' नाम हमारी संस्कृति और एकता को दर्शाता है, इसीलिए हमारे देश का नाम 'भारत' था और 'भारत' ही रहना चाहिए।

बिंदु जी मूलतः राजस्थान स्थित 'श्री डूंगरगढ़' की निवासी हैं, आपका जन्म राजस्थान और शिक्षा 'जयपुर' में संपन्न हुई है, पिछले ४० सालों से आप पश्चिम बंगाल के कोलकाता में निवासित हैं, यहां आप तेरापंथ महिला मंडल दक्षिण कोलकाता के अध्यक्ष पद पर सक्रिय हैं, आपके पति जेठमल जी चार्टर्ड अकाउंटेंट हैं और पुत्र इंजीनियर है। जय भारत!

- जिनागम

हम करें सच्ची क्षमायाचना

संवत्सरी महापर्व पर भले ही हम कई सालों से एक दूसरे के क्षमायाचक बने हैं, एक-दूसरे से क्षमा मांगी है, किन्तु सच्चे अर्थों में हमें प्रकृति के श्रृंगार, राष्ट्र की अमूल्य निधि मूक-मासूम, जीवों से जिनकी रक्षा-सुरक्षा का दायित्व सौंपा था, हमें हमारे पूर्वजों गुरूओं, विद्वानों, मनीषियों से क्षमा मांगनी चाहिए, सही मायनों में आज मूक-मासूम जीवों की रक्षा-सुरक्षा के प्रति अपने नैतिक कर्तव्यों को कैसे पूरा करें? संवत्सरी के पुनीत पावन पर्व पर आज आवश्यकता है इस सम्बन्ध में आत्म चिन्तन की, क्योंकि दया, करुणा और अनुकम्पा का स्वामी मानव मूक व असहाय जीवों के साथ क्रूर, बर्बर, राक्षसी आचरण करने में, अपने शौक, सौन्दर्य, मान-प्रतिष्ठा व धनार्जन के लिए उन्हें मौत के घाट उतारने में लगा है, यदि आप सचमुच चौरासी लाख जीव योनियों से क्षमायाचना चाहते हैं, तो मूक-मासूम, असहाय जीवों से आपकी सच्ची क्षमायाचना तभी सम्भव है, जब आप निम्न बातों पर ध्यान देगें:

१. कभी भी पॉलिथीन की थैलियों का प्रयोग नहीं करें।
२. कभी भी हिंसक सौन्दर्य प्रसाधनों का उपयोग नहीं करें।
३. कभी भी कीटनाशक पदार्थों का उपयोग नहीं करें।
४. सदैव बिजली, पानी के दुरुपयोग से अपने को बचावें।
५. बिजली का व्यर्थ प्रयोग न करें, बिजली का अपव्यय रोकें।
६. पत्र, अखबार आदि रद्दी को व्यर्थ कचरे में ना फेंके।
७. पेड़-पौधे, फूल-पत्तियों को नहीं तोड़ें।
८. पेट्रोल का कम से कम उपयोग करें, पेट्रोल का अपव्यय बचावें।
९. कभी भी पटाखे ना फोड़ें, न ही दूसरों को ऐसी प्रेरणा दें।
१०. सदैव खाद्य पदार्थों के उपयोग से पहले उसकी निर्माण विधि व मिश्रित स्थिति की अवश्य जांच कर लें।
११. हमेशा कत्लखानों का विरोध करें व मूक पशुओं की मदद करें।
१२. प्रतिदिन कम से कम एक रोटी मूक जीव को दान अवश्य करें।
१३. जर्दा, गुटखा, धूम्रपान एवं मादक पदार्थों से सदैव परहेज रखें।
१४. सदैव अच्छी भावना रखें व अच्छे कार्यों में जुटे रहें।
१५. कभी भी जूठा भोजन नहीं छोड़ें।
१६. अपने प्रत्येक कार्य में पूर्ण विवेक बरतें और मूक जीवों से सच्ची क्षमायाचना करते हुए हिंसा-विरोध हेतु तत्पर रहेगें व अहिंसा का प्रचार-प्रसार एवं जीवात्म रक्षण कार्यों की सफलता हेतु तन-मन-धन से सहयोग-समर्थन देकर हिंसा के प्रचण्ड विरोध का मार्ग प्रशस्त करें।

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मानवीय अभ्युदय का महत्वपूर्ण दिवस 'संवत्सरी'

भारतीय परम्परा में पर्वों, उत्सवों की भरमार है। वर्ष के तीन सौ पैंसठ दिन होते हैं, पर्व भी तीन सौ साठ से अधिक ही होते हैं, उनमें भी अधिकांश पर्व को आमोद-प्रमोद, मौज-मस्ती, उल्लास व्यक्त कर मनोरंजन तक सीमित होते हैं, किन्तु कुछ पर्व तो गिने-चुने होते हैं जो आत्मरंजन यानि आत्म, शोधन, पवित्रता की दृष्टि से होते हैं। 'चातुर्मास' के दौरान भी अनेक पर्व-त्यौहार आते हैं, जिसमें जैन धर्म का महान पर्व है 'पर्युषण' पर्व, भाद्रव माह में आने वाला 'पर्युषण' पर्व जो अठारह दिन तक तप-त्याग संयम साधना की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। आत्म शुद्धि की भावना को आत्मसात करने वाला यह पर्व 'दिगम्बर-श्वेताम्बर' सभी पंथों द्वारा मनाया जाता है, पर्युषण पर्व में धार्मिक भावनाएं ओत-प्रोत रहती हैं तथा धर्म की विशेष साधना होती है, यह भौतिक पर्व नहीं है, यह पर्व व्यक्ति को आत्म केन्द्रित होने की प्रेरणा देता है।

जीवन में तप-त्याग संयम साधना के द्वारा आत्मा को भावित कर क्रोध-मान-माया-लोभ से उपरत होकर ही उपशम कषायी बन सकता है। जैन श्रावक पर्व के दिनों में अव्रत से व्रत, असंयम से संयम, भोग से त्याग तथा वासना से उपासना की ओर आगे बढ़ने का प्रयास करता है, खाद्य संयम, वाणी संयम, स्वाध्याय, ध्यान, तप और मौन का अभ्यास करता है, 'संवत्सरी' महापर्व के नाम से प्रख्यात है। संवत्सर यानि वर्ष में एक बार आने वाला यह पर्व, सचमुच मानवीय अभ्युदय का एक महत्वपूर्ण दिन है। जैन परम्परा में इससे बड़ा और महत्वपूर्ण दिन दूसरा दिन नहीं होता, यह पर्व भादव शुक्ल पंचमी व चतुर्दशी को मनाया जाता है, लेकिन तिथियों को घट-बढ़ जाने के कारण कभी-कभी चतुर्थी को भी मनाने की परम्परा है, इस तरह इस पर्व की अनेक विशेषताएं हैं यथा इस दिन जैन साधु के लिए तीन कार्य वर्जित होते हैं यथा जैन श्रमण इस दिन लेप मात्र भी आहार-पानी ग्रहण नहीं करते, सिर पर चमरी गाय के रोम से बड़े बाल नहीं रखते और तीसरा समग्र जीवों से 'क्षमा' का आदान-प्रदान करते हैं, यदि किसी के प्रति मन में कोई उच्चावच भाव रह जाये और सरलता से 'क्षमा' याचना नहीं करता, तो वह धर्मसंघ में नहीं रह सकता, संघ से उसे मुक्त कर दिया जाता है, समग्रता से चिंतन करें तो ऐसे पर्व अन्यत्र दुर्लभ हैं। श्रमण महावीर ने पर्युषण आराधना को उत्कृष्ट 'क्षमा' की साधना की, उन्होंने साढ़े बारह वर्षों के घोर तप व ध्यान साधना से ही केवल्य प्राप्त किया, तत्पश्चात धर्मोपदेश के द्वारा जन-जन को सन्मार्ग पर प्रस्थित होने के लिए प्रेरित किया, उनके द्वारा दिए गए संदेश, उपदेश व सिद्धान्त विश्व के मानव की समस्याओं का सटीक समाधान है, हमारी भारतीय परम्परा में भी अनेक विसंगतियां चल रही हैं, आतंकवाद हिंसाजन्य घटनाएं हो रही हैं, असहिष्णुता के कारण मानवीय संबंधों में दरारें पड़ रही हैं, विलासिता पूर्ण जीवन शैली के कारण संग्रह का मनोभाव बढ़ता जा रहा है, पुर्वाग्रहों के कारण मतभेदों का स्थान मनोभेद ले रहा है, इन सारी समस्याओं का समाधान संभव है, बशर्ते व्यक्ति का मानस बदले, स्वयं को देखने व सुधारने का प्रयास हो, आवश्यकता है समग्र मानव समाज यह चिंतन करे और पर्व को नित्य धर्म बनाए, महापुरुषों के सिद्धान्तों की चर्चा को चर्यागत करे, उनके चरणों को पकड़ने के साथ अपने आचरणों पर संयम बरते। 'संवत्सरी' महापर्व प्रति वर्ष यही संदेश लेकर आता है, इन पर्वों की भावना को जीवन में आत्मसात करने व आत्मावलोकन कर मानवीय अभ्युदय की दृष्टि से कारगर सिद्ध हो, इस पर विचार करें।

चातुर्मास पावन पर्व पर सभी साधु-साध्वियों के पावन चरणों में क्षमायाचना!

तेरापंथ महिला मंडल दक्षिण कोलकाता

9A, Anuvrat Sarni, (Paddapukur Lane), Kolkata-700 020

चातुर्मास पावन पर्व पर सभी साधु-साध्वियों के पावन चरणों में कोटि-कोटि वंदन

मिच्छामी दुक्कड़म

।। श्री महावीराय नमः ।।

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ

११-५-५५, जैन मंदिर रोड, रायचूर, कर्नाटक-५८४१०१

Shantilal Mootha	Narendra Mootha	Naresh Bohra
President	Secretary	Treasurer
Mob.: 9844045841	Mob.: 9844010112	Mob.: 9448484222

कार्यकारिणी समिति

१. श्री शांतिलाल जी मुथा	अध्यक्ष	१२. श्री श्रेणिक राज जी मुथा	सदस्य
२. श्री पारसमल जी सुखानी	पूर्व अध्यक्ष	१३. श्री धनराज जी धोका	सदस्य
३. श्री प्रसन्न राज जी बोहरा	उपाध्यक्ष	१४. श्री प्रकाश जी कोठारी	सदस्य
४. श्री किशोर कुमार जी अब्बड़	उपाध्यक्ष	१५. श्री कमल जी आंचलींया	सदस्य
५. श्री नरेंद्र राज जी मुथा	मंत्री	१६. श्री सुरेंद्र जी धोका	सदस्य
६. श्री गौतम प्रकाश जी घिया	सह मंत्री	१७. श्री विजय राज जी बेदमुथा	सदस्य
७. श्री सज्जन राज जी बोहरा	सह मंत्री	१८. श्री सायर जी कांकरिया	सदस्य
८. श्री नरेश कुमार जी बोहरा	कोषाध्यक्ष	१९. श्री दीपक जी संचेती	सदस्य
९. श्री अशोक जी भंसाली	सदस्य	२०. श्री महावीर जी भंसाली	सदस्य
१०. श्री प्रकाश जी दफ्तरी	सदस्य	२१. श्री पवन जी नाहर	सदस्य
११. श्री राजेंद्र जी बेदमुथा	सदस्य	२२. श्री वीरेंद्र जी खिवसरा	सदस्य

सलाहकार समिति

१. श्री रतन लाल जी धोका	४. श्री जवरीलाल जी पिंचा
२. श्री विजयराज जी भंडारी	५. श्री रतनलालजी कोठारी
३. श्री रमेशजी तलेसरा	

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

क्षमा वीरस्य भूषणम

क्षमा नयन का नीर है, हरे जो भव की पीर
घाव भरे कटुवाणी का, शीतल करे शरीर

पर्युषण का अर्थ है- परि-उपसर्ग, वसधातु और अन प्रत्यय, इन तीनों के संयोग से पर्युषण शब्द निष्पन्न हुआ है। परि-समन्तात् समग्रतया उषणं वसनं निवास करणं अर्थात् सम्पूर्ण रुप से निवास करना, विभाव से हटकर स्वभाव में रमण करना। शास्त्रों में पर्व एक ही दिन का स्वीकृत हुआ है, बाकी दिन तो पर्व की सम्यक आराधना की तैयारी के लिए पूर्वाचार्यों के द्वारा नियत किए गये हैं, अत: वे भी उपेक्षनीय नहीं है, जैसे बलवान पर धावा बोलने के लिए बल का संचय करना आवश्यक है उसी प्रकार रागादि शत्रुओं की घात के लिए सात दिन आध्यात्मिक बल संग्रह को समझना चाहिए, यह पर्व मात्र जैन संस्कृति का ही नहीं, मानव संस्कृति पर्व है।

एक संवत्सर यानि एक वर्ष के बाद आने वाले महानतम दिन को व्यवहार से 'संवत्सरी' कह दिया गया है, वस्तुत: इस पर्व का नाम ''पर्युषण'' तीर्थंकर महावीर ने चातुर्मास के ५० दिन बीतने पर और ७० दिन बाकी रहने पर 'पर्युषण' पर्व की आराधना की थी, ऐसा 'समवायांग' में उल्लेख है। तिथियों की घट-बढ़ के कारण कभी-कभी इधर ४९ दिन और उधर ७१ दिन हो जाते हैं।

पर्युषण पर्व को १८ दिनों में 'जैन' लोग अधिकतर सांसारिक कार्यों से निवृत होते है, इस पर्व में प्रात:कालीन प्रवचन, श्रवण, स्वाध्याय, प्रेक्षाध्यान, जप, द्रव्यों का परिमाण, रात्रि भोजन का परित्याग, ब्रह्मचर्य का पालन, अणुव्रत साधना, सामायिक, मौन, सामूहिक प्रतिक्रमण, पौषध साधना आदि करते हैं साथ ही तीर्थंकर महावीर का जीवन दर्शन पढ़ा जाता है, ८ वें व १०वें दिन 'संवत्सरी-दस लक्षण' महापर्व यथाशक्ति उपवास एवम् पोषध कर, सभी धर्माराधना करते हैं, सभी से 'क्षमायाचना, खमत खामणा-मिच्छामी दुक्कड़म-उत्तम क्षमा' करते हैं।

'क्षमा' का अर्थ है सहना, सहने को अपना धर्म मानकर विरोधी भाव को सहना 'क्षमा' है, 'क्षमा' शक्तिशाली का अस्त्र है, अपनी शक्ति के उन्माद पर नियन्त्रण रखना 'क्षमा' है, इसके द्वारा व्यक्ति वर्ष भर में एकत्रित तनाव से मुक्त हो जाता है, शान्ति उसे मिलती है, जिसके हृदय में 'क्षमा' लहराये, दूसरों की कमजोरियों, अपराधों और भूलों को भूला सके, वही आनन्द का स्रोत बन सकता है, अपने अपराधों के लिए 'क्षमा' मांगने में जो न सकुचाये वह महान है। शान्तिदूत वही है, जो अपनी भूलों से उत्पन्न वेदना को भुला देने का नम्र अनुरोध करे। गुरुदेव आचार्य श्री तुलसी ने कहा था क्षमाशील वह होता है जो अतीत को विस्मृत करता है, वर्तमान की चिन्तनधारा बदलता है और भविष्य में किसी प्रकार की क्षलना न करने का संकल्प करता है, 'क्षमा' वही व्यक्ति कर सकता है, जिसका हृदय विशाल हो जिसमें सहज, सरलता हो और जीवन को अभिभूत करनेवाली मृदुता हो''।

एक बार चीन के सम्राट मगफू को सूचना मिली की उसके राज्य में विद्रोह हो गया है, सम्राट ने प्रतिज्ञा की कि वह विद्रोहियों को समुल नष्ट कर देगा। सम्राट प्रतिज्ञा करके सेना सहित विद्रोहग्रस्त क्षेत्र में पहुँचा। सम्राट के विशाल सेना सहित आने की सूचना पाकर विद्रोहियों ने आत्मसमर्पण कर दिया और सम्राट ने भी सभी को 'क्षमा' कर दिया, यह देखकर सम्राट के वफादार सैनिकों को बड़ा आश्चर्य हुआ। एक सेनापति ने साहस करके पूछा- ''महाराज आपकी प्रतिज्ञा का क्या हुआ?'' सम्राट बोला ''मैं अपनी प्रतिज्ञा पर अटल हूँ, मैंने सारे विद्रोहियों को नष्ट कर दिया है, अब वो मेरे शत्रु नहीं रहे, बल्कि मेरे मित्र बन गये हैं।'' यह है दया-क्षमा-शालीनतायुक्त व्यवहार का सुपरिणाम। तीर्थंकर महावीर ने कहा है कि ''कोहो पिईयपणा सई'' क्रोध प्रीति का नाश करता है। क्रोध पर विजय पाने के लिए एक मात्र उपाय 'क्षमा' है। क्षमा से ही जीव को मानसिक शान्ति मिलती है। क्षमापना से वैमनस्य दूर हो जाता है, मन हल्का हो जाता है, हमारी वर्तमान जीवन शैली सुख-सुविधा एवम् स्वार्थ भरी है यही यह पर्व है जिससे हटकर, आत्म दर्शन याने बाहर की नहीं भीतर की यात्रा के लिए प्रेरित करता है तो आईए 'जिनागम' के सभी पंथ के प्रेमी भाईयों एवम् बहनों! इस महापर्व के 'क्षमा' कुम्भ में गोते लगाकर, मन को पवित्र बनाएँ और इस जीवन रुपी बगीचा के फूलों को और अधिक तप, त्याग, संयम, आराधना, प्रार्थना, जप, सामायिक ध्यान आदि से महकाएँ, क्योंकि 'क्षमा' से बढ़कर इस संसार से मुक्त करनेवाला अन्य कोई तप नहीं इसीलिए तो कहा गया है ''क्षमा वीरस्य भूषणम्''!

जय गुरु नाना जय महावीर जय गुरु राम

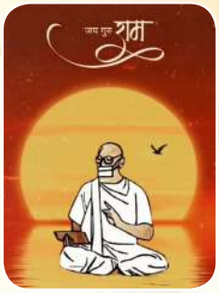

नवकार मंत्र के पांचो पदों को
विधिवत वंदन व नमन्!
एवं सुश्रावक व सुश्राविकाओं को
खमत खामणा!

अमरचंद संजय कुमार बाफना
Mob.: 9424116232
जैन ज्वेलर्स

M/s. दिनेश कुमार जैन राईस मिल
Mob.: 9993453151

प्रणेश कुमार जैन Mob.: 9425591195
अध्यक्ष नगरपंचायत अर्जुन्दा

अर्जुन्दा जिला बालोद, छत्तीसगढ, भारत- ४९१२२५

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

'मिच्छामी दुक्कड़म' का अर्थ

कृपया मुझे क्षमा करें, क्या अपने परिवार, रिश्तेदारों और दोस्तों से क्षमा मांगना अच्छा नहीं है? यह बहुत महत्वपूर्ण होता है कि सभी अपने नाजुक रिश्तों को सुधारें और नकारात्मक संबंधों के रिश्तों को साफ रखें और घृणा से दूर रहें।

दरअसल, 'मिच्छामी दुक्कड़म' एक सामुदायिक तरीके से व्यक्तिगत माफी की औपचारिकता है, यह व्यक्तिगत क्षमा की तुलना में मानवीय करुणा को बढ़ाने का एक माध्यम है, इसमें एक संपूर्ण समुदाय शामिल है, एक संपूर्ण समाज, माफी वास्तव में एक सबसे महत्वपूर्ण मानव मूल्य है।

यह मानव जाति को उनकी पिछली गलतियों को सुधारने की अनुमति/मौका देता है और मानवता को सबक सिखाता है।

माफी मांगने में शर्मिंदा होने की कोई बात नहीं होती, जब कोई व्यक्ति क्षमा मांगें तो उसे माफ़ कर देना चाहिए।

'मिच्छामी दुक्कड़म' क्या है?

'मिच्छामी' का अर्थ निरर्थक (क्षमा) होता है और दुक्कड़म (दुश्क्रूट) का मतलब बुरा कर्म है, इसलिए 'मिच्छामी दुक्कड़म' का अनुवाद करने का अर्थ है मेरे दुष्ट कर्मों या बुरे कार्यों के लिए क्षमा करें। जैन परिवारों में पैदा हुए लोग इसके पीछे अर्थ और विषय से पूर्ण रूप से परिचित होते हैं।

'मिच्छामी दुक्कड़म' क्यों कहते हैं?

अगर हम अपने आपको प्रतिबिंबित करते हैं तो हम महसूस करेंगे कि हमारा मन लगातार व्यस्त है या तो हमारे बारे में सोच रहा है जो हमारे पास हो सकता है या दुनिया के दूसरे छोर तक, शारीरिक गतिविधियों से बात कर सकता है, यह सोच, हमारे शब्द या हमारी शारीरिक गतिविधियां, हमारी खुशी, दु:ख, क्रोध, लालच, ईर्ष्या और अहंकार आदि का प्रतिबिंब होता है और हम उन पर प्रतिक्रिया करते हैं, हम अपनी आत्मा के लिए विभिन्न प्रकार के नए कर्मों को आकर्षित करते हैं।

'मिच्छामी दुक्कड़म' कहकर करेंगे प्रायश्चित

'मिच्छामी दुक्कड़म' कहकर मांगेगें क्षमा...

संवत्सरी: क्षमा, अहिंसा और मैत्री का पर्व

क्षमा, अहिंसा और मैत्री का पर्व है 'संवत्सरी'। 'संवत्सरी' पर्व पर जैन धर्मावलंबी जाने-अनजाने में हुई गलतियों के लिए एक-दूसरे से 'क्षमा' मांगते हैं। गौरतलब है कि जैन धर्म के श्वेताम्बर पंथ में पर्युषण पर्व संपन्न पर क्षमावाणी दिवस मनाया जाता है।

जैन धर्म की परंपरा के अनुसार पर्युषण पर्व के अंतिम दिन 'क्षमावाणी' दिवस पर सभी एक-दूसरे से 'मिच्छामी दुक्कड़म' कहकर 'क्षमा' मांगते हैं, साथ ही यह भी कहा जाता है कि मैंने मन, वचन, काया से जाने-अनजाने में आपका दिल दुखाया हो तो मैं हाथ जोड़कर आपसे 'क्षमा' मांगता हूं।

जैन धर्म के अनुसार 'मिच्छामी' का भाव क्षमा करने और 'दुक्कड़म' का अर्थ गलतियों से है अर्थात् मेरे द्वारा जाने-अनजाने में की गई गलतियों के लिए मुझे 'क्षमा' कीजिए।

'जिनागम' परिवार के अनुसार 'क्षमापना' से चित्त में आह्लाद का भाव पैदा होता है और आह्लाद भावयुक्त व्यक्ति मैत्री भाव उत्पन्न कर लेता है और मैत्री भाव प्राप्त होने पर व्यक्ति भाव विशुद्धि कर निर्भय हो जाता है, जीवन में अनेक व्यक्तियों से सम्पर्क होता है तो कटुता भी वर्ष भर के दौरान आ सकती है, व्यक्ति को कटुता आने पर उसे तुरंत ही मन से साफ कर लेनी चाहिए, 'संवत्सरी' पर्व पर अवश्य ही साफ कर लेना चाहिए।

'मिच्छामी दुक्कड़म' प्राकृत भाषा का शब्द है, प्राकृत भाषा में जैन ग्रंथों की रचना हुई है। 'पर्युषण' महापर्व जैन धर्मावलंबियों में आत्मशुद्धि का पर्व है, इस तरह 'पर्युषण' पर्व आत्मशुद्धि के साथ मनोमालिन्य दूर करने का सुअवसर प्रदान करने वाला महापर्व है, इस दौरान लोग पूजा-अर्चना, आरती, समागम, त्याग-तपस्या, उपवास आदि में अधिक से अधिक समय व्यतीत करते हैं, इस पर्व का आखिरी दिन 'क्षमावाणी पर्व' के रूप में मनाया जाता है, जिसमें हर किसी से 'मिच्छामी दुक्कड़म' कहकर क्षमा मांगते हैं। पर्युषण पर्व के आखिरी दिन 'मिच्छामी दुक्कड़म' कहने की परंपरा है, हर छोटे-बड़े से 'मिच्छामी दुक्कड़म' कहकर क्षमा मांगते हैं।

क्षमापना महापर्व की आवश्यकता

हमारी आत्मा का स्वरूप अनंत शुद्धता, अनंत शक्ति, अनंत शांति, अनंत ज्ञान, अनंत आनंद, अनंत प्रेम, अनंत सत्य से भरा होने के पश्चात् भी हमें उसका अनुभव नहीं होता, हमारे अनंत गुणों के ऊपर अनंत पाप का आवरण आ गया है।

वीतराग परमात्मा ने मूलत: १८ प्रकार के पाप बताए गए हैं, परंतु जब वह पाप हमारे अनंत चेष्टाओं, मान्यताओं और आचरण से जुड़ते हैं तो अनंत हो जाते हैं, इन्हीं पाप की परतों को हटाने के लिए 'क्षमापना' महापर्व का आयोजन किया जाता है, पाप की इन अठारह परतों को '१८ पापस्थानक' भी कहा जाता है।

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

Intensive

Investment Banking ♦ Family Office ♦ NBFC

www.intensivefiscal.com

~ Unique Advice. Capital Market Insight, Efficient Execution, Delivering Financial Growth

Recent IPO

~~~ Our Services ~~~

- Public Issue (IPO)
- M&A / Strategic Acquisition
- Wealth Management & Advisory
- Right Issue / Buy-Back
- Takeover / Open Offer
- Valuation & ESOP
- Private Equity
- QIP Placement
- Pre-IPO Placement
- Debt Syndication
- Amalgamation & Demerger
- Financial Engineering

Intensive Fiscal Services Private Limited

RO: - 914, Raheja Chambers, Free Press Journal Marg, Nariman Point, Mumbai –400021, India,

Tel: +91-22-22870443 / 44 / 45, **Contact Person:** Virendra Bajaj +91 9699292100

Email: admin@intensivefiscal.com , virendra@intensivefiscal.com

Web: www.intensivefiscal.com

सम्पादक-विजय कुमार जैन

जिनागम

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

हम सब जैन हैं

विशेष छूट
विज्ञापन देने पर
पूरे साल
पत्रिका मुफ्त

जैन समाज एकत्र हो यह है हमारा नारा
इसके लिए चाहिए मात्र आप ही का सहारा

वार्षिक शुल्क
२१००/-

मात्र रु. १५०/- में, प्रति महिना

पंजीकृत कार्यालय

गेलॉर्ड पब्लिकेशन्स प्रा.लि.

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९

दूरध्वनि: ०२२-४०१५ ८०९४ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com अन्तरताना : www.jinagam.co.in

परस्परोपग्रहो जीवानाम

Postal Registration Number - MCN/192/2024-2026
WPP License No. MR/Tech/WPP-319/North/2024-26
Published on 09th August 2025 & Posting On 10th & 12th of Every Month
Posted at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड व संपादक, मुद्रक व प्रकाशक बिजय कुमार जैन, बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059, टेलीफैक्स-022-2850 9999
अणु डाक -mailgaylordgroup@gmail.com, अन्तरताना : www.jinagam.co.in, द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्हज रोड, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400093 से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया गया।
RNI NO. MAHHIN/2006/19598